



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 282]

नई दिल्ली, मंगलवार, अक्टूबर 20, 2015/आश्विन 28, 1937

No. 282]

NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 20, 2015/ASVINA 28, 1937

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटन-रोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 अक्टूबर, 2015

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य, थाईलैंड और विएतनाम से मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर के आयातों से संबंधित मामले में
पाटन-रोधी जांच।

पृष्ठभूमि

फा.सं. 14/10/2014-डीजीएडी:-(1).-यतः मेसर्ज हेमिलटन होमवेयरज प्राईवेट लिमिटेड (जिसे एतदपश्चात 'आवेदक', 'याचिकादाता' या घरेलू उद्योग भी कहा गया है) ने अधिनियम और नियमावली के अनुसार प्राधिकारी के समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया है जिसमें उसने पाटन और परिणामी क्षति का आरोप लगाते हुए चीन जनवादी गणराज्य, थाईलैंड और विएतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर के उत्पादों (जिसे एतदपश्चात संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों से संबंधित मामले में पाटन-रोधी जांच की शुरुआत करने और उक्त देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।

2. प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 28 अक्टूबर, 2014 को प्रकाशित अधिसूचना संख्या 14/10/2014-डीजीएडी के द्वारा एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसमें संबंधित नियमावली के उपनियम 5 के अनुसार कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव को निर्धारित करने और पाटन-रोधी शुल्क की ऐसी राशि की

सिफारिश करने जिसे यदि लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए संबद्ध पाटन-रोधी जांच की शुरुआत की।

क. प्रक्रिया

3. संबद्ध जांच के संबंध में प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित निर्धारित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:

- (i) उपरोक्त नियमावली के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की ओर से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य, थाईलैंड और विएतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पादों के कथित पाटन का आरोप लगाया गया है।
 - (ii) आवेदन की प्रारंभिक जांच में कतिपय कमियां सामने आईं जिन्हें बाद में आवेदक द्वारा सुधार दिया गया है। इसलिए आवेदन को उचित ढंग से दस्तावेजपूर्ण माना गया है।
 - (iii) प्राधिकारी ने नियम 5 सुप्रा के उप नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन-रोधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों/प्रतिनिधियों को सूचित कर दिया था।
 - (iv) प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच शुरू करने के बारे में भारत के राजपत्र असाधारण में दिनांक 28 अक्टूबर, 2014 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी।
 - (v) प्राधिकारी ने जांच शुरू किए जाने की अधिसूचना की एक प्रति भारत में चीन जनवादी गणराज्य, थाईलैंड और विएतनाम के दूतावासों, चीन जनवादी गणराज्य के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार घरेलू उद्योग के ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को भी भेजी थी और उनसे अनुरोध किया था कि वे जांच शुरू किए जाने की इस अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों को लिखित रूप में उपलब्ध कराएँ।
 - (vi) प्राधिकारी ने संबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (2) के अनुसार चीन, थाईलैंड और विएतनाम के निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों (जिनके ब्यारे आवेदक को उपलब्ध कराए गए थे) को निर्यातक की प्रश्नावलियां भेजी थीं और उन्हें अपने विचार लिखित रूप में उपलब्ध कराए जाने का अवसर प्रदान किया गया था:-
1. मेसर्ज फूजियन ननानशी हेंगशेंश, चीन
 2. मेसर्ज मेकामे टेबलवेयर कंपनी लिमिटेड, चीन
 3. मेसर्ज जिक्को मेलामाईने प्रोडक्ट कंपनी लिमिटेड, चीन
 4. मेसर्ज यूनियन सोर्स कंपनी लिमिटेड, चीन
 5. मेसर्ज फोशन शुंदे मेलोडिक किचन कंपनी लिमिटेड, चीन
 6. मेसर्ज जियेयांग किसओंग जिंग, चीन
 7. मेसर्ज गुंगाजू नेनीटन सोरसिज कंपनी लिमिटेड, चीन
 8. मेसर्ज हंसा इंटरनेशनल कंपनी लिमिटेड, चीन
 9. मेसर्ज डोंगगुआंग शुनटा मेलामाईने प्रोडक्ट्स कंपनी लिमिटेड, चीन
 10. मेसर्ज हुआंग डांग आर्टिस्टिक हैंडीक्राफ्ट्स एंड लेक्यावेयर्स कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
 11. मेसर्ज हनोईट्रेड कापेरिशन, विएतनाम
 12. मेसर्ज विन्य कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
 13. मेसर्ज हुआंग डांग आर्टिस्टिक हैंडीक्राफ्ट्स एंड लेक्यावेयर्स कंपनी लिमिटेड विएतनाम

14. मेसर्ज माची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
15. मेसर्ज मेलामाईने थाई, थाईलैंड
16. मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड
17. मेसर्ज सोम्बूनचोक किचनवेयर कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड
18. मेसर्ज वेंकाक मेलामाईन मार्किटिंग एंड होल्डिंग कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड

(vii) चीन जनवादी गणराज्य से किसी भी नियांतक ने प्रश्नावली के उत्तर नहीं भेजे हैं। विएतनाम और थाईलैंड के निम्नोक्त नियांतकों ने प्रश्नावली के प्रत्युत्तर भेजे हैं :-

1. मेसर्ज माची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
2. मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड

(viii) प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के ज्ञात निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक की प्रश्नावलियां भेजी थीं :-

1. मेसर्ज अग्रवाल केमिकल
2. मेसर्ज एटीएस इंटिया प्राइवेट लिमिटेड
3. मेसर्ज एवीएम सेल्स कार्पोरेशन
4. मेसर्ज बर्डिया रेकान एक्सपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड
5. मेसर्ज यूसीबी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
6. मेसर्ज वालेको फ्रिक्षन मेटेरियल्स इंडिया लिमिटेड
7. मेसर्ज वीवा ओवरसीज
8. मेसर्ज जुआरी इंडस्ट्रीज लिमिटेड
9. मेसर्ज पशुपित इंडस्ट्रीज
10. मेसर्ज दीपक इंडस्ट्रीज
11. मेसर्ज सिंह ट्रेडर्स एंड फेब्रिकेटर्स
12. मेसर्ज वी. के. इंटरप्राईजिस
13. मेसर्ज मेलोमेक्स इंडिया
14. मेसर्ज डी. एंड आर. इंटरप्राईजिस
15. मेसर्ज स्केयर प्लास्ट इंडिया
16. मेसर्ज सीनियर इंटरप्राईजिस
17. मेसर्ज एक्सिज इंटरप्राईजिस
18. मेसर्ज उदय प्लास्टिक एंड केमिकल्स
19. मेसर्ज श्री पार्श्व सिल्वर वेयर
20. मेसर्ज गार्डन ग्लोरी
21. मेसर्ज गोल्डस्टार ग्लासवेयर्स प्राइवेट लिमिटेड
22. मेसर्ज आदि इंडस्ट्रीज

23. मेसर्ज सिद्धार्थ इंटरप्राईजिस
24. मेसर्ज चड्डा एक्सपोर्ट्स
25. मेसर्ज रोयल डे वजीदसंस
26. मेसर्ज डेसमो एक्सपोर्ट्स लिमिटेड
27. मेसर्ज श्री पारस मार्किटिंग
28. मेसर्ज हरीश क्रोकरी हाउस
29. मेसर्ज के. डी. एक्सपोर्ट्स
30. मेसर्ज उदय प्लास्टिक एंड केमिकल्स
31. मेसर्ज पवित्र इम्पेक्स
32. मेसर्ज डिसेंट प्लास्टिक
33. मेसर्ज आर. के. इंटरप्राईजिस
34. मेसर्ज एबी 1986
35. मेसर्ज इंटरासिया इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
36. मेसर्ज श्रीनाथ पेकर्स
37. मेसर्ज यू. पी. सिरेमिक्स एंड पौटरीस लिमिटेड
38. मेसर्ज कुम्बाकारी
39. मेसर्ज फनक्राफ्ट्स
40. मेसर्ज रिलायेवल इंडिया
41. मेसर्ज हाम शार्फन

(ix) भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नोक्त आयातकों/प्रयोक्ताओं ने आयतक की प्रश्नावली के प्रत्युत्तर भेजे हैं:-

1. मेसर्ज के. पी. इंटरनेशनल
 2. मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर इंडिया लिमिटेड
- (x) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाण के अगोपनीय अंश को उपलब्ध कराया है और हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए उसे एक सार्वजनिक फाइल के रूप में खुला रखा है। सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों को इस अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना में शामिल किया गया है।
- (xi) गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच उनके गोपनीयता के दावे के पर्याप्त होने के संबंध में की गई है। उससे संतुष्ट होने पर इस प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हुआ है, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया है। जहां भी संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया है कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध करायें तथा इसे नियमावली के अनुसार प्राधिकारी द्वारा बनाई गई सार्वजनिक फाईल में रखा गया है।
- (xii) जितना आवश्यक समझा गया है, आवेदक और हितबद्ध पक्षकारों से और सूचना मांगी गई है। जांच के प्रयोजनार्थ जितना आवश्यक समझा गया है, घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए आंकड़ों की उतनी जांच की गई है। निर्यातकों द्वारा दिए गए आंकड़ों की विस्तृत जांच की गई है।
- (xiii) सामान्यतया स्वीकृत लेखाकन सिद्धांत (जीपीए) और पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध- 3 के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की ईष्टतम लागत और उसे बनाने और बेचने की लागत पर क्षति रहित कीमत (एनआईपी) को ज्ञात किया गया है ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि पाटन मार्जिन से कम पाटन-रोधी

शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

- (xiv) यह जांच अप्रैल, 2013 से शुरू होकर मार्च, 2014 (जांच अवधि) तक की गई है। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2010 – मार्च, 2011, अप्रैल, 2011 – मार्च, 2012, अप्रैल, 2012 – मार्च, 2013 और जांच अवधि (पीओआई) शामिल है।
- (xv) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से जाँच अवधि सहित विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्योरे की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था। सूचना एक गौण स्रोत, आईबीआईएस से भी प्रस्तुत की गई थी। डीसीआईएंडएस के आंकड़ों में आयात की मात्रा अधिक है, इसलिए प्राधिकारी ने इस जाँच परिणाम के प्रयोजनार्थी डीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर भरोसा किया है।
- (xvi) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को 2 सितंबर, 2015 को आयोजित आम सुनवाई में, जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, विएतनाम और थाईलैंड के निर्यातकों तथा एक आयातक ने भाग लिया था, अपना दृष्टिकोण मोखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया था। मोखिक सुनवाई में के समय जिन प्रतिनिधियों ने अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत किए थे, उनसे अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें। हितबद्ध पक्षकारों को प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों पर पुनरूत्तर पेश करने का अवसर प्रदान किया गया था। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों पर उपयुक्त रूप से विचार किया है।
- (xvii) जांच की अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों, दिए गए तर्कों और सूचना तथा उसके बाद किए गए प्रकटन जिसे साक्ष्य द्वारा समर्थन किया गया है और जिसे मौजूदा जांच के लिए प्रासंगिक माना गया है, पर प्राधिकारी द्वारा इस प्रकटन दस्तावेज में उपयुक्त रूप से विचार किया गया है।
- (xviii) वर्तमान जांच के दौरान जहां कहीं भी हितबद्ध पक्षकारों ने आवश्यक सूचना देने से मना किया है अथवा अन्यथा सूचना प्रदान नहीं की है अथवा जांच को रोके जाने का अत्यधिक प्रयास किया है, प्राधिकारी ने ऐसे हितबद्ध पक्षकारों को असहयोगी करार दिया है और "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर इन निष्कर्षों को दर्ज किया है।
- (xix) इस निष्कर्ष में *** किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार से विचार किये जाने का परिचयाक है।
- (xx) संबद्ध जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा विनिमय दर को अपनाया गया है जो कि 1 अमरीकी डालर = 60.85 रुपए है।

ख .विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

ख. 1 प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

4. मेसर्ज मार्ची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम और मेसर्ज के. पी. इंटरनेशनल द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:-

- (i) विएतनाम से निर्यातक, मेसर्ज मार्ची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड ने बताया है कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित उत्पाद और निर्यात के उत्पाद की बीच अंतर है क्योंकि निर्यातक द्वारा अपनाई गई उत्पादन की प्रक्रिया, घरेलू उत्पादक की प्रक्रिया से भिन्न है। निर्यातक मेलामाईने मोलिंडिंग मिश्रण के कम्प्रेशन पर अधिक समय लगाता है जो कि प्रयुक्त सामान्य प्रक्रिया से अधिक समय लेती है।
- (ii) निर्यातक द्वारा निर्मित उत्पाद, घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुओं की तुलना में बहुत उत्तम कोटि के होते हैं।
- (iii) याचिकादाता अपनी याचिका में इस तथ्य का उल्लेख करने में विफल रहा है कि निर्मित की जा रही सामग्री/संबद्ध वस्तुओं की अनेक कोटियां हैं। निर्यातक द्वारा विनिर्मित सामग्री उच्चतर कोटि की होती है और इसका आभास मेसर्ज मार्ची और घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित की जा रही वस्तुओं को देखने से हो जाता है।

- (iv) यह बताया गया है कि हालांकि विचाराधीन उत्पाद का निर्माण करने के लिए प्रयुक्त किए जाने वाला मिश्रण समान है, लेकिन उसकी गुणवत्ता और स्थिरता निर्यातक की प्रक्रिया से भिन्न है। विभिन्न प्रक्रियाओं से विनिर्मित उत्पादों तथा याचिकादाता और निर्यातक द्वारा विनिर्मित उत्पादों में अंतर दृष्टव्य है।
- (v) उपरोक्त के कारण घरेलू उद्योग और निर्यातक द्वारा बेची गई संबद्ध वस्तुओं की कीमत में बहुत अधिक अंतर है और इस तथ्य के बारे में दुवारा घरेलू उद्योग द्वारा उल्लेख नहीं किया गया है। उक्त आंकड़े भारतीय बाजार में उपलब्ध हैं और इसकी जांच सुगमता से की जा सकती है। निर्यातक ने हेमिलटन द्वारा बेची गई वस्तुओं की कीमत और मेसर्ज माची द्वारा बेची गई वस्तुओं की जांच की है और इनके बीच व्यापक अंतर है क्योंकि मेसर्ज माची द्वारा विनिर्मित और बेची गई वस्तुओं की कीमत, घरेलू उद्योग द्वारा बेची गई वस्तुओं की कीमत से काफी अधिक है।
- (vi) मेसर्ज माची इंटरप्राईज कंपनी लिमिटेड यूरिआ आधारित उत्पादों का भी उत्पादन करती है, हालांकि ये निर्यात के लिए नहीं होते हैं और इनकी बिक्री अपने बाजार में ही की जाती है।
- (vii) यूरिया आधारित उत्पाद, विचाराधीन उत्पाद से भिन्न होते हैं क्योंकि यूरिआ उत्पाद, यूरिया से निर्मित होते हैं और उस पर ग्लेजिंग पाउडर लगाया जाता है, जिससे ऐसा आभास होता है कि वे मेलामाइन उत्पाद के ही समान हैं। कारोबार की प्रक्रिया में ग्लेजिंग युकूत ऐसे उत्पाद को पालिश किए हुए मेलामाइन के उत्पाद ही कहा जाता है, जबकि दोनों के मिश्रण विचाराधीन वस्तुओं से पूर्णतया भिन्न होते हैं।
- (viii) आयातक के.पी. इंटरनेशनल ने बताया है कि वह मेलामाइन और यूरिया आधारित उत्पादों सहित सभी प्रकार के उत्पादों का कारोबार करता है।
- (ix) आयातक मेसर्ज के. पी. इंटरनेशनल ने यह बताया है कि आयातक “होमवेयर” ब्रांड नाम का प्रयोग करता है, जिसे कंपनी यूरिआ से निर्मित उत्पाद जैसे कि स्टील फ्लेक्स और नॉन-स्टिक वेयर्स के रूप में बेचती है। उक्त ब्रांड के नाम को विचाराधीन उत्पाद के लिए प्रयुक्त किया जाता है। मेसर्ज माची इंटरप्राईज कंपनी लिमिटेड, विनिर्माता के नाम अर्थात् माची का उपयोग, विएटनाम से निर्यातित उत्पादों के लिए करती है।
- (x) याचिकादाता ने वर्तमान याचिका, ऐसे अन्य विनिर्माताओं जो कि याचिकादाता/घरेलू उद्योग के उत्पादों की तुलना में उत्तम कोटि के उत्पादों का उत्पादन करते हैं, की व्यापारिक और विनिर्माण प्रक्रियाओं के रहस्य की जानकारी प्राप्त करने के प्रयोजन से प्रस्तुत की है।

5. मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:-

- (i) मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड ने विचाराधीन उत्पाद के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की है।
- (ii) मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर इंडिया लिमिटेड, भारत में मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड के पूर्णतया स्वामित्वाधीन कंपनी है। इसने यह बताया है कि वह विचाराधीन उत्पाद का एक आयातक है और उनके द्वारा इन उत्पादों का आयात किए जाने के बाद, इन उत्पादों को अपने निजी अधिकृत वितरणकर्ताओं के नेटवर्क के माध्यम से भारत के विभिन्न राज्यों में बेचती है। वह इन उत्पादों का आयात, थाईलैंड की कंपनी द्वारा विशेष रूप से बनाए गए “एकता” ब्रांड के नाम से करती है। “थाईलैंड में निर्मित” ब्रांड नाम का प्रयोग, सुपरवेयर द्वारा आयातित और बाजार में लाए गए उत्पादों को बेचने के लिए किया जाता है।
- (iii) मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर इंडिया कंपनी लिमिटेड ने यह बताया है कि वह एक व्यापारी के रूप में कार्य नहीं करती है और भारत में संबद्ध वस्तुओं का विनिर्माण नहीं करती है। लेकिन उसका निकट भविष्य में विनिर्माण यूनिट की स्थापना करने की कोई योजना नहीं है।
- (iv) मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर इंडिया कंपनी लिमिटेड विचाराधीन उत्पाद सहित अनेक प्रकार के उत्पादों का कारोबार करती है जैसे कि किचन वेयर और प्लास्टिक से निर्मित उत्पाद जैसे कि लंच बॉक्स, स्टोरेज और विभिन्न प्रकार के मेलामाइन उत्पादों के लिड। उनके उत्पादों की शृंखला नितांत भिन्न है और काफी उत्तम कोटि की होती हैं जिसका निर्माण 100% मेलामाइन मिश्रण से उनके अपने निजी डिजायन में किया जाता है। कंपनी मेलामाइन उत्पाद सहित विभिन्न प्रकार के उत्पादों का कारोबार करती है लेकिन उनमें मेलामाइन उत्पाद अकेले मात्र नहीं है।

ख 2. घरेलू उद्योग के विचार

6. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (i) विचाराधीन उत्पाद, चीन जनवादी गणराज्य, थाइलैंड और विएतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर के उत्पाद हैं (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध वस्तु भी कहा गया है)।
- (ii) संबद्ध वस्तुओं को सीमाशुल्क के टेरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 39 के अंतर्गत उप-शीर्ष 392410 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। सीमा शुल्क विभाग का वर्गीकरण केवल सूचनात्मक है और यह किसी भी तरह से प्रस्तावित जांच के अधिकार क्षेत्र को वाधित नहीं करता है। आयात के आंकड़ों से ऐसा पता चलता है कि संबद्ध वस्तुओं का भारत में सीमा शुल्क विभाग के विभिन्न उप-शीर्षों के अंतर्गत आयात किया गया है, जैसे कि - 39092090, 39262039, 39249010, 39211900, 39264029, 39249090, 39229000, 39264039, 39261019, 39231090, 39264049, 39261099, 39233090, 39264099, 39262099, 39239090, 39269010, 39264019, 39241010, 39269099, 39264029, 39241090, 39092090, 39264039, 39249010, 39094090, 39264049, 39249090, 39231090, 39264099, 39261019, 39241010, 39269059, 39261099, 39241090, 39269099, 39262029।
- (iii) घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुएं भारत में आयातित संबद्ध वस्तुओं के समान ही हैं। घरेलू उद्योग का यह दावा है कि आवेदक के उत्पाद और संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पादों के बीच कोई जात अंतर नहीं है तथा ये दोनों उत्पाद, वस्तुओं के वास्तविक और रसायनिक लक्षणों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रोटोटाइप्स, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत, संवितरण और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय हैं। आवेदक द्वारा निर्मित संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं के बीच कोई विशेष अंतर नहीं है और तथा ये दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापन योग्य हैं।
- (iv) यूरिआ आधारित उत्पाद संबद्ध वस्तुओं का भाग नहीं हैं और इन्हें वर्तमान जांच से पूर्णतया बाहर रखा जा सकता है।
- (v) निर्यातिक के अपने उत्पादों की गुणवत्ता उत्तम होने के दावे का जोरदार खंडन किया जाता है। प्रयुक्त की गई प्रोटोटाइप्स में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग और निर्यातिक द्वारा प्रयुक्त की गई विनिर्माण प्रक्रियाओं, उसमें लगाए गए समय और निर्मित उत्पाद के बीच अंतर होने से इंकार किया जाता है। गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के दावों में कोई सच्चाई नहीं है। याचिकादाता भारत और अंतराष्ट्रीय जगत में अनेक ग्राहकों के उपयोग और उनको बिक्री करने के लिए अपने उत्पादों का उत्पादन कर रहा है।
- (vi) निर्यातिक द्वारा दिए गए विवरण पर विश्वास करते हुए उत्पाद की लागत काफी अधिक होनी चाहिए। जबकि निर्यातित उत्पाद की लागत आयात के आंकड़ों के अनुसार पाई गई है, जो कि पाठन को सिद्ध करती है। निर्यातिक के तर्क से अत्यधिक पाठन का स्पष्ट पता चलता है।

ख 3. प्राधिकारी द्वारा जांच

7. वर्तमान जांच विचाराधीन उत्पाद मेलेमाईन मोलिंडिंग मिश्रण से निर्मित “मेलेमाईने टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद” (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तुएं कहा गया है) हैं। मेलेमाई मोलिंडिंग मिश्रण फोरमेलडिहाईड – मेलामाइन रेसिन (70%), सेल्लयूलोज (30%) और टिटेनियम डायक्साईड और जिंक स्टिरिरेट हैं।
8. विचाराधीन उत्पादों का उत्पादन ऐसे विभिन्न ग्रेडों में नहीं किया जाता है जिनकी संबद्ध लागत में विशेष अंतर हो। विभिन्न प्रकार के उत्पाद मेलेमाईन मोलिंडिंग मिश्रण से निर्मित किए जाते हैं, जैसे कि चमचे, वाउल्स, एलेंट आदि। विभिन्न प्रकार के उत्पादन से मेलेमाईन मोलिंडिंग मिश्रण को वांछित आकार में बनाए जाने का स्पष्ट पता चलता है। इसलिए ऐसा उपयुक्त विचार किया गया है कि इन सभी मद्दों को “मेलेमाईन टेबलवेयर और किचनवेयर के उत्पादों” के मुख्य शीर्ष के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाए। इसी प्रकार का एक मामला “सभी प्रकार के ओपल ग्लासवेयर” नामक उत्पाद के लिए है। याचिकादाता द्वारा यह बताया गया है कि अंत उपभोक्ता के स्तर पर उत्पाद का कारोबार संख्या में किया जाता है और इन्हें अदद, सेट, दर्जन जैसे विभिन्न यूनिटों में सूचित किया जाता है लेकिन आयात के साथ-साथ फैक्टरी के प्रयोजनार्थी इनका कारोबार मुख्यतया वजन के आधार पर होता है। इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि उत्पाद की 70% से अधिक लागत, कच्चे माल और उनकी उपयागिताओं के आधार पर होती है। कच्चे माल और उनकी उपयागिताओं की लागत सीधे उत्पाद के वजन के समानुपात होती है। इसी कारण से जब किसी उत्पाद के वजन के बजाए उसके मापन की संबद्ध लागत की दृष्टि से विशेष अंतर होता है तो उत्पादन की लागत उत्पाद के अनुसार

मानी जाती है। इसलिए प्राधिकारी ने निर्णय लिया है कि यह उपयुक्त होगा कि विचाराधीन उत्पाद को उसके वजन के आधार पर निर्दिष्ट किया जाए। डीजीसीआई एंड एस के आंकड़े भार और संख्या में उपलब्ध हैं तथा इसका विश्लेशण वजन के आधार पर किया गया है।

9. मेलेमाईन उत्पादों का उपयोग खाने, पीने और खाना और मादक पेय परोसने के लिए किया जाता है जिनके विशेष लक्षण निम्नानुसार हैं:-

- (क) बढ़िया चमक सहित सख्त और टिकाऊ धरातल वाले।
- (ख) स्थिरता की संभावना और असीमित रंग वाले।
- (ग) गर्म जल के लिए अत्यधिक टिकाऊ दार।
- (घ) बार-बार गर्म किए जाने पर भी इनके रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
- (ङ) खुरचने और शुष्क ताप पर भी उत्कृष्ट क्षमता युक्त।
- (च) उत्कृष्ट एसिड, अल्केलाई, डिटर्जेंट और ऑर्गेनिक सॉल्वेंट रोधी क्षमता युक्त।
- (छ) उत्कृष्ट विद्युत लक्षण युक्त।

10. विचाराधीन उत्पाद मेलामाईन आधारित हैं और न कि यूरिआ आधारित हैं। हालांकि निर्यातिक इस वात से सहमत हैं कि उन्होंने भारत में यूरिआ आधारित उत्पादों के निर्यात नहीं किए हैं, प्राधिकारी ने यह देखा है कि आयातक ने मेलामाईन और यूरिआ दोनों पर आधारित उत्पादों को बेचा है।

11. समान वस्तुओं के संबंध में पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के अंतर्गत यह प्रावधान है कि –

“समान वस्तु” से ऐसी वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाटने के कारण जांच के अंतर्गत वस्तु के सभी प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर अन्य वस्तु जो कि यद्यपि सभी प्रकार से समतुरुप नहीं हैं परंतु जांचाधीन वस्तुओं के अत्यधिक सदृश विशेषताएं रखती हैं।

12. प्रतिवादी निर्यातक ने इसका खंडन किया है कि उसके द्वारा निर्मित और आपूर्ति की गई वस्तुएं, घरेलू उद्योग द्वारा द्वारा निर्मित और आपूर्ति की गई वस्तुओं की गुणवत्ता की तुलना में उत्कृष्ट गुणवत्ता युक्त हैं। तथापि, निर्यातक ने विनिर्माण की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय के बारे में कोई विस्तृत जानकारी प्रस्तुत नहीं की है और न ही उसने इसका कोई स्पष्टीकरण दिया है कि घरेलू और आयातित उत्पाद में भिन्नता का निर्धारण कैसे किया गया है तथा ऐसी कथित भिन्नता के क्या प्रभाव पड़ते हैं। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि सुनवाई के समय घरेलू उद्योग ने इसका खंडन किया है और यह कहा है कि यदि प्रक्रिया में अधिक समय लगता है तो उसके परिणामस्वरूप उत्पादन की लागत बढ़ने के साथ-साथ उसकी परिणामी कीमतें भी अधिक होनी चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादों की गुणवत्ता में अंतर व्याप्त होना तब तक नहीं माना जा सकता है, जब तक कि ऐसे अंतर को निर्धारित और उसके प्रभाव को प्रदर्शित नहीं कर दिया जाता है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि “डीएसएम इडेमिस्टु लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी” के मामले में वर्ष 2000 (119) ई.एल.टी. 308 में सूचित किए गए सीईएसटीएटी के निर्णय में ट्रिब्यूनल ने निम्नोक्त माना था :-

“आवेदक के परामर्शदाता का इस आशय का तर्क संतोषजनक नहीं है, क्योंकि उसने यह सिद्ध करने के लिए कि घरेलू विनिर्माताओं द्वारा विनिर्मित उत्पाद, भारत में निर्यात किए गए उत्पादों से भिन्न हैं, विनिर्माण की प्रक्रिया के प्रसंग में किसी प्रकार का कोई साक्ष्य/तकनीकी साहित्य प्रदर्शित नहीं किया है गुणवत्ता में किसी भी प्रकार का कोई अंतर होने से वस्तु भिन्न नहीं हो जाती है और निर्दिष्ट प्राधिकारी सही हैं कि उन्होंने यह पाया है कि गुणवत्ता में भिन्नता होने से यह स्पष्ट नहीं हो जाता है कि आयातित उत्पाद और घरेलू वस्तुएं एक समान नहीं हैं।

13. संबद्ध वस्तुओं का कोई कठिबद्ध वर्गीकरण नहीं किया गया है और इसे सीमाशुल्क के टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 39 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। इसे 39241010, 39241090, 39249090, 39264049, 39269099 आदि जैसी मुख्य शीर्ष संहिताओं के अंतर्गत आयातित किया जाता है। प्राधिकारी ने एचएस संहिता को केवल निदेशक मात्र माना है और वर्तमान निर्धारण के प्रयोजनार्थ उत्पाद के विवरण पर विचार किया है।

14. दर्ज सूचना पर विचार करने के बार प्राधिकारी का यह मानना है कि संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद में कोई सामग्री संबंधी भिन्नता नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद आयातित संबद्ध उत्पाद, वस्तुओं के वास्तविक और रसायनिक लक्षणों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रोटोटाइपों, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशों, कीमत, संवितरण और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय हैं। ये दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापन योग्य हैं।
15. इस प्रकार प्राधिकारी का यह प्रस्ताव है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद को, पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध देशों आयातित विचाराधीन संबद्ध उत्पाद के समान वस्तु ही माना जाए।

ग. घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र और प्रतिष्ठा

ग. 1. प्रतिवादी पक्षकारों के विचार

16. मेसर्ज माची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम द्वारा व्यक्त किए गए विचार निम्नानुसार हैं:-

- (क) याचिकादाता द्वारा दिया गया यह विवरण कि उसने विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है, बूठा और गलत है। याचिकादाता ने “फ्यूजिओन नन्नान शि हेंगशेंग, मेलामाइन टेबलवेयर कंपनी लिमिटेड”, जो कि फुमालिंग इंडस्ट्रियल एरिया, क्वानज्यू, फ्यूजिओन-362300, चीन में स्थित है, से विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है।
- (ख) यहां तक कि याचिकादाता ने वर्ष 2011-12 में निर्यातिक मेसर्ज माची इंटरप्राईज, विएतनाम से भी संपर्क स्थापित किया था और उनके द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद को खरीदने का प्रस्ताव भी किया था। तथापि, कुछ कारणवश उक्त कारोबार कार्यान्वित नहीं हो सका।
- (ग) यदि याचिकादाता ने इस संबंध में प्राधिकारी से सुस्पष्ट संपर्क स्थापित कर लिया होता और पूरी सूचना प्रस्तुत कर दी होती तो याचिकादाता द्वारा उक्त तथ्य का उल्लेख अपनी याचिका में कर दिया होता, लेकिन याचिकादाता ने इस तथ्य को छुपा कर रखा है।
- (घ) याचिकादाता द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण पूर्णतया निराधार और गढ़ा हुआ है। याचिकादाता का इरादा निर्यातिक के आंकड़े प्राप्त करना था ताकि वह निर्यातिक के बाजार हथियाने के साथ-साथ निर्यातिक और ऐसी अन्य कंपनियों की विनिर्माण प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्राप्त कर सके जो कि याचिकादाता से उल्कृष्ट कोटि के उत्पादों का विनिर्माण करती हैं।
- (ङ) निर्यातिक ने उस कंपनी के ब्यौरे प्रस्तुत किए हैं जिसके साथ याचिकादाता के कारोबार संबंधी लेनदेन होते हैं। निर्यातिक को ऐसे लेनदेन की अवधि के बारे में ज्ञात नहीं है, लेकिन याचिकादाता को इस बात की जानकारी है कि लेनदेन हुआ है।

17. किसी अन्य हितवद्ध पक्षकार द्वारा इस संबंध में कोई विशेष विचार प्रकट नहीं किया गया है।

ग. 2. घरेलू उद्योग के विचार

18. घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त किए गए विचार निम्नानुसार हैं:-

- (क) मेसर्ज हेमिल्टन हाउसवेयर्स प्राइवेट लिमिटेड (जिसे आगे याचिकादाता/आवेदक कहा गया है) ने चीन जनवादी गणराज्य, थाईलैंड और विएतनाम से मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पादों (संबद्ध वस्तुओं) के आयात पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने के लिए याचिका प्रस्तुत की है।
- (ख) याचिकादाता भारत में संबद्ध वस्तुओं का मुख्य उत्पादक है जिसका भारत के उत्पादन में 52% का अंशदान है। संगठित क्षेत्र में मेसर्ज सर्वेल इंडिया नामक एक और कंपनी है जो कि संबद्ध उत्पादों का उत्पादन करती है। इसके अतिरिक्त गैर-संगठित क्षेत्र में अन्य लघु उत्पादक भी हैं, जिनका समग्र अंशदान 14 % है। इन लघु उत्पादकों के उत्पादन के बारे में सार्वजनिक रूप से कोई विशिष्ट सूचना उपलब्ध नहीं है।
- (ग) याचिकादाता, मेसर्ज हेमिल्टन हाउसवेयर्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन का, प्रस्तावित जांच अवधि में घरेलू उत्पादन में मुख्य अंशदान बनता है।
- (घ) मौखिक सुनवाई के समय निर्यातिक, मेसर्ज माची ने यह बताया कि मेसर्ज सर्वेल इंडिया ने निर्यातिक से संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है। प्राधिकारी इसकी जांच कर सकते हैं। यदि यहीं परिवृद्धि रहता है तो घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार होगा।

- (ङ) याचिकादाता ने संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है। याचिकादाता, संबद्ध देशों में विचाराधीन उत्पाद के किसी निर्यातक अथवा आयातक से (प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से) संबंधित नहीं है। इस प्रकार याचिकादाता पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) और (ग) के अंतर्गत पात्र घरेलू उद्योग है।
- (च) घरेलू उद्योग ने यह स्पष्ट किया है कि संभावित खरीद के लिए निर्यातकों के साथ हुई परिचर्चा, परिचर्चा से आगे नहीं बढ़ी है और ऐसी परिचर्चा से यह स्पष्ट नहीं होता है कि कंपनी का इरादा वस्तुतः उत्पाद का आयात करने का था। घरेलू उद्योग ने यह स्पष्ट किया है कि ऐसी वार्ताएँ समग्र भिन्न प्रयोजनों और यह पता लगाने के लिए हुई थीं कि निर्यातकों द्वारा किस वास्तिवक कीमत पर वस्तुएं बेची जा रही थीं। उसने आगे यह भी स्पष्ट किया है कि मौजूदा याचिका प्रस्तुत करने से पहले और कम कीमत पर किए जा रहे आयातों का सामना करने पर याचिकादाता ने बाजार की दशाओं के संबंध में पूछताछ की थी और यह पता लगाने का प्रयास किया था कि निर्यातकों को किस कीमत पर वस्तुएं पेश की जा रही थीं। याचिकादाता ने आगे इसका खंडन किया है कि व्यवसाय संबंधी कार्डों का आदान-प्रदान किए जाने मात्र से ही यह स्पष्ट नहीं हो जाता है कि कंपनी ने उत्पाद का आयात किया है। याचिकादाता ने यह निवेदन किया है कि वस्तुतः उसके द्वारा कोई आयात नहीं किया गया है और इस तथ्य की पुष्टि निर्यातकों के निजी विवरण से हो जाती है, जिसमें उन्होंने स्वयं बताया है कि कंपनी ने विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया है। विचाराधीन उत्पाद का आयात के लिए किए गए संभावित प्रयास, उत्पाद के आयात से भिन्न है। किसी भी स्थिति में निर्यातक ने उस अवधि का हवाला दिया है, जो कि मौजूदा मामले की जांच अवधि नहीं है। प्राधिकारी संबंध होने के मुद्दे पर विचार करते हैं और कंपनी को तभी अयोग्य मान सकते हैं, जब कि ऐसे आयात जांच अवधि के दौरान किए गए हों। सीईएसटीएटी ने भी यह माना है कि जांच अवधि में किए गए आयात ही इस प्रयोजनार्थ प्रासंगिक हैं। इसको ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान प्रयोजन के लिए याचिकादाता एक पात्र घरेलू उद्योग है।
- (छ) घरेलू उद्योग ने धूति अवधि के दौरान कभी कोई आयात नहीं किया है। कतिपय व्यापार मेले में बातचीत करने और व्यवसाय संबंधी कार्डों का आदान-प्रदान किए जाने अथवा विक्रियों के बारे में पूछताछ करने का वास्तव में यह अर्थ नहीं होता है कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है।
- (ज) वास्तव में यदि घरेलू उद्योग ने कोई आयात किया होता तो निर्यातक उसका कुछ प्रमाण प्रस्तुत कर सकता था। निर्यातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को इसका खंडन करते समय कोई प्रमाण प्रस्तुत क्यों नहीं किया। इसके अलावा यदि कोई निर्यात नहीं किया गया है तो अन्य समस्त वृतान्त कैसे वर्तमान जांच के प्रासंगिक हैं।
- (झ) यदि याचिकादाता ने वर्ष 2011-12 में निर्यातक से कोई संपर्क भी किया था तो उसकी जांच प्रासंगिक नहीं है क्योंकि याचिकादाता ने कोई आयात नहीं किए थे। याचिकादाता इस तथ्य को पुनः दोहराता है कि यह संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के किसी भी निर्यातक अथवा आयातक से (प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से) संबंधित नहीं है।
- (ञ) ऐसी स्थिति में नियम 2 (ख), निर्दिष्ट प्राधिकारी को विवेकाधिकार प्रदान करता है। माननीय उच्च न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट प्राधिकारी को नियमानुसार प्रदत्त विवेकाधिकार की संपुष्टि की गई है।

ग. 3. प्राधिकारी द्वारा जांच

19. पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-

- “घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से हैं जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है मिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाठित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में “घरेलू उद्योग” पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।
20. मौजूदा मामले में मेसर्ज हेमिल्टन हाउसवेयर्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया है, जो कि विचाराधीन उत्पाद का एक घरेलू उत्पादक है और जिसने चीन जनवादी गणराज्य, थाईलैंड और विएतनाम से संबद्ध उत्पाद के आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने के मामले की जांच के लिए विस्तृत सूचना प्रदान की है।
21. याचिकादाता भारत में संबद्ध वस्तुओं का प्रमुख उत्पादक है। संगठित क्षेत्र में मेसर्ज सर्वेल इंडिया नामक केवल एक कंपनी और है जो कि संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करती है। इसके अतिरिक्त भारत में संबद्ध वस्तुओं के अन्य लघु उत्पादक भी हैं। याचिकादाता ने इसका खंडन किया है कि मेसर्ज सर्वेल इंडिया ने प्रतिवादी निर्यातकों से विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है और इसलिए कंपनी को अपात्र घरेलू उद्योगके रूप में माना जाना चाहिए। दो प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के प्रत्युतरों

की जांच की गई है और यह पाया गया है कि उनके द्वारा किसी भी प्रकार के निर्यात किए जाने के बारे में सूचित नहीं किया गया है। जबकि मेसर्ज सर्वेवेल इंडिया द्वारा वस्तुओं का आयात किया गया था। मेसर्ज सर्वेवेल इंडिया ने वर्तमान जांच के बारे में कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया है और न ही वर्तमान जांच का समर्थन और इसका विरोध किया है तथा न ही पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने का प्रस्ताव किया है।

22. याचिकादाता द्वारा किए गए आयातों के बारे में निर्यातिक के दावे की जांच की गई है। याचिकादाता ने याचिका प्रस्तुत किए जाने के चरण में ही यह प्रमाणित कर दिया है कि उसने संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया है। आंकड़ों की जांच करने पर भी यही पता चलता है कि याचिकादाता ने कोई आयात नहीं किया है।
23. दर्ज सूचना के अनुसार याचिकादाता का उत्पादन, भारत में उत्पादन का प्रमुख अंश है। प्राधिकारी का यह निष्कर्ष देने का प्रस्ताव है कि याचिकादाता ने नियमावली के अंतर्गत स्थाई अपेक्षाओं को पूरी तरह से संतुष्ट किया है और याचिकादाता, नियम 2 (ब) में दी गई परिभाषा के भीतर घरेलू उद्योग बनता है। याचिकादाता पाटन-रोधी नियमावली के नियम 5 (3) के अनुसार स्थाई मानदंड को संतोषजनक ढंग से पूरा करता है।

घ. अत्यधिक गोपनीयता से संबंधित मुद्दे

घ. 1. प्रतिवादी पक्षकारों के विचार

24. मेसर्ज मार्ची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (i) निर्यातिक ने प्रश्नावली के प्रपत्र के अनुसार आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। उसने प्राधिकारी को सभी परिशिष्ठ और पूरे आंकड़ों के संलग्नक प्रस्तुत कर दिए हैं। उसने अत्यधिक गोपनीयता का कोई दावा नहीं किया है लेकिन गोपनीय प्रकृति की सूचना की गोपनीयता का दावा किया है।
 - (ii) अन्य आंकड़ों के साथ विनिर्माण प्रक्रिया के ब्यौरे विधिवत् प्रस्तुत किए गए हैं। जैसा बताया गया है, पेटेन्ट्स की सूचना गोपनीय है और इस प्रकार उसकी गोपनीयता का दावा किया गया है।
 - (iii) निर्यातिक के घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद को बेचा नहीं जाता है क्योंकि उसकी विएतनाम में कोई मांग नहीं है और इसलिए ऐसे आंकडे उपलब्ध नहीं हैं अथवा प्रदान नहीं किए जा सकते हैं।
 - (iv) कीमत सूचियां यूरिआ से निर्मित उत्पादों से संबंधित हैं और ये ही ऐसे उत्पाद हैं जिन्हें विएतनाम में बेचा जाता है। अन्य संलग्नक और अनुबंध में गोपनीय सूचना निहित है और इसे केवल प्राधिकारी के लाभार्थी और वर्तमान जांच संबंधी कार्यवाहियों में तथ्यों का निर्धारण करने के लिए प्रस्तुत किया गया है।
 - (v) याचिकादाता ने सामग्री संबंधी विभिन्न ऐसे तथ्यों को द्विपाया है जो कि मौजूदा मामले के लिए हानिकारक हैं। याचिकादाता ने सामग्री की आपूर्ति करने के लिए निर्यातिक के साथ संपर्क स्थापित किया था। उक्त लेनदेन नहीं किया जा सका, लेकिन याचिकादाता का इरादा बहुत साफ था, क्योंकि याचिकादाता विचाराधीन उत्पादक के उत्पादन की प्रक्रिया के साथ-साथ ऐसे विभिन्न बाजारों के बारे में जानकारी हासिल करना चाहता था जहां निर्यातिक अपने उत्पाद की आपूर्तियां/निर्यात करता है।
 - (vi) निर्यातिक के संबद्ध उत्पाद की गुणवत्ता, याचिकादाता के उत्पाद से उत्तम है और इसी तथ्य के कारण निर्यातिक का पूर्ति करने के लिए व्यापक/बड़ा बाजार है और याचिकादाता गोपनीय आंकड़ों को प्राप्त करके निर्यातिक की उक्त अंतर्राष्ट्रीय बाजार का हिस्सा प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।
 - (vii) याचिकादाता द्वारा उद्धृत किए गए मामले के बारे में यह बताया जाता है कि जहां सूचना में पक्षकार की तकनीकी प्रक्रियाएं और व्यक्तिगत आंकडे निहित हैं, वहां उन्हें गोपनीय माना जाए। वर्तमान मामले में पेटेन्ट के साथ-साथ विनिर्माण की प्रक्रिया तकनीकी है और उन्हें गोपनीय माना जाए।
 - (viii) निर्यातिक के ग्राहकों की सूची और उससे संबंधित आंकडे भी गोपनीय सूचना है क्योंकि यदि उनका प्रकटन किसी तीसरे पक्षकार को कर दिया जाता है तो उससे निर्यातिक को धारे हो सकते हैं, विशेषकर तब जब कि उक्त पक्षकार भी निर्यातिक का प्रतिस्पर्द्धी हो।
25. किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई विशिष्ट टिप्पणी प्रस्तुत नहीं की है।

घ. 2. घरेलू उद्योग के विचार

26. घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त किए गए विचार निम्नानुसार हैं:-

- (i) दो निर्यातकों नामतः मेसर्ज माची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड और मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड द्वारा और एक आयातक, मेसर्ज के. पी. इंटरनेशनल प्रत्युत्तर दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर आंशिक, अधूरे होने के साथ-साथ अपर्याप्त हैं। जांच शुरू किए जाने के आठ महीनों के बाद मेसर्ज श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड के संबंधित पक्षकार द्वारा आयातक की प्रश्नावली प्रस्तुत की गई है।
- (ii) प्रश्नावली का अगोपनीय विवरण अत्यधिक अपर्याप्त है। हितबद्ध पक्षकारों ने ऐसी समस्त सूचना का प्रकटन नहीं किया है जिन्हें नियमावली और इस संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अनुसरण की जा रही प्रक्रिया के अंतर्गत प्रकट करने के लिए वे बाध्य हैं। ऐसी अत्यधिक गोपनीयता घरेलू उद्योग को उनके हित की रक्षा करने में बाधक होगी। निर्यातकों ने दावा किया है कि अधिकतर सूचना गोपनीय है और उनके द्वारा उसका कोई संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- (iii) मेसर्ज माची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड द्वारा दावा की गई गोपनीय सूचना के कुछेक निर्दर्शी उदाहरण निम्नानुसार हैं:-
 - (क) उन्होंने विस्तृत विनिर्माण प्रक्रिया के ब्यौर प्रस्तुत नहीं किए हैं और न ही यह बताया है कि इसमें कितना समय लगा है।
 - (ख) निर्यातकों ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर के साथ कोई आंकड़ा संलग्न नहीं किया है ताकि आंकड़ों की संकर जांच की जा सके।
 - (ग) परिशिष्ठ 1 – 9 के अंतर्गत प्रस्तुत की जाने वाली सूचना को संलग्न नहीं किया गया है जब कि विशेष रूप से यह कहा गया था कि प्रपत्र का सख्ती से अनुपालन किया जाए।
 - (घ) निर्यातक की प्रश्नावली के साथ “क” से “झ” अनुलग्नक संलग्न नहीं किए गए हैं।
- (iv) थाईलैंड से प्रतिवादी निर्यातक, श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड ने प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में अत्यधिक गोपनीयता का आश्रय लिया है। उसके द्वारा दावा की गई गोपनीयता के कुछेक निर्दर्शी उदाहरण निम्नानुसार हैं:-
 - (क) परिशिष्ठ 1 – 9 के अंतर्गत प्रस्तुत की जाने वाली सूचना को संलग्न नहीं किया गया है जब कि विशेष रूप से यह कहा गया था कि प्रपत्र का सख्ती से अनुपालन किया जाए।
 - (ख) श्रीथाई सुपरवेयर और श्रीथाई सुपरवेयर इंडिया के केटाग्लोग्स संलग्न नहीं किए गए हैं।
 - (ग) गृह बाजार में विक्रियों और भारत में निर्यात के मामले में सृजित/प्राप्त हुए दस्तावेज के पूरे सेट।
 - (घ) गृह बाजार में विक्रियों और भारत में निर्यात की कीमत की सूचियां।
 - (ङ) अपने घरेलू बाजार में बेची गई अथवा निर्मित की गई वस्तुओं अथवा भारत को निर्यात की गई वस्तुओं के अलावा किसी अन्य देश को बेची गई वस्तुओं के बीच वास्तविक/तकनीकी/रसायनिक विशेषताओं की दृष्टि से अंतर होने की सूचना और प्रमाण तथा उनका उत्पादन की लागत पर प्रभाव।
 - (च) तुलन पत्र सहित, लाभ और हानि के लेखाओं सहित लेखा परीक्षित लेखा।
 - (छ) प्रत्येक चरण पर उत्पादन के चक्र समय के साथ उत्पादन प्रवाह।
- (v) गोपनीयता के संबंध में न केवल नियमावली पूरी तरह से स्पष्ट है, बल्कि इनका विश्व व्यापार संगठन और भारतीय न्यायालयों द्वारा भी व्यापक विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग का यह अधिकार है कि वह हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना को प्राप्त करे तथा अपने हितों की रक्षा करे।

- (vi) निर्यातक ने विनिर्माण प्रक्रिया के विवरण प्रस्तुत नहीं किए हैं और न ही उसे उसने लिए गए समय का उल्लेख किया है। दूसरे यदि प्रक्रिया उससे अधिक समय लेती है तो उससे लागत अधिक बढ़ेगी। ऐसी स्थिति में अधिक समय लेने वाला उत्पाद कम कीमत का कैसे हो सकता है। निर्यातक द्वारा इस मुद्रे का निदान नहीं किया गया है।
- (vii) निर्यातक ने मौखिक सुनवाई में यह बताया है कि मेसर्ज सर्वेल इंडिया सहित भारत में संबद्ध वस्तुओं के चार संबद्ध आयातक हैं। केवल मेसर्ज के, पी. इंटरनेशनल आयातक ने ही प्रश्नावली के प्रत्युत्तर प्रस्तुत किए हैं। बाकी आयातकों ने प्रश्नावली के प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं। इस प्रकार निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रत्युत्तर को अपूर्ण समझा जाना चाहिए।
- (viii) निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रत्युत्तर में संबद्ध आंकड़े/सूचना निहित नहीं है। न ही निर्यातक द्वारा दिए गए विवरणों के साथ कोई प्रमाण संलग्न किया गया है।

घ. 3. प्राधिकारी द्वारा जांच

27. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता के दावों की जांच की है। प्राधिकारी ने नियम 6 (7) के अनुसार अनुरोध किए जाने पर सभी हितबद्ध पक्षकारों को सार्वजनिक फाईल उपलब्ध कराई है जिसमें निरीक्षण के लिए विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमाण संलग्न हैं।
28. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटन-रोधी नियमावली के नियम-7 में निम्नानुसार व्यवस्था है:-
- (1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।
- (2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।
- (3) उप नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अनावश्यक है या सूचना देने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है या उसकी सामान्य रूप में या सारांश रूप में प्रकटन नहीं करना चाहता है तो वह ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं दे सकते हैं।
29. पाटन-रोधी संबंधी विश्व व्यापार संगठन के करार में सूचना की गोपनीयता के संबंध में व्यवस्था निम्नानुसार है:-

“अनुच्छेद - 6.5 ऐसी कोई भी सूचना जो कि प्रकृति स्वरूप गोपनीय है (उदाहरण के लिए क्योंकि इसके प्रकटन से किसी प्रतिस्पर्द्धी को विशेष लाभ प्राप्त होगा अथवा इसके प्रकटन से सूचना देने वाले किसी व्यक्ति अथवा ऐसे व्यक्ति पर जिससे कि वह व्यक्ति सूचना प्राप्त करना चाहता है, पर विशेष रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा) अथवा जो कि दर्शाए गए 28 कारणों की जांच करने के लिए पक्षकारों द्वारा गोपनीयता के आधार पर प्रदान की गई है, को प्राधिकारियों द्वारा गोपनीय समझा जाना चाहिए।

अनुच्छेद - 6.5.1 प्राधिकारियों को इसकी आवश्यकता होगी कि गोपनीय सूचना प्रदान करने वाले हितबद्ध पक्षकार अपने अगोपनीय तथ्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करें। इन संक्षिप्त विवरण, गोपनीयता में प्रस्तुत की गई सूचना के तथ्यों को समझने के लिए पर्याप्त होंगे। विशिष्ट परिस्थितियों में ऐसे पक्षकार यह सूचित कर सकते हैं कि ऐसी संवेदनशील सूचना का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। ऐसी विशिष्ट परिस्थितियों में ऐसे कारणों का विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमें उनके कारणों का उल्लेख किया गया हो कि संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाना क्यों संभव नहीं है।

अनुच्छेद - 6.5.2 की पाद टिप्पणी (पाटन-रोधी संबंधी विश्व व्यापार संगठन की पाद टिप्पणी 18) में की गई व्यवस्था निम्नानुसार है:- सदस्य इस बात से सहमत हैं कि गोपनीयता बनाए रखने के अनुरोध को मनमाने ढंग से अस्वीकार नहीं कर दिया जाना चाहिए।”

30. इस प्रकार यह प्रमाणित होता है कि प्राधिकारियों द्वारा जारी सार्वजनिक सूचनाएं गोपनीयता के प्रावधानों के अध्यधीन होती हैं और उन्हें किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रदत्त सूचना की गोपनीयता को संक्षिप्त रखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी

द्वारा गोपनीय सूचना के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष भी गोपनीय बन जाते हैं यदि ऐसे निष्कर्ष के प्रकटन के परिणामस्वरूप किसी भी तरह से गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना का प्रकटन हो सकता हो।

31. पाटन-रेधी नियमावली के नियम 16 में अंतिम परिणाम के प्रकटन से पहले अत्यावश्यक तथ्यों के प्रकटन के प्रावधान निर्धारित किए गए हैं। यहां तक कि नियम 16 के अंतर्गत गोपनीय तथ्यों को संबंधित “हितबद्ध पक्षकारों” को प्रकट किया जाना अपेक्षित होता है, जबकि अगोपनीय तथ्यों को सभी “हितबद्ध पक्षकारों” को प्रकट किया जाना अपेक्षित है। किसी भी स्थिति में निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऐसे प्रतिस्पष्टियों को गोपनीय सूचना प्रकट करने की शक्ति प्राप्त नहीं है जो कि प्रतिस्पष्टियों में भाग ले रहे हैं और जिनके हित प्रतिकूल हैं।
32. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जांच को सुकर बनाने के लिए विश्वास और रहस्य को बनाए रखने के लिए प्रदत्त निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रदत्त की गई वाणिज्यिक रूप से संवेदनशील और गोपनीय सूचना के प्रकटन से घरेलू के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय जगत के बाजार पूरी तरह से संदूषित हो जाएगा। घरेलू उद्योग के उत्पादन, गैर-क्षति कीमत आदि से संबंधित गोपनीय सूचना के प्रकटन से उसके घरेलू और विश्व के प्रतिस्पष्टियों को अनुचित लाभ होगा और वे उपभोक्ताओं के समक्ष अलाभप्रद स्थिति में हो जाएंगे।
33. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि गोपनीय सूचना को प्रतिस्पष्टियों में भाग ले रहे हैं और प्रतिकूल हित वाले हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया जा सकता है।

उ. विविध मुद्दे

उ.1. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

34. मेसर्ज माची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (i) याचिकादाता द्वारा किया गया अनुरोध पूर्णतया अव्यावहारिक है, हालांकि निर्यातक को प्रत्युत्तर देने के प्रति कोई आपत्ति नहीं है, यदि जांच समस्त एचएस संहिता के अनुसार की जाती है, जैसा कि याचिकादाता नह बताया है।
- (ii) निर्यातक ने पहले से ही अपने द्वारा किए गए निर्यातों के ब्यौरे प्रदान कर दिए हैं। विचाराधीन उत्पाद के लिए किए गए निर्यात विशिष्ट एचसी अर्थात् 39249090 के अंतर्गत आते हैं और अन्य एचएस विचाराधीन उत्पाद की जांच से संबद्ध नहीं हैं।
- (iii) याचिकादाता द्वारा प्रस्तावित जांच की अवधि का प्रस्ताव, विचाराधीन उत्पाद के रूप में याचिकादाता के लेनदेन को ध्यान में रख कर किया गया है जैसा कि याचिकादाता ने विगत में उक्त वस्तुओं का स्वयं आयात किया था और उसके आंकड़ों को छिपा कर रखा हुआ है। यह अनुरोध किया गया है कि डीजीएंडी इसकी जांच करे और याचिकादाता को उक्त सूचना प्रदान करने का निर्देश दे।

- 35. किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस संबंध में कोई विशेष विचार प्रकट नहीं किया गया है।

उ.2. घरेलू उद्योग के विचार

36. घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैं:-

- (i) याचिकादाता एक नया उद्यम है जो कि संबद्ध वस्तुओं का कारोबार करता है और वह भारतीय बाजार में विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण हुए घाटों का वहन करने में असमर्थ है।
- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने जांच शुरू करने को न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदन पत्र की पर्याप्तता और परिशुद्धता की ध्यानपूर्वक संवीक्षा की है। इस संबंध में यह बताया गया है कि याचिका में संबद्ध देशों द्वारा अनुचित व्यापारिक प्रक्रिया और पाटन में वृद्धि होने के बारे में प्रमाण निहित हैं। इस प्रकार यह ऐसा मामला नहीं है जिसमें याचिकादाता ने आरोप मात्र लगाए हैं और क्षति को सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किए हैं। इस प्रकार इस मामले में ऐसा नहीं लगता है कि याचिकादाता का इरादा दुर्भावपूर्ण है।
- (iii) याचिकादाता का इरादा अन्य विनिर्माताओं के व्यापारिक और विनिर्माण संबंधी रहस्यों को प्राप्त करना नहीं है और न ही याचिकादाता ऐसा विश्वास करता है कि संबद्ध वस्तुओं के अन्य उत्पादक, याचिकादाता/घरेलू उद्योग के उत्पादों से बेहतर गुणवत्ता युक्त उत्पादों का उत्पादन करते हैं। वास्तव में याचिकादाता को इस बात की बेहतर जानकारी थी कि याचिकादाता को कोई भी गोपनीय सूचना उपलब्ध नहीं हो सकती है और इसलिए उसने वर्तमान जांच से ऐसे किसी रहस्य को प्राप्त करने नहीं चाहा है। न ही याचिकादाता को वर्तमान जांच के परिणाम स्वरूप कोई ऐसी सूचना प्राप्त हुई है।

- (iv) याचिकादाता का इरादा अन्य उत्पादक के आंकड़ों से संबंधित सूचना प्राप्त करना नहीं है और न ही याचिकादाता का ऐसा विश्वास है कि ऐसे अन्य उत्पादक अपनी वस्तुओं को अधिक कीमतों पर बेच रहे हैं। वास्तव में याचिकादाता को इस बात की बेहतर जानकारी थी कि याचिकादाता को कोई भी गोपनीय सूचना उपलब्ध नहीं हो सकती है और इसलिए उसने वर्तमान जांच से ऐसे किसी रहस्य को प्राप्त करने नहीं चाहा है। न ही याचिकादाता को वर्तमान जांच के परिणाम स्वरूप कोई ऐसी सूचना प्राप्त हुई है।
- (v) मेसर्ज श्रीथाई, थाईलैंड के लिए भारत में एक संबंधित उद्यम मेसर्ज श्रीथाई इंडिया लिमिटेड है जिसके माध्यम से निर्यातिक भारत में विक्रियों का प्रबंधन करता है। आयातक ने जांच शुरू होने के आठ महीनों के बाद प्रत्युत्तर दिए हैं। याचिकादाता प्राधिकारी से यह अनुरोध करता है कि निर्यातिकों और संबंधित आयातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी प्रत्युत्तरों का अस्वीकृत कर दिया जाए। केवल इस एक मात्र कारणवश निर्यातिक द्वारा समग्र सहभागिता और निवेदन को खारिज कर दिया जाना चाहिए। किसी अन्य प्रकार का अनुरोध भी घरेलू उद्योग के लिए न केवल अत्यधिक अनुचित होगा और घरेलू उद्योग के बहुमूल्य अधिकारों के प्रतिकूल होगा बल्कि ऐसा अन्य सहभागी हितबद्ध पक्षकारों के लिए भी अत्यधिक अनुचित होगा तथा उससे भी अधिक यह कानून और प्रक्रिया का दुरुपयोग करने जैसा होगा। यदि हितबद्ध पक्षकार, ऐसी कार्रवाई के किसी भी चरण में किसी भी समय प्रवेश कर सकते हैं तो संविधि के अंतर्गत समय सीमा निर्धारित करने का कोई अर्थ नहीं होगा।

इ.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पाद का आयात, विभिन्न एचएस संहिता नामतः 39241010, 39241090, 39249090, 3926409 और 39269099 के अंतर्गत किया जा रहा है। यह स्पष्ट किया जाता है कि एचएस संहिताएं केवल निर्देशात्मक मात्र हैं और सभी परिस्थितियों में उत्पाद के विवरण ही अभिभावी होंगे। याचिकादाता द्वारा निर्मित उत्पाद और संबद्ध देशों से निर्यातित उत्पादों के बीच कोई जात अंतर व्याप्त नहीं है। लेकिन दोनों उत्पाद, वस्तुओं के वास्तविक और रसायनिक लक्षणों, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रोद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशों, कीमत, संवितरण और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसे प्राचलों की दृष्टि से तुलनीय हैं। घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के संबंध में अनिवार्य उत्पाद गुणक्षमताओं की तुलना करने से ऐसा पता चलेगा कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित वस्तुएं अनिवार्य उत्पाद गुणक्षमताओं के अनुसार एक समान हैं। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि याचिकादाता द्वारा निर्मित उत्पादों और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुएं समान वस्तुएं हैं।
38. निर्यातिकों को अपने प्रत्युत्तरों के पूरक उत्तर देने का अवसर प्रदान किया गया था। इस अवसर का उपयोग थाईलैंड और विएतनाम के दोनों निर्यातिकों द्वारा किया गया था लेकिन दिए गए प्रत्युत्तर में सूचना अभी भी अपूर्ण ही है।

च. बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

च.1 सामान्य मूल्य

39. धारा 9 (1) (ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य यह

है कि -

- (i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातिक देश अथवा क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (ii) जब निर्यातिक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई विक्री न हुई हो अथवा जब नियातिक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम विक्री मात्रा के कारण ऐसी विक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा।
- (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातिक देश अथवा क्षेत्र अथवा किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो, अथवा
- (ख) उप-धारा के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथा निर्धारित प्रशासनिक, विक्री और सामान्य लागत और लाभ के लिए उचित वृद्धि के साथ उद्दम देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत,

परन्तुक यह कि उदगम वाले देश से इतर किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में अथवा जहां उक्त वस्तु को नियर्ति के देश के जरिए मात्र यानांतरित किया गया है अथवा जहां ऐसी वस्तु का उत्पादन नियर्ति के देश में नहीं किया जाता है, नियर्ति के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उदगम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

च.2. चीन जनवादी गणराज्य के लिए सामान्य मूल्य

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से संबंधित प्रावधान

40. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध -1 में निम्नोक्त व्यवस्था है:-

"7. गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा परिकलित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उपयुक्त तरीके से एक उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चयन किया जाएगा जिसके लिए संबंधित देश के विकास के स्तर और संबंधित उत्पाद को ध्यान में रखने के साथ-साथ ऐसा चयन किए जाने के समय उपलब्ध कराई गई किसी भी प्रकार की सूचना को भी ध्यान में रखा जाएगा। जहां कहीं भी आवश्यक होगा वहां किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के किसी अन्य मामले की जांच को भी समय सीमा के भीतर पूरा किया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षकारों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चयन किए जाने के बारे में अकारण बिना किसी विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें उपयुक्त समय अवधि के भीतर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

8. (1) "गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश" के पारिभाषिक शब्द का अभिप्राय ऐसे किसी भी देश से है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसा निर्धारित करते हैं कि वह बाजार के सिद्धांतों के अनुसार लागत अथवा कीमत निर्धारण के ढांचों के अनुसार प्रचालन नहीं कर रहा है ताकि ऐसे देश को सामान की बिक्री, उप-पैरा (3) में विनिश्चित मानदंड के अनुसार माल के मान मूल्य को निर्दिष्ट नहीं करती है।

(2) ऐसी पूर्वधारणा है कि ऐसे किसी भी देश जिसका निर्धारण किया जाना है, अथवा जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अथवा विश्व व्यापार संगठन के किसी सदस्य द्वारा ऐसी जांच से पूर्व तीन वर्ष की अवधि में पाटन-रोधी जांच के प्रयोजनार्थ गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है।

परन्तुक कि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश अथवा ऐसे देश से संबंधित फर्मों निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऐसी सूचना और साक्ष्य प्रस्तुत कर ऐसी पूर्वधारणा का खंडन कर सकती हैं जिनसे यह सिद्ध होता हो कि उप-पैरा (3) में विनिश्चित मानदंड के अनुसार ऐसा देश गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

(3) निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रत्येक मामले में निम्नलिखित मानदंड पर विचार करेंगे कि क्या —

(क) ऐसे देश में संबंधित फर्मों का कच्चे माल, प्रोटोगिकी और श्रम, उत्पादन, विक्रियों और निवेश की लागत सहित कीमतों, लागत और अंतरिनिविष्टियों का निर्धारण संबंधी निर्णय, बाजार के सकेतों के प्रत्युत्तर में किया जाता है, जो कि आपूर्ति और मांग की स्थिति को निर्दिष्ट करते हैं और ऐसा इस संबंध में राज्य के विशेष हस्तक्षेप के बिना किया जाता है और क्या मुख्या अंतर निविष्टियों की लागत बाजार मूल्यों को पर्याप्त रूप से प्रतिविम्बित करती हैं।

(ख) ऐसी फर्मों के उत्पादन की लागत और वित्तीय स्थिति, भूतपूर्व गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की प्रणाली से की गई विशेष विकृति के अध्यधीन है, विशेष कर परिसम्पत्तियों के मूल्यहास होने, अन्य राशि को बढ़ा खाते डाले जाने, विनिमय व्यापार किए जाने और भुगतान ऋणों की प्रतिपूर्ति किए जाने के एवज के प्रसंग में।

(ग) ऐसी फर्मों दीवाला और सम्पत्ति नियमों के अध्यधीन होती हैं जो कि कानूनी निश्चिंतता और फर्मों के प्रचालन की स्थिरता की गारंटी देते हैं।

(घ) विनिमय दर में परिवर्तन बाजार की दर के अनुसार किया जाता है।

परन्तुक कि जहां इस पैराग्राफ में विनिश्चित मानदंड के आधार पर लिखित रूप में प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य से ऐसा पता चलता है कि बाजार की दशाएं एक अथवा अधिक के लिए प्रचलित होती हैं, तो उस स्थिति में संबद्ध फर्मों पाटन-रोधी जांच के अध्यधीन होती हैं,

निर्दिष्ट प्राधिकारी पैराग्राफ 7 और इस पैराग्राफ में निर्धारित किए गए सिद्धांतों के बजाए पैराग्राफ 1 से 6 में निर्धारित किए गए सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं।

च.3. घरेलू उद्योग के विचार

41. याचिकादाता ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

- (क) विगत मासलों में प्राधिकारी और अन्य देशों की जांच प्राधिकारियों द्वारा अपनाई गई नीति के अनुसार चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना जाना चाहिए। सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए चीन के उत्पादकों की लागत और कीमत पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।
- (ख) बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक स्वीकृत नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि निम्नलिखित शर्तों को पूरानहीं कर लिया जाता है:-
- (i) बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा ऐसी स्थिति में नहीं दिया जा सकता है जिसमें एक प्रमुख शेयरधारक राज्य के स्वामित्वाधीन/नियंत्रित सत्त्व हो।
 - (ii) बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक स्वीकृत नहीं किया जा सकता है जब तक कि चीन के प्रतिवादी निर्यातक इस तथ्य की पुष्टि नहीं कर देते कि प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय कीमतें, बाजार मूल्यों को प्रतिविम्बित करती हैं।
 - (iii) बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक कि प्रतिवादी निर्यातक इस तथ्य की पुष्टि नहीं कर देते कि उनकी लेखा बहियों की लेखा परीक्षा, अंतर्राष्ट्रीय लेखाकरण मानकों के अनुसार की जाती है।
 - (iv) प्राचलों में से किसी एक प्राचल की पूरी तरह से संतुष्टि नहीं किए जाने की स्थिति में भी बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया जा सकता है।
 - (v) यह जिम्मेदारी/दायित्व चीन के प्रतिवादी निर्यातक का है, ना कि निर्दिष्ट प्राधिकारी का, कि वह बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे की संपुष्टि करे।
 - (vi) बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक कि प्रतिवादी कंपनी और उसका समग्र समूह इसका दावा नहीं करता है।
 - (vii) ऐसी स्थिति में जिसमें कि वर्तमान शेयरधारक ने अपनी उत्पादन क्षमताओं की स्वतः स्थापना नहीं की है, बल्कि उन्हें किसी अन्य पक्षकार से प्राप्त किया हुआ है, बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता है जब तक कि दस्तावेजी प्रमाणों के साथ ऐसे परिवर्तन की प्रक्रिया पूरी नहीं कर ली जाती है।
- (ग) इन नियमों के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण, निम्नलिखित आधार में से किसी भी एक आधार पर किया जा सकता है:-
- तीसरे देश की बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत।
 - तीसरे देश की बाजार अर्थव्यवस्था में निर्मित मूल्य।
 - ऐसे तीसरे देश से अन्य देश की कीमत जिसमें भारत भी शामिल है।
 - भारत में वास्तव रूप से अदा की गई कीमत, जिसे उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए समंजित किया गया है।
 - भारत में वास्तव में देय कीमत, जिसे उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए समंजित किया गया है।
- (घ) चूंकि चीन की किसी भी कंपनी द्वारा प्रश्नावली का कोई प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है, इसलिए संबद्ध देश को गैर-अर्थव्यवस्था बाजार के रूप में माना जाना चाहिए।

च.4. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

42. चीन जनवादी गणराज्य के किसी भी आयातक, निर्यातक और हितबद्ध पक्षकार द्वारा पाठन मार्जिन के एमईटी के दर्जे के संबंध में कोई टिप्पणी अथवा निवेदन प्रस्तुत नहीं किया गया है।

च.5. प्राधिकारी द्वारा जांच

43. जांच शुरू किए जाने के चरण में प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माने जाने की पूर्वधारणा से कार्रवाई शुरू की थी। ऐसी कार्रवाई शुरू करने के समय प्राधिकारी ने चीन के उत्पादकों/निर्यातकों को यह परामर्श दिया था कि वे जांच शुरू किए जाने संबंधी सूचना का प्रत्युत्तर दें और उनकी बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का निर्धारण किए जाने के लिए संबद्ध सूचना प्रस्तुत करें। प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (3) में निर्धारित मानदंड के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्वधारणा का खंडन करने के लिए सभी जात उत्पादकों/निर्यातकों को एमईटी की प्रश्नावली की प्रतियां भेजी थीं। प्राधिकारी ने चीन की सरकार से भी अनुरोध किया था कि वह संबद्ध सूचना प्रदान करने के लिए अपने देश के उत्पादकों/निर्यातकों को परामर्श दे। तथापि, चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने कोई प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है।
44. यथा संशोधित पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध -1 के पैरा 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है, यदि चीन का निर्यातक पैरा 8 के उप पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करता है और इसके प्रतिकूल सिद्ध करता है। चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सके कि क्या :-
- (i) कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, विक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
 - (ii) इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बट्टे-खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन है;
 - (iii) इस प्रकार की फर्मों दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं, जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं, और
 - (iv) विनिमय दर का परिवर्तन व्याज की दर पर किया जाता है।
45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए जांच शुरू करने के नोटिस के परिणाम स्वरूप संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के किसी भी उत्पादक और निर्यातक ने निर्यातक की प्रश्नावली और बाजार-अर्थव्यवस्था की प्रश्नावली के प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं तथा गैर-बाजार अर्थ-व्यवस्था की पूर्वधारणा का खंडन किया है। उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने यह उपयुक्त माना है कि चीन जनवादी गणराज्य के मामले में मूल्य का निर्धारणकरने के लिए नियमावलीके अनुबंध -1 के पैरा 7 में दी गई व्यवस्था के अनुसार आगे कार्रवाई की जाए। चूंकि चीन जनवादी गणराज्य के किसी भी उत्पादक/ निर्यातक ने एमईटी प्रश्नावली के प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं, इसलिए प्राधिकारी प्रस्तावित निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने में असमर्थ है।
46. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि किसी भी उत्पादक/ निर्यातक ने एमईटी प्रश्नावली सहित किसी भी निर्यातक की प्रश्नावली के प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं, चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया गया है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग सहित किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने तीसरे देश की उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था का चयन करने के लिए प्राधिकारी को कोई सामग्रीगत तथ्य उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। इसलिए प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के दूसरे परन्तुके अनुसार अन्य उचित आधार पर चीन जनवादी गणराज्य के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।
47. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध – 1 के पैरा 7 में की गई व्यवस्था निम्नानुसार है:-
- “गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तवित रूप से संदर्भ अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा

प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहाँ उचित हो, उचित समय सीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।

48. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए भारत में चीन जनवादी गणराज्य की आयातित संबद्ध वस्तुओं के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण, “किसी अन्य आधार पर किया गया है जो कि लागत उत्पादन के संबंध में श्रेष्ठ उपलब्ध सूचना को ध्यान में रख कर और बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों और उचित लाभ मार्जिन के लिए उचित संवर्धन करने के बाद किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त की गई सूचना के अनुसार मुख्य कच्चे माल की खपत, घरेलू उद्योग के लिए स्वीकृत स्तर पर स्वीकृत मुख्य कच्चे माल के लिए अंतर्राष्ट्रीय कीमतों, परिवर्तन लागत, व्याज, एसजीए आदि, को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य निर्मित किया गया है। व्याज रहित बिक्री की 5 % लागत को उचित लाभ के साथ जोड़ा गया है।

49. चीन जनवादी गणराज्य के लिए निर्धारित किया गया निर्मित सामान्य मूल्य को नीचे तालिका में पाटन मार्जिन में दर्शाया गया है।

च.6. बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों (विएतनाम और थाईलैंड) के मामले में सामान्य मूल्य

च.7. प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकारों के विचार

50. मेसर्ज मार्ची इंटरप्राईज (विएतनाम) कंपनी लिमिटेड, विएतनाम के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (i) याचिकादाता द्वारा अपनी याचिका में दिए गए आंकडे निराधार हैं और ये पूर्णतया मनगढ़त हैं क्योंकि निर्यातक की विनिर्माण लागत, याचिकादाता द्वारा दर्शायी और निर्दिष्ट की गई लागत से बहुत अधिक है।
 - (ii) निर्यातक को कच्चे माल के साथ-साथ श्रमिक तथा विद्युत और मशीनरी, संयंत्र की अधिक लागत और अन्य अचल लागतों का वहन करना होता है।
 - (iii) याचिकादाता द्वारा दिए गए आंकडे अयथार्थ और अपर्याप्त हैं क्योंकि इनमें विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण करने के लिए निर्यातक द्वारा वहन की गई लागत को ध्यान में नहीं रखा गया है।
 - (iv) निर्यातक द्वारा गृह देश में विचाराधीन उत्पाद को नहीं बेचा जाता है, क्योंकि उसकी वमुश्किल कोई मांग है। क्योंकि विचाराधीन उत्पाद की कोई बिक्री नहीं की जाती है इसलिए ऐसे कोई आंकडे उपलब्ध नहीं हैं। निर्यातक द्वारा घरेलू बाजार में बेचे जाने वाला उत्पाद केवल यूरिआ उत्पाद है और न कि मेलामाईने उत्पाद, क्योंकि यह बहुत महंगा होता है और विएतनाम में उसके लिए कोई बाजार नहीं है।
 - (v) याचिकादाता द्वारा प्रस्तुत किए गए परिकलन और प्राक्कलन गलत हैं और ये उत्पादन के लिए निर्यातक द्वारा वहन की गई वास्तविक लागत के बराबर भी नहीं हैं। विएतनाम में निर्धारित की गई लागत, श्रमिक सहित भारत की लागत से बहुत अधिक है, इसलिए उत्पादन लागत उतनी नहीं हो सकती जितनी कि याचिका में उल्लेख किया गया है। निर्यातक ने सभी व्यय सहित निर्यातक की उत्पादन लागत के रूप में पहले से ही व्यापक दस्तावेज प्रस्तुत कर दिए हैं।
 - (vi) विनिर्माण लागत का गलत हिसाब लगाने/गलत परिकलन किए जाने को ध्यान में रखते हुए पाटन मार्जिन के संबंध में परिकलन पूर्णतया गलत है। पहले से ही बताया गया है कि निर्यातक की विनिर्माण लागत, घरेलू उद्योग की लागत से अधिक है और इसलिए उत्पाद का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग से काफी अधिक है। याचिकादाता ने करों, लागत और निर्यातक द्वारा विएतनाम में देय अन्य व्यय के संबंध में देय विभिन्न अन्य राशियों को ध्यान में नहीं रखा है, क्योंकि वहाँ के कानून पूरी तरह से भिन्न हैं।
 - (vii) मार्ची इंटरप्राईज द्वारा निर्यातित उत्पाद किसी भी तरह से घरेलू उद्योग को कुप्रभावित नहीं कर रहे हैं क्योंकि बाजार में निर्यातक के उत्पादों की कीमत, घरेलू उद्योग की कीमत से काफी अधिक है, इसलिए घरेलू उद्योग के उत्पादों की तुलना में निर्यातक के उत्पाद की मांग सीमित है क्योंकि घरेलू उद्योग ग्राहकों को अधिक किफायती विकल्प प्रदान करता है।
51. किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई विशिष्ट टिप्पणी प्रस्तुत नहीं की है।

च.8. घरेलू उद्योग के विचार

52. आवेदक द्वारा निम्नोक्त अनुरोध किए गए हैं:-
- (i) याचिकादाता ने विएतनाम और थाईलैंड में संबंधित उत्पाद की कीमत के प्रमाण प्राप्त करने के प्रयास किए हैं। प्रकाशित स्रोतों से भी ऐसे किसी प्रमाण को प्राप्त करने के प्रयास किए गए थे। ऐसा कोई प्रकाशन नहीं है जो कि विएतनाम और थाईलैंड में विचाराधीन उत्पाद की कीमत प्रदान कर सके। उत्पाद की कीमतें सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
 - (ii) उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच कीमतों का लेनदेन होता है और इसलिए ये जनता के अधिकार क्षेत्र में नहीं आती हैं। याचिकादाता विएतनाम और थाईलैंड के घरेलू बाजारों में कीमत के किसी भी प्रमाण को प्राप्त करने में विफल रहा है।
 - (iii) हालांकि उत्पाद की बिक्री फुटकर स्तरों पर होती है, फुटकर स्तर पर जिस कीमत पर उत्पाद बेचा जाता है, अत्यधिक भास्कर है और वास्तव में विशेष रूप से अधिक सामान्य मूल्य और पाटन मार्जिन दर्शाता है। याचिकादाता ने निवेदन किया है कि यह किर भी अन्य हितबद्ध पक्षकारों के लिए अत्यधिक हानिकर है और याचिकादाता को इसकी पूरी जानकारी है कि ये फुटकर कीमतें, इन देशों में सामान्य मूल्य सिद्ध करने में अविश्वसनीय हैं।
 - (iv) निर्यातक के अनुसार संबद्ध देश में निर्यातक द्वारा विचाराधीन उत्पाद की कोई बिक्री नहीं की जाती है। गृह बाजार में केवल यूरिआ आधारित उत्पाद ही बेचा जाता है जो कि विचाराधीन उत्पाद के कार्य क्षेत्र से बाहर है। इस प्रकार सामान्य मूल्य संबद्ध देश में घरेलू बाजार की कीमतों के आधार पर तय नहीं हो सकता है। किसी भी स्थिति में निर्यातक के तर्क से पाटन मार्जिन, इस समय आकलित किए गए मार्जिन से अधिक होने का स्पष्ट पता चलता है।
 - (v) इसको ध्यान में रखते हुए विएतनाम और थाईलैंड के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य निर्मित किया गया है। याचिकादाता ने उपलब्ध श्रेष्ठतम सूचना के आधार पर उत्पादन की लागत के प्राक्कलन के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है जिसमें बेचने, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों को जोड़ा गया है।

च.9. प्राधिकारी द्वारा जांच

53. याचिका में ऐसी संबद्ध सूचना निहित है जो कि सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए पर्याप्त है ताकि विएतनाम और थाईलैंड के खिलाफ पाटन-रोधी जांच शुरू किए जाने को न्यायोचित ठहराया जा सके। इसके साथ ही इस प्रकटन विवरण में पाटन-रोधी नियमों के अनुसार प्रकटन विवरण के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के आधार और संबद्ध अनुबंध को उपयुक्त स्थलों पर सविस्तार प्रदिपादित किया गया है।
54. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/आयातकों को यह परामर्श देते हुए प्रश्नावलियां भेजी कि निर्धारित फार्म में निर्धारित ढंग से सूचना उपलब्ध कराएं। अतः प्राधिकारी ने केवल इन्हीं उत्पादकों – निर्यातकों के संबंध में व्यक्तिगत पाटन मार्जिन निर्धारित किया है:
1. मैसर्स माची इंटरप्राइजेज (वियतनाम) कं. लिमि., वियतनाम
 2. मैसर्स श्रीथाई, सुपरवेयर पब्लिक कं. लिमि., थाईलैंड
55. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मैसर्स माची इंटरप्राइजेज (वियतनाम) कं. लिमि. (वियतनाम में उत्पादक और निर्यातक) ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दाखिल किया है। मैसर्स माची इंटरप्राइजेज (वियतनाम) कं. लिमि. के प्रश्नावली प्रत्युत्तर की विस्तृत जांच से यह पता चला कि डाटा/सूचना जनवरी, 2013 से दिसंबर, 2013 तक के कलेंडर वर्ष के लिए उपलब्ध कराए गए हैं और वह भी संख्याओं में हैं। वर्तमान मामले में जांच की अवधि अप्रैल, 2013 से मार्च, 2014 तक की है। जांच प्रारंभ करने की अधिसूचना में यह स्पष्ट तौर पर विनिर्दिष्ट किया गया था कि विचाराधीन उत्पाद भार के रूप में होगा। निर्यातक ने सुनवाई के बाद प्रश्नावली के लिए अपना अनुपूरक प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया है और वित्तीय वर्ष-वार सूचना दी है लेकिन डाटा अभी भी संख्याओं में है। अतः प्रदान किया गया डाटा विश्लेषण के लिए और सामान्य मूल्य तथा निर्यात मूल्य निर्धारण के लिए अपर्याप्त है।
56. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मैसर्स श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड (थाईलैंड में उत्पादक और निर्यातक) तथा भारत में उसके संगत आयातक मैसर्स श्रीथाई सुपरवेयर इंडिया लिमिटेड ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दाखिल किया है। मैसर्स श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमि. के प्रश्नावली प्रत्युत्तर की विस्तृत जांच से यह प्रकट हुआ है कि उत्पादक/निर्यातक द्वारा जनवरी, 2013 से

दिसंबर, 2013 तक के कलेंडर माह के लिए डाटा/ सूचना प्रदान की है और वह भी संख्याओं में है। वर्तमान मामले में जांच की अवधि अप्रैल, 2013 से मार्च, 2014 तक की है। जांच प्रारंभ करने की अधिसूचना में स्पष्ट तौर पर यह विनिर्दिष्ट किया गया था कि विचाराधीन उत्पाद की इकाई भार के रूप में होगी। निर्यातक ने जन सुनवाई के बाद प्रश्नावली का अपना अनुपूरक प्रत्युत्तर दाखिल किया है, जिसमें निर्यातक ने भार के आधार पर डाटा उपलब्ध कराया है। तथापि, यह अनुपूरक सूचना जनवरी से दिसंबर, 2013 तक की अवधि की ही रही। वर्तमान मामले में जांच की अवधि के लिए सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि यह सूचना जांच की अवधि के लिए अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। अतः प्रदान किया गया डाटा विश्लेषण के लिए और सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए अपर्याप्त है।

57. विचाराधीन उत्पाद विभिन्न ग्रेड में उत्पादित नहीं किया गया है, जिसमें कि संगत लागत में पर्याप्त भिन्नता है। विभिन्न प्रकार के उत्पाद जैसे चम्मच, कटोरी, प्लेट इत्यादि मेला माइन मोलिंग कंपाऊंड से तैयार किए गए हैं। विभिन्न प्रकार के उत्पादन में केवल मेला माइन मोलिंग कंपाऊंड को अपेक्षित आकार देना शामिल है। यह देखाया गया है कि उत्पादन 75 प्रतिशत से अधिक लागत कच्चे माल और इसके सहायक समान की है। कच्चे माल और सहायक समान की लागत उत्पाद के भार के प्रत्यक्ष समानुपात में है। याचिकाकर्ता द्वारा यह कहा गया है कि उत्पादों का उपभोक्ता स्तर पर संख्याओं में लेन देन होता है और विभिन्न इकाइयों में सूचित किया जाता है जैसे पीस, सेट, दर्जन लेकिन आयात स्तर पर और फैक्ट्री से डीलर स्तर पर लेन देन में यह मुख्य रूप से भार में ही किया जाता है। यही कारण है कि उत्पाद में उससे जुड़ी लागतों के संदर्भ में, जब भार के अलावा माप की इकाई में व्यक्त किया जाता है, पर्याप्त भिन्नता होती है, उत्पादन की लागत उत्पाद के भार के बिलकुल साथ-साथ चलती है और इसीलिए प्राधिकारी ने यह निर्णय लिया कि विचाराधीन उत्पाद को भार के रूप में व्यक्त करना उचित होगा। डीजीसीआईएस डाटा भार और संख्याओं में उपलब्ध है और समस्त विश्लेषण भार के आधार पर किया गया है।
 58. अतः प्राधिकारी ने प्रक्रिया के अनुसार मैसर्स माची इंटरप्राइजेज (वियतनाम) कं. लिमि., वियतनाम तथा मैसर्स श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमि., थाइलैंड के संबंध में व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण न करने का निर्णय लिया। यह प्राधिकारी की न केवल सतत प्रक्रिया है बल्कि थाई एक्रिलिक फाइबर कं. लिमि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (128) ई एल टी 537 (ट्राई-डेल.) मामले में माननीय ट्रिब्यूनल का निर्णय भी है। जांच प्रारंभ करने की सूचना में भी स्पष्ट तौर पर यह कहा गया है कि इस मामले के लिए जांच की अवधि अप्रैल, 2013 से मार्च, 2014 तक (12 माह) की है और क्षति जांच की अवधि में अप्रैल, 2010 से मार्च, 2011, अप्रैल, 2011 से मार्च, 2012; अप्रैल, 2012 से मार्च, 2013 तक की अवधि तथा जांच की अवधि शामिल है।
 59. प्राधिकारी नोट किया करते हैं कि तीसरे देश की लागत और कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए घरेलू विक्री अथवा तीसरे देश की निर्यात विक्री के साथ साथ तीसरे देश में ऐसे उत्पादकों के उत्पादन व सहयोग की लागत के संबंध में पूर्ण और अंतिम आंकड़े अपेक्षित हैं। इन वाजारों में प्रचलित मूल्यों और लागतों के संबंध में ऐसी कोई सूचना न तो आवेदक द्वारा या प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराई गई और न ही किसी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सूचना से प्राप्त हो सकी और न ही प्रतिवादी कंपनियों ने किसी उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में कोई दावा किया है। इसे देखते हुए, प्राधिकारी किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर सामान्य मूल्य का आकलन करने की कार्यवाही करते हैं।
 60. प्राधिकारी भारत को प्रतिनिधि देश के रूप में विचार करते हुए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए कार्यवाही करते हैं। तदनुसार, प्राधिकारी ने निम्नलिखित आधार पर उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का आकलन किया है:-
 - क) कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतें
 - ख) कच्चे माल की खपत तथा अंतरण लागतों को घरेलू उद्योग की सूचना/ डाटा के आधार पर अपनाया गया है।
 - ग) संबद्ध देश की दरों के अनुसार विद्युत टैरिफ
 - घ) घरेलू उद्योग की सूचना/ डाटा के आधार पर विक्री, सामान्य और प्रशासनिक लागतों को लिया गया है।
 - ड) लाभ को व्याज के अलावा फैक्ट्री - वाह्य लागत के 5 प्रतिशत की दर से लिया गया है।
- इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य का नीचे पाटन मार्जिन सारणी में उल्लेख किया गया है।

च. 10 चीन जन. गण. वियतनाम और थाईलैंड से निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

61. किसी भी निर्यातक ने निर्धारित फार्म में और निर्धारित ढंग से प्राधिकारी को पर्याप्त सूचना प्रस्तुत नहीं की है, जिसे कि निर्यात कीमत और व्यक्तिगत पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए उपयोग में लाया जा सके। अतः प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस के लेन देन-वार डाटा के आधार पर उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत निर्धारित की है।
62. निर्यात कीमत को हैंडलिंग प्रभारों, विदेश में परिवहन, अंतर्राष्ट्रीय बीमा, बैंक प्रभारों तथा वेट समायोजन (केवल चीन के लिए) के संदर्भ में समायोजित किया गया है, जिससे कि फैक्ट्री - वाह्य स्तर पर निवल निर्यात कीमत निकाली जा सके। तदनुसार, उत्पादकों के लिए फैक्ट्री - वाह्य स्तर पर कीमत निर्धारित की गई, जिसका नीचे पाटन मार्जिन सारणी में उल्लेख किया गया है।

च. 11 पाटन मार्जिन का निर्धारण

63. उपरोक्त कार्य पद्धति के आधार पर संबद्ध देशों के सभी उत्पादकों/ निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन निम्नलिखित अनुसार निर्धारित किए गए हैं :-

पाटन मार्जिन

विवरण	इकाई	चीन जन. गण.	थाईलैंड	वियतनाम
सामान्य मूल्य	यू.एस.डॉलर/मी.टन	***	***	***
निवल निर्यात	यू.एस.डॉलर/मी.टन	***	***	***
पाटन मार्जिन	यू.एस.डॉलर/मी.टन	***	***	***
पाटन मार्जिन	%	***	***	***
पाटन मार्जिन	% रेंज	45-55	20-30	60-70

क्षति निर्धारण और क्षति की जांच तथा कारणात्मक संबंध के लिए कार्य पद्धति

छ. क्षति निर्धारण और क्षति की जांच तथा कारणात्मक संबंध

छ. 1 घरेलू उद्योग के विचार

64. घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि :
- क्षति की अवधि के दौरान मांग में पर्याप्त वृद्धि हुई है।
 - संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात में समूची क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
 - चीन जन. गण. के आयात की मात्रा में जांच की अवधिके अलावा, आधार वर्ष से वर्ष 2012-13 तक समूची वर्तमान क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
 - सूची क्षति अवधि के दौरान थाईलैंड से आयातों में भारी वृद्धि हुई है।
 - वियतनाम से आयातों में आधार वर्ष से वर्ष 2011-12 में गिरावट आई है लेकिन आगे जांच की अवधि तक आयातों में काफी वृद्धि दर्शाई गई है।
 - जांच की अवधि में भारतीय उत्पादन और खपत के संबंध में संबद्ध देश के आयात पर्याप्त रहे हैं।
 - संबद्ध आयातों में जांच की अवधि में घरेलू बाजार में कुल आयातों का 97 प्रतिशत से अधिक आयात शामिल है।
 - संबद्ध देशों से आयातों के बाजार अंश में समूची क्षति अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है।

- ix. संबद्ध आयातों में भारतीय बाजार का 97 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है।
- x. यद्यपि समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई है, लेकिन घरेलू उद्योग के बाजार अंश में आधार वर्ष से वर्ष 2011-12 और 2012-13 में वृद्धि हुई है लेकिन जांच की अवधि में गिरावट आई है।
- xi. संबद्ध आयातों से वर्ष में 2010-11 में थाइलैंड और वर्ष 2010-11 तथा 2011-12 में वियतनाम को छोड़कर घरेलू कीमतों में साझा तौर पर और अलग अलग तौर पर घरेलू कीमतों में कटौती हो रही है।
- xii. आयातों की लदान कीमत समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की विक्रियों की लागत तथा विक्री कीमत के स्तर से काफी नीचे रही है। कम कीमत के पाटिंग आयातों ने घरेलू उद्योग को विक्रियों की लागत के स्तरों से नीचे की विक्री कीमतें रखने पर बाध्य किया। इस प्रकार आयात समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों का दमन कर रहे हैं। घरेलू उद्योग की विक्री की लागत में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि विक्री कीमत में केवल 5 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।
- xiii. आयातों के प्रभावों का संचित आकलन उपयुक्त है। प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह संबद्ध देशों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचित आकलन करे।
- xiv. विचाराधीन उत्पाद की विक्री को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है अर्थात् वितरकों के माध्यम से विक्रियां और खुदरा विक्रिया। वितरकों के माध्यम से विक्रिया थोक विक्रताओं/ खुदरा विक्रेताओं को की जाती हैं, जो इसे आगे खुदरा विक्रेताओं/ वास्तविक ग्राहकों को बेचते हैं। खुदरा विक्रियां बड़े ग्राहकों को की जाती हैं, जैसे सुपर स्टोर तथा कारपोरेट। आयातित उत्पादों में भी यही विक्री माध्यम होते हैं।
- xv. बाजार अंश, विक्रियां, मांग तथा बनाने व बेचने की लागत जैसे विभिन्न क्षति मापदंडों को पेश करते समय याचिकाकर्ता ने याचिकाकर्ता द्वारा की गई केवल वास्तविक घरेलू विक्रियों को ही शामिल किया है।
- xvi. घरेलू उद्योग ने मांग में वृद्धि को देखते हुए समूची क्षति अवधि के दौरान अपनी क्षमता को बढ़ाया है। क्षमता में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग का उत्पादन अनुकूल स्तर से काफी नीचे रहा है। घरेलू उद्योग बाजार में उत्पादन की मांग को देखते हुए उत्पादन को नियंत्रित कर रहा है। घरेलू उद्योग की घरेलू विक्रियों में भी यही रुक्षान रहा है जैसा कि उत्पादन में रहा है और वह अनुकूल स्तर से काफी नीचे रहा है, यद्यपि क्षति अवधि के दौरान उत्पादन के लिए घरेलू मांग में लगभग तीन गुणा वृद्धि हुई है। भारतीय बाजार में पाटिंग आयातों का प्रवेश होने पर घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर पाने में असमर्थ है।
- xvii. संगत उत्पाद की घरेलू विक्रियों के संबंध में मुनाफे में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग का मुनाफा 2011-12 में नकारात्मक बन गया और जांच की अवधि में नुकसान में और भी तेजी आई। भारतीय बाजार में उत्पाद के नियंत्रित पाटन को देखते हुए घरेलू विक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग नियंत्रित वित्तीय घाटे में चल रहा है। वर्ष 2011 के बाद नुकसान में काफी बढ़ोत्तरी हुई। भारतीय बाजार में पाटिंग आयातों का प्रवेश होने पर घरेलू उद्योग के पास बाजार में बने रहने के लिए वस्तुओं को कम कीमतों पर बेचने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं है। घरेलू उद्योग लागतों के अनुरूप अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर पाया। निवेश पर प्रतिफल और नकद लाभ में भी मुनाफे की तरह ही रुक्षान रहा। इस प्रकार निवेश पर प्रतिफल और नकद लाभ में भी इस अविधि के दौरान गिरावट आई।
- xviii. घरेलू उद्योग की मांग में 2011-12 और 2012-13 के दौरान बाजार अंश में वृद्धि हुई लेकिन प्रस्तावित जांच की अवधि में आगे गिरावट रही। अतः यह देखा जाएगा कि क्षमता में वृद्धि किए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग यहां तक कि बाजार अंश भी प्राप्त नहीं कर पाया। संबद्ध देशों से पाटिंग आयातों के बाजार अंश में समूची जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। संबद्ध आयात का अभी भी भारतीय बाजार के 40 प्रतिशत के लगभग हिस्से पर कब्जा है।
- xix. घरेलू उद्योगमें रोजगार के स्तर में वर्ष 2011-12 के अलावा समूची क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई मजदूरी में भी प्रति कर्मचारी वृद्धि हुई है।
- xx. घरेलू उद्योग की वस्तु सूची में समग्र क्षति अवधि के दौरान रोक लगी है यद्यपि घरेलू उद्योग ने यहां तक कि नुकसान पर भी विक्री करने के प्रयास किए।

- xxi. बाजार अंश की दृष्टि से घरेलू उद्योग का विकास सकारात्मक लेकिन अनुकूल स्तर से काफी नीचे रहा है। क्षमता उपयोग में नकारात्मक वृद्धि रही है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने उत्पादन, विक्रियों, लाभ, निवेश पर प्रतिफल, नकद लाभ इत्यादि की दृष्टि से नकारात्मक वृद्धि वर्ष की है। अतः घरेलू उद्योग का समग्र विकास प्रतिकूल रहा है।
- xxii. इस बात का खंडन किया जाता है कि दर्ज की गई लदान कीमत गलत है और निर्यातक संबद्ध वस्तुओं की विक्री काफी अधिक कीमत पर करता है। कच्चे माल की कीमतें काफी ऊंची हैं। याचिकाकर्ता का यह अनुरोध है कि निर्यातक और याचिकाकर्ता, दोनों ही उसी स्रोत से कच्चा माल खरीदते हैं। निर्यातक द्वारा दिए गए विवरण के अनुसार उत्पाद का सामान्य मूल्य काफी अधिक है, जबकि सूचित लदान कीमत काफी कम है। अतः निर्यातक स्वयं ही उत्पाद के पाठन को प्रमाणित करता है।
- xxiii. घरेलू उद्योग और आयातित उत्पाद के बीच अवस्थित कीमत संबंधी अंतर होने के कारण क्षति की अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई यद्यपि घरेलू उद्योग और घरेलू उत्पादकों को बाजार हिस्से में क्षति अवधि के दौरान कुल मिलाकर भारी गिरावट आई है।
- xxiv. याचिकाकर्ता द्वारा झूठी सूचना देने और निर्यात के बाजार अंश, लदान कीमत के संबंध में आंकड़ों से छेड़छाड़ करने के बारे में तर्कों को अस्वीकार किया जाता है क्योंकि निर्यातक ने आंकड़ों का क्रास सत्यापन करने के लिए कोई दस्तावेज प्रदान नहीं किया और न ही कोई अनुबंध लगाया। बिना साक्ष्यों के दावा नहीं किया जा सकता।
- xxv. निर्यातक द्वारा दावा किया गया है कि निर्यातक का बाजार में हिस्सा नगण्य है और घरेलू उद्योग से कोई तुलना नहीं है। इस संबंध में याचिकाकर्ता ने पहले ही आयात विवरण और निर्यातकों के हिस्से की तुलनामें घरेलू उद्योग के बाजार में हिस्से में हिस्से का विवरण संलग्न किया है। संबद्ध देशों से आयातों का बाजार हिस्सा समग्र क्षति अवधि के दौरान काफी बढ़ा है जबकि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से में गिरावट आई है।
- xxvi. यदि प्रक्रिया में अधिक समय लगता है इसमें लागत और भी अधिक आएगी। अधिक समय लगने वाले उत्पाद में कम कीमत कैसे हो सकती है। निर्यातक द्वारा इस मामले का समाधान नहीं किया गया है।

छ. 2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

65. चीन जन. गण. के किसी भी उत्पादक/ निर्यातक के प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया।
66. मैसर्स माची इंटरप्राइजेज (वियतनाम) कं. लिमि., वियतनाम के विचार इस प्रकार हैं :

- i. मैसर्स माची वियतनाम से विचाराधीन उत्पाद का एकमात्र निर्यातक है और कोई अन्य कंपनी भारत को निर्यात नहीं करती।
- ii. उनके द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद से काफी बेहतर गुणवत्ता का है और यह घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए उत्पादों से काफी अधिक कीमत पर बेचे जाते हैं।
- iii. घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका के अगोपनीय अंश ने गलत सूचना दी है और विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों, बाजार अंश, लदान कीमत के संबंध में आंकड़ों से छेड़छाड़ की है।
- iv. निर्यातक का विचाराधीन उत्पाद के संबंध में बाजार में हिस्सा नगण्य है और घरेलू उद्योग के उत्पाद से उसकी कोई तुलना नहीं है।
- v. निर्यातक द्वारा विनिर्मित उत्पादों और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पादों की गुणवत्ता के बीच काफी अंतर है, इसलिए ऐसी कोई संभावना नहीं है कि निर्यातक किसी भी तरह से घरेलू उद्योग के बाजार अंश को प्रभावित कर सकता है।
- vi. याचिकाकर्ता ने वर्तमान याचिका अन्य विनिर्माताओं, जो याचिकाकर्ता/ घरेलू उद्योग से बेहतर गुणवत्ता के उत्पाद तैयार करते हैं, की व्यापार और निर्माण गोपनीयता को प्रकट करने के लिए दखिल की है। याचिकाकर्ता वर्तमान याचिका से प्रकट संवेदनशील आंकड़े प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है, जो कि पूरी तरह से अनुचित है।

- vii.** घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद को बाजार में सबसे सस्ते और सबसे घटिया गुणवत्ता के उत्पाद बेचता है। वर्तमान याचिका दाखिल करके याचिकाकर्तायह जानना चाहता है कि अन्य विनिर्माता अपने उत्पादों को किस कीमत पर बेचते हैं और साथ ही अन्य विनिर्माताओं के ग्राहकों के द्वारा भी जानना चाहता ताकि याचिकाकर्ता उनसे संपर्क कर सके और अन्य देशों में निर्यात कर रहे अन्य विनिर्माताओं के बाजार के हिस्से को हथिया सके।
- viii.** निर्यातकों द्वारा बेचे गए उत्पाद सामान्य कारोबारी प्रक्रिया और मानकों के अनुसार बेचे जा रहे हैं और उन्होंने कोई भी कीमत कटौती अथवा कीमत गिराने की प्रक्रिया नहीं अपनाई है। यह तथ्य इस तथ्य से स्पष्ट तौर पर प्रमाणित हो जाता है कि जिस कीमत पर हमारे उत्पाद बेचे जा रहे हैं वह कीमत उसी उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग द्वारा बेची जा रही उत्पाद कीमत से काफी अधिक है।
- ix.** क्षति का आकलन जांच वाले सभी देशों से संचित कम में नहीं किया जा सकता, खासकर निर्यातक के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए गलत डाटा को देखते हुए। निर्यातक को अन्य देशों के लिए डाटा के सही होने की जानकारी नहीं है लेकिन निर्यातक की ओर से कोई पाठन नहीं है और सभी लेन देन (निर्यात) सम्बन्ध कारोबारी प्रक्रियाओं के तहत और निर्यातक द्वारा विनिर्मित इन उत्पादों के ब्रांड और मूल्य को ध्यान में रखकर किए गए हैं, जो विश्व में बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद हैं।
- x.** निर्यातक द्वारा निर्मित वस्तुओं की अधिक लागत के कारण उनकी विचाराधीन उत्पाद की कोई घरेलू विक्री नहीं है और निर्यातक द्वारा घरेलू बाजार में बेचे गए उत्पाद केवल यूरिया उत्पाद हैं।
- xi.** वियतनाम अभी भी एक विकासशील देश है और विचाराधीन उत्पादों के लिए मांग काफी कम है और कई अन्य निर्माता हैं जो केवल इस सीमित घरेलू मांग को पूरा कर सकते हैं।
- xii.** निर्यातक ने घरेलू उद्योग को न तो क्षति पहुंचाई है और न ही कोई क्षति होने की संभावना है। क्योंकि निर्यातक की ओर से विचाराधीन उत्पाद का कोई पाठन नहीं है। निर्यातक कंपनी की सामान्य कारोबारी प्रक्रिया के तहत उत्पादों का निर्यात करते हैं और विचाराधीन उत्पाद की कोई कीमत कटौती नहीं की गई है और निर्यातक द्वारा निर्मित किसी अन्य उत्पाद के लिए भी ऐसा नहीं किया गया है। इस संबंध में कोई भी अनुरोध पूर्णतया आमक और गलत है। यह भी कहा जाता है कि माची द्वारा निर्यातित उत्पाद के संबंध में कोई कीमत कटौती नहीं की गई क्योंकि ये उत्पाद पहले से ही घरेलू उद्योग के उत्पादों की कीमतों के ऊंची कीमतों पर बेचे जा रहे हैं और उत्पादों की गुणवत्ता में भी अंतर है। इस अंतर को आसानी से पहचाना जा सकता है।
- xiii.** यदि विचाराधीन उत्पाद के कुल बाजार की बात करें तो निर्यातक का बाजार में हिस्सा नगण्य है। यह कहा जाता है कि याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार वियतनाम से कुल निर्यात, जैसा बताया गया है, सही नहीं है क्योंकि निर्यातक (माची) की जानकारी के अनुसार केवल यहीं कंपनी है जो वियतनाम से भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात करती है और याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान किए गए आंकड़े बढ़ा चढ़ा कर अधिक दिखाए गए हैं।
- xiv.** विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन/ विनिर्माण लागतें वियतनाम में काफी अधिक हैं क्योंकि वियतनाम में भारत की बजाय श्रम एवं अन्य निर्धारित लागतें काफी अधिक हैं, और इसीलिए विचाराधीन उत्पाद की निर्माण लागत में वृद्धि हुई है। याचिका में बताई गई उत्पाद विक्री कीमतें पूरी तरह से गलत हैं और अधिक दिखाई गई हैं और विक्री कीमत प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत आंकड़ों में पहले उपलब्ध कराई गई कीमत से काफी अधिक है।
- xv.** वस्तुओं की कीमत में भिन्नता निर्यातक और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित समान प्रकृति के किन्हीं उत्पादों में देखी जा सकती है। उत्पादों के बीच अनुमानित कीमत भिन्नता करीब 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक है, जो संबंधित उत्पाद के प्रकार पर निर्भर करती है। इसीलिए यह कहा जाता है कि निर्यातक के उत्पाद घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए उत्पादों से 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक अधिक महंगे हैं।
- xvi.** वस्तु निर्यात की मात्रा विभिन्न ग्राहकों से निर्यातकों को प्राप्त आदेशों पर निर्भर करती है। घरेलू उद्योग द्वारा बताया गया मात्रा संबंधी प्रभाव पूरी तरह गलत है। यह कहा है कि निर्यातक की कीमतों का घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित उत्पादों की कीमतों से किसी भी तरह का कोई संबंध नहीं है और निर्यातक को तो घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित उत्पादों की कीमतों के बारे में कोई जानकारी नहीं है क्योंकि निर्यातक अपनी कारोबारी प्रक्रियाओं और मानकों के अनुसार कीमत लेता है। निर्यातक भारत सहित विभिन्न देशों को सामग्री का निर्माण करके निर्यात करता है। कीमत निर्धारण

के लिए जिस बात पर विचार किया जाता है उसमें मुख्य रूप से निर्मित उत्पाद की निर्माण लागत और संबंधित आयातक द्वारा दिए गए आदेश के आधार पर कोई छूट शामिल होती है।

- xvii.** निर्यातक ने न तो घरेलू उद्योग को बाधा पहुंचाने का प्रयास किया और न ही वर्तमान तथ्यों और परिस्थितियों में निर्यातक ने किसी भी रूप में घरेलू उद्योग को प्रभावित किया। विचाराधीन उत्पाद की गुणवत्ता उसका मूल्य अलग-अलग होता है, जिस कीमत पर उसे निर्माण करके बेचा गया है और इसीलिए निर्यातक के लिए विचाराधीन उत्पाद को पारित करना संभव नहीं है।
- xviii.** घरेलू उद्योग द्वारा कथित और आकलित पाटन अनुचित और गलत डाटा पर आधारित है और घरेलू उद्योग द्वारा किया गया कीमत निर्माण/ आकलन भी सही नहीं है और निर्यातक ने पहले ही डीजीएडी को उसके संबंध में आंकड़े दे दिए हैं।
- xix.** घरेलू उद्योग द्वारा यथा उल्लिखित बाजार अंश और कीमत प्रभाव सही नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए सामान की कीमतें पहले से ही निर्यातक से काफी कम हैं। बाजार में बेचे गए उत्पाद के आधार पर करीब 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत का महत्वपूर्ण अंतर है। इतना अंतर बाजार में प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं हो सकता लेकिन वह निर्माण की लागत, अन्य लागतों तथा लाभ मार्जिन पर आधारित होता है। पुनः यह कहा जाता है कि याचिकाकर्ता और प्रतिवादी निर्यातक द्वारा निर्मित उत्पादों की गुणवत्ता भी भिन्न है।
- xx.** निर्यातक की जानकारी के अनुसार, वही एकमात्र निर्यातक है जो भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात करता है और ऐसी परिस्थितियों में निर्यातक द्वारा बताई गई मात्रा सटीक/ सही नहीं हो सकती और अनुमान गलत हो जाता है जिससे बाजार का हिस्सा दर्शने तथा वास्तविक स्थिति में काफी अंतर हो जाता है।
- xxi.** वियतनाम द्वारा किए गए निर्यातों के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान किए गए आंकड़े गलत हैं और बढ़ा चढ़ाकर दिखाए हैं। प्रतिवादी निर्यातक ने पहले ही प्रश्नावली के संदर्भ में डाटा प्रदान कर दिए हैं और सही तथ्यों तथा आंकड़ों में याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त आंकड़ों से काफी भिन्नता है, जो बिना किसी स्रोत अथवा सूचनाके याचिकाकर्ता द्वारा जानबूझकर तैयार किए गए आंकड़े हैं।
- xxii.** ऐसी परिस्थितियों में याचिकाकर्ता तैयार किए गए आंकड़े और प्रतिवादी के आंकड़ों पर भरोसा नहीं किया जा सकता और निर्यातक द्वारा दिए गए वास्तविक आंकड़ों को घरेलू उद्योग के दावों की जांच करते समय प्रयोग किया जाए क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए आंकड़े याचिकाकर्ता द्वारा दावा की गई नुकसान और क्षति के संबंध में अधिक बढ़ा चढ़ाकर दिखाए गए हैं।
- xxiii.** प्रतिवादी निर्यातक के निर्यातों और याचिकाकर्ता को हुई किसी क्षति या नुकसान के बीच किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। यह भी कहा जाता है कि प्रतिवादी निर्यातक ने किसी भी वस्तु का पाटन नहीं किया है और नियमित कारोबारी प्रक्रिया के अनुसार निर्यात किए गए तथा घरेलू उद्योग को कोई हानि अथवा बाधा नहीं पहुंचाई।
- xxiv.** निर्माण प्रक्रिया याचिकाकर्ता से कुछ अलग है और इसीलिए प्रतिवादी निर्यातक की वस्तुओं की गुणवत्ता भी याचिकाकर्ता से बेहतर है।
- xxv.** निर्यातक ने भारत में किसी वस्तु का पाटन नहीं किया है और न ही घरेलू उद्योग को कोई क्षति पहुंचाई। तथापि, प्रतिवादी निर्यातक को अन्य देशों की प्रक्रिया और आंकड़ों की कोई जानकारी नहीं है।

छ. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

68. इस संबंध में हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों पर विचार करके प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से आयातों के कारण वर्तमान क्षति, यदि कोई है, की जांच की प्रक्रिया आरभ की है।
69. विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू आर ओ) के अनुच्छेद 31 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की एक उद्देश्यपरक जांच करने का प्रावधान है। पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करनी अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में अधिकता की दृष्टि से अथवा उत्पादक के संबंध अथवा भारत में खपत के संबंध में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। पाटित आयातों कीमत संबंधी प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करनी अपेक्षित है कि क्या

भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कोई महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा काफी कमी हुई है अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट हुई है, जो अथवा काफी मात्रा में होती।

क्षति का संचित आकलन

70. नियमावली के अनुबंध-॥। (iii) के अनुसार, यदि एक से अधिक देश से कोई आयात होता है, और साथ साथ पाटन रोधी जांच की जाती है तो प्राधिकारी को ऐसे आयातों के प्रभाव का संचित आकलन केवल उस समय करने की जरूरत पड़ती है, जब यह निर्धारण होता है कि :
- क. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में प्रमाणित पाटन का मार्जिन व्यक्त मार्जिन के 2 प्रतिशत से अधिक हो क्योंकि प्रत्येक देश से निर्यात कीमत का प्रतिशत और आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का 3 प्रतिशत है, और
 - ख. आयातों के प्रभाव का संचित आकलन आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति को देखते हुए उचित है।
71. प्राधिकारी ने यह पाया कि प्रत्येक संबद्ध देश के संबंध में पाटन का मार्जिन 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा भी 3 प्रतिशत से अधिक है।
72. आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों का आकलन करने के लिए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :
- क. विदेशी उत्पादकों और घरेलू उत्पादकों द्वारा आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तुएं परस्पर समान वस्तु हैं।
 - ख. प्राधिकारी ने यह पाया कि आयातित संबद्ध वस्तुएं घरेलू उत्पादित उत्पादों का वाणिज्यिक विकल्प है।
 - ग. प्राधिकारी को पेश की गई सूचना एक तर्कसंगत संकेत देती है कि संबद्ध देशों से किया गया निर्यात समान उत्पादों वाले उसी बाजार में प्रतिस्पर्धा करता है।
73. अतः प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए घरेलू तौर पर उत्पादित समान वस्तुओं पर संबद्ध वस्तुओं के आयातों के प्रभाव का संचित आकलन करना उपयुक्त है।
74. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-॥। में यह अपेक्षा है कि क्षति के निर्धारण में निम्नलिखित दोनों की उद्देश्यक परक जांच की जाएगी :
- क. समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा और पाटित आयातों का प्रभाव;
 - और
 - ख. ऐसे उत्पादकों के घरेलू उत्पादों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव।
75. प्राधिकारी को पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय यह जांचने की जरूरत होती है कि क्या पाटित आयातों में अधिकता की दृष्टि से अथवा उत्पादन के संबंध में अथवा भारत में खपत के संबंध में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत संबंधी प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को यह जांच करनी अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कोई महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अथवा काफी कमी हुई अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट हुई है, जो अन्यथा काफी मात्रा में होती।
76. क्षति विश्लेषण के प्रयोजन से प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के संचित प्रभाव और सभी संगत आर्थिक कारकों पर इसके प्रभाव तथा क्षति और पाटन व क्षति यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध होने का मूल्यांकन करने के लिए उद्योग की स्थिति से संबंधित संकेतकों की जांच की है। चूंकि संबद्ध देशोंसे निर्यातों के लिए भारी पाटन मार्जिन प्रमाणित हुआ है इसलिए संबद्ध देशों से समस्त निर्यातों को क्षति विश्लेषण और कारणात्मक संबंध की जांच के प्रयोजन से पाटित आयात माना गया है।
- घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रभाव**
77. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-॥। के पैरा (iv) में निम्नानुसार उल्लेख है:
- "संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में विक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

78. भारत में घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों के प्रभाव की जॉच के लिए संबंधित नियमावली के अनुबंध- II के अनुसार उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले कारकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, विक्री मात्रा, भण्डार, लाभप्रदता, निवल विक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि पर विचार किया गया है।

79. भारत में घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों के प्रभाव की जॉच के लिए प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध II (iv) के अनुसार अनुसार उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले कारकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, विक्री मात्रा, भण्डार, लाभप्रदता, निवल विक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि पर विचार किया है जो निम्नानुसार है:-

पाठित आयातों के प्रभाव का आकलन समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंध में किया जाएगा जबकि उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादकों की विक्री और लाभों जैसे मापदंडों के आधार पर उस उत्पादन की अलग से पहचान करने के लिए आकड़े उपलब्ध हैं। यदि उस उत्पादन की अलग से पहचान संभव हो तो पाठित आयातों के प्रभाव का आकलन उत्पादों के संकीर्णतम समूह या रेंज के उत्पादन की जॉच द्वारा किया जाएगा जिसमें समान उत्पाद शामिल होंगे जिनके लिए आवश्यक सूचना उपलब्ध कराई जा सकती हो।

80. प्राधिकारी ने तथ्यों और विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोधों पर विचार करते हुए क्षति संबंधी मापदंडों की वस्तुनिष्ठ ढंग से जॉच की है।

मांग का आकलन

81. संबद्ध वस्तु की मांग/स्पष्ट खपत को घरेलू समान उत्पाद की घरेलू विक्रियों और सभी देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों को जोड़कर निर्धारित किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में काफी वृद्धि हुई है, जैसे निम्नांकित तालिका से देखा जा सकता है:

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
घरेलू उद्योग की विक्रियां	एमटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	170	227	269
अन्य भारतीय उत्पादकों की विक्रियां	एमटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	134	160	177
भारत में आयात	एमटी	536	522	764	1,083
चीन	एमटी	236	260	345	324
थाइलैंड	एमटी	81	180	313	372
वियतनाम	एमटी	44	36	70	354
कुल संबद्ध देश	एमटी	361	476	728	1,050
अन्य देश	एमटी	175	46	36	33
भारत में मांग	एमटी	1,308	1,671	2,219	2,746

82. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग में सकारात्मक रूझान रहा है जिसमें क्षति अवधि के दौरान समग्र वृद्धि हुई है।

i. समग्र रूप से आयात मात्राएं

83. संबद्ध देशों से आयात मात्राएं निम्नानुसार रही हैं:-

आयात मात्राएं	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
चीन	एमटी	236	260	345	324
थाइलैंड	एमटी	81	180	313	372
वियतनाम	एमटी	44	36	70	354
कुल संबद्ध देश	एमटी	361	476	728	1,050
अन्य देश	एमटी	175	46	36	33
कुल आयात	एमटी	536	522	763	1,083

यह देखा जाता है कि आयात में क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप से भरी वृद्धि हुई है। चीन जन. गण. से आयातों में पूरी क्षति अवधि में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है, जबकि वियतनाम और थाइलैंड से आयातों में क्षति अवधि में भारी वृद्धि हुई है। जबकि विचाराधीन उत्पाद की मांग में आधार वर्ष से 110 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, तथापि चीन से आयात उसी अवधि में 37 प्रतिशत बढ़े हैं, जबकि वियतनाम और थाइलैंड से आयातों में क्रमशः 703 प्रतिशत और 358 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

ii. उत्पादन के संबंध में आयात

84. प्राधिकारी समुक्ति करते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों में भारत में उत्पादन के संबंध में वृद्धि हुई है जैसा नीचे दर्शाया गया है:

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
संबद्ध देशों से आयात	एमटी	361	476	728	1,050
कुल आयात	एमटी	536	522	763	1,083
घरेलू उद्योग का उत्पादन	एमटी	***	***	***	***
भारतीय उत्पादन	एमटी	1072	1435	1679	1854
निम्न के संबंध में संबद्ध देश के आयातों का हिस्सा					
घरेलू उद्योग का उत्पादन	%	80.53	69.54	85.79	108.35
भारतीय उत्पादन	%	33.68	33.18	43.34	56.63

85. इस प्रकार यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात में भारत में उत्पादन की दृष्टि से वृद्धि हुई है।

iii. कुल आयातों के संबंध में आयात

86. संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात में भारत में आयातों की दृष्टि से वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
आयात मात्रा में बाजार हिस्सा					
चीन	एमटी	236	260	345	324
थाइलैंड	एमटी	81	180	313	372

वियतनाम	एमटी	44	36	70	354
संबद्ध देश	एमटी	361	476	728	1,050
अन्य देश	एमटी	175	46	36	33
कुल आयात	एमटी	536	522	764	1,083
कुल आयातों में हिस्सा -					
चीन	%	43.96	49.77	45.14	29.92
थाइलैंड	%	15.18	34.54	41.04	34.37
वियतनाम	%	8.21	6.96	9.12	32.64
अन्य संबद्ध देश	%	67.34	91.27	95.31	96.93
अन्य देश	%	32.66	8.73	4.69	3.07

iv. खपत की वृद्धि से आयात

87. विचाराधीन उत्पाद के आयातों में भारत में विचाराधीन उत्पाद की खपत की वृद्धि से भारी वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
संबद्ध देशों से आयात	एमटी	361	476	728	1,050
घरेलू उद्योग की विक्रियां	एमटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	170	227	269
भारत में खपत	एमटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	128	170	210
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	24.67	32.81	33.14	31.65
अन्य भारतीय उत्पादक	%	34.32	35.97	32.46	28.91
कुल आयात	%	41.01	31.22	34.41	39.44
चीन	%	18.03	15.54	15.53	11.80
थाइलैंड	%	6.22	10.78	14.12	13.56
वियतनाम	%	3.37	2.17	3.14	12.87
कुल संबद्ध देश	%	27.62	28.49	32.79	38.23
अन्य देश	%	13.39	2.73	1.62	1.21

88. यह देखा जाता है कि भारतीय मांग में संबद्ध देशों से आयातों के हिस्से में क्षति अवधि में 28 प्रतिशत से कम से 38 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। खपत के संबंध में आयातों में यह वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में वृद्धि के बावजूद हुई है। घरेलू उद्योग ने इस अवधि के दौरान क्षमताओं को दोगुना कर दिया है इसके बावजूद खपत में संबद्ध देशों के आयातों के हिस्से में क्षति अवधि के दौरान 10 प्रतिशत की समग्र वृद्धि हुई है।

89. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप से और भारत में उत्पादन और खपत दोनों की दृष्टि से वृद्धि हुई है।

v. घरेलू उद्योग पर पाठित आयातों का कीमत प्रभाव

90. जहां तक कीमतों पर पाठित आयातों के प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुवंध-II (ii) में निम्नानुसार निर्धारित है :

“जहां तक नियम 18 के उप नियम (2) में किए गए उल्लेखानुसार कीमतों पर पाठित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाठित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली वृद्धि में अन्यथा काफी अधिक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती।”

91. इस बात की जाँच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाठित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली वृद्धि में अन्यथा काफी अधिक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाठित आयातों के प्रभाव की जाँच कीमत कटौती, कम कीमत पर विक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है।

vi. कीमत कटौती

92. इस बात को निर्धारित करने के लिए कि क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है, प्राधिकारी ने आयातों के पंहुच मूल्य की तुलना घरेलू उद्योग की निवल विक्री प्राप्ति से की है। इस संबंध में उत्पाद के पंहुच मूल्य और व्यापार के समान स्तर पर सभी छटों और करों के निवल के साथ घरेलू उद्योग की औसत विक्री कीमत के बीच तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतों कारखाना-द्वारा स्तर पर निर्धारित की गई हैं। इस तुलना से यह पता चला कि जाँच अवधि के दौरान संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में ऐसी कीमत पर आयात किया गया जो घरेलू उद्योग की विक्री कीमत से कम थी। इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु घरेलू कीमतों में कटौती कर रही थी और कटौती का मार्जिन नीचे तालिका में दर्शाया गया है:

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
घरेलू उद्योग की निवल विक्री प्राप्ति	रूपये/एमटी	***	***	***	***
चीन जन. गण.					
पंहुच मूल्य	रूपये/एमटी	244,518	254,368	212,549	244,364
कीमत कटौती	रूपये/एमटी	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती रेंज	%	15-25	10-20	40-50	25-35
थाइलैंड					
पंहुच मूल्य	रूपये/एमटी	298,528	260,663	221,248	287,039
कीमत कटौती	रूपये/एमटी	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती रेंज	%	ऋणात्मक	05-15	40-50	5-15
वियतनाम					
पंहुच मूल्य	रूपये/एमटी	361,905	399,722	262,407	217,106
कीमत कटौती	रूपये/एमटी	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
कीमत कटौती रेज	%	ऋणात्मक	ऋणात्मक	15-25	40-50
संबद्ध देश					
पंहुच मूल्य	रूपये/एमटी	271,001	267,839	221,265	250,321
कीमत कटौती	रूपये/एमटी	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती रेज	%	05-15	05-15	35-45	20-30

93. यह देखा जाता है कि प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की पंहुच कीमत घरेलू उद्योग की विक्री कीमत से अधिक रही है, इसके परिणामस्वरूप भारी कीमत कटौती हुई है।

94. हितबद्ध पक्षों ने यह दलील दी है कि घरेलू उद्योग की विक्री कीमत आयातों के पंहुच मूल्य से कम है और आयात बेहतर गुणवत्ता के थे। तथापि, सत्यापित सूचना दर्शाती है कि आयातों की पंहुच कीमत घरेलू उद्योग की विक्री कीमत से कम थे। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि कीमत कटौती को संबंधित देश से आयातों के भारित औसत के आधार पर निर्धारित किया जाना अपेक्षित होता है। अतः हितबद्ध पक्षों का यह तर्क कि आयात उच्चतर कीमतों पर हो रहे हैं, तथ्यों की दृष्टि से गलत है। प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि संबद्ध देश से आयातों के संबंध में कीमत कटौती जाँच अवधि के दौरान सकारात्मक रही है।

vii. कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

95. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली वृद्धि में अन्यथा काफी अधिक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागत और कीमतों में परिवर्तनों की जाँच की है। स्थिति नीचे तालिका में दर्शाई गई है:-

विवरण	इकाइयाँ	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (पीओआई)
विक्री कीमत	रु./एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	106	106
विक्री लागत	रु./एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	111	114
संबद्ध देशों से आयातों का पंहुच मूल्य	रु./एमटी	271,001	267,839	221,065	250,321
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99	82	92

96. यह देखा जाता है कि आयातों का पंहुच मूल्य पूरी क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की विक्री लागत और विक्री कीमत से काफी कम रही है। कम कीमत पर पाठित आयातों ने घरेलू उद्योग को विक्री लागत से कम कीमत पर अपनी वस्तुओं को बेचने पर विवश होना पड़ा है। इस प्रकार, आयातों से पूरी क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की कीमतें कम हुई हैं।

viii. कम कीमत पर विक्री

97. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर विक्री क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। क्षति रहित कीमत ज्ञात की गई है और कम कीमत पर विक्री की मात्रा का पता लगाने के लिए संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत के साथ उसकी तुलना की गई है। क्षति रहित कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III के अनुसार पीओआई के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए किया गया है। विश्लेषण से पता चलता है कि संबद्ध आयातों का पहुंच मूल्य क्षति रहित कीमत से कम था, जैसा नीचे तालिका से देखा जा सकता है।

विवरण	इकाइयाँ	चीन ज.ग.	थाइलैंड	वियतनाम
क्षतिरहित कीमत	रु./एमटी	***	***	***
पहुंच मूल्य	रु./एमटी	2,71,001	2,67,839	2,21,065
कम कीमत पर विक्री	रु./एमटी	***	***	***
कम कीमत पर विक्री	%	***	***	***
कम कीमत पर विक्री	रेंज	20-30	5-15	40-50

उक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर काफी न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है।

ix. घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

98. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पासित आयातों के प्रभाव की जांच में समसृत संगत आर्थिक मापदंडों और विक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव ढालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों पर निम्नानुसार चर्चा की गई है।

x. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और विक्री मात्रा

99. उत्पादन, घरेलू विक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन की जांच की गई और उसे नीचे तालिका में दिया गया है:-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (पीओआई)
क्षमता	एमटी	889	1309	2001	2001
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	147	225	225
उत्पादन	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	153	189	216
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	84	96
कुल विक्रियां	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	193	257	302
घरेलू विक्रियां	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	170	228	269

यह नोट किया जाता है कि:

- क. घरेलू उद्योग ने पूरी क्षति अवधि में मांग में वृद्धि को देखते हुए क्षमता में वृद्धि की है। विचाराधीन उत्पाद की मांग क्षति अवधि में दोगुनी हो गई। घरेलू उद्योग की क्षमता भी क्षति अवधि के दौरान दोगुनी हो गई। इस प्रकार यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा क्षमताओं में वृद्धि देश में उत्पाद के लिए मांग में वृद्धि के अनुरूप रही है।
- ख. घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। तथापि उत्पादन और बिक्री में वृद्धि की दर उत्पाद की मांग में वृद्धि की दर से कम रही है। इसके अलावा याचिकाकर्ता भारी अप्रयुक्त क्षमताओं से नुकसान उठा रहा है। संयंत्र के दौरे के समय यह देखा गया कि विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन प्रक्रिया ऐसी है कि उत्पादक मशीनों को रोककर उत्पादन को विनियमित कर सकता है और याचिकाकर्ता ने वास्तव में तीन पाली के आधार पर सभी मशीनों को चालू रखा है। इस प्रकार घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में घरेलू उद्योग द्वारा उसके बाजार हिस्से में वृद्धि करने में अक्षम रहने के कारण नुकसान हुआ है। यह भी देखा जाता है कि चूंकि याचिकाकर्ता देश में काफी अधिक समय से विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन नहीं कर रहा है इसलिए इस अवधि के दौरान याचिकाकर्ता द्वारा उसके बाजार हिस्से में सुधार करने की प्रत्याशा विधिसम्मत है।

xii. लाभ/हानि, निवेश पर आय

100. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता नीचे तालिका में दर्शाई गई है:-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (पीओआई)
विक्री लागत	रु./एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	111	114
विक्री कीमत	रु./एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	106	106
लाभ/हानि	रु./एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(9,110)	(5,989)	(9,784)
लाभ/हानि	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(15,478)	(13,648)	(26,362)
पीवीआईटी	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(190)	(126)	(617)
नकद लाभ	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(54)	58	(92)
निवेश पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	(182)	(113)	(359)

101. उक्त सूचना से यह देखा जा सकता है कि:

क. विचाराधीन उत्पाद की घरेलू विक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में आधार वर्ष की तुलना में जॉच अवधि में विकृति आई है। घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट काफी अधिक है।

ख. उत्पादन लागत और विक्री कीमत दोनों में क्षति अवधि में वृद्धि हुई है परंतु विक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि से कम रही है। इस प्रकार पाटित आयातों के कारण हुआ कीमत न्यूनीकरण लाभों के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में खराबी का कारण रहा है। घरेलू उद्योग को अपनी उत्पादन लागत से कम कीमत पर उत्पाद को बेचने पर बाध्य होना पड़ा है।

ग. उत्पादन और विक्री में क्षति अवधि में वृद्धि हुई है परंतु लाभप्रदता में गिरावट आई है।

घ. निवेश पर आय और नकद प्रवाह में लाभप्रदता की प्रवृत्ति जैसा ही रुझान रहा है।

xii. मालसूचियां

102. घरेलू उद्योग की मालसूचियां निम्नानुसार रही हैं:

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
औसत मालसूची	एमटी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	241	287	273

यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की मालसूची में इस अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है। मालसूची में वृद्धि की दर उत्पादन में वृद्धि की दर से अधिक रही थी।

xiii. रोजगार और मजदूरी

103. रोजगार और मजदूरी निम्नानुसार रही है:

मापदंड	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
कर्मचारियों की संख्या	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	136	159	164
मजदूरी	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	203	291	359

यह देखा जाता है कि क्षति अवधि में रोजगार और मजदूरी में वृद्धि हुई है।

xiv. वृद्धि

104. नीचे दी गई तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की वृद्धि वर्ष दर वर्ष विक्री और उत्पादन के अनुसार सकारात्मक रही है। तथापि, घरेलू उद्योग की वृद्धि मालसूचियों, लाभ, नकद लाभ और निवेशों पर आय के संबंध में वर्ष दर वर्ष नकारात्मक रही है।

मापदंड	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	पीओआई
उत्पादन	%	-	53	24	14
घरेलू विक्रियां	%	-	70	34	18
आौसत मालसूची	%	-	141	19	(5)
नकद लाभ	%	-	(154)	(208)	(259)
पीबीआईटी	%	-	(290)	34	(391)
आरओसीई	%	-	(4)	1	(3)

xv. पूँजी जुटाने की क्षमता

105. घरेलू उद्योग ने इस अवधि के दौरान क्षमता बढ़ाई है और नया निवेश किया है। घरेलू उद्योग ने यह दलील दी है कि जब उन्होंने नया निवेश भी किया तो वह कंपनी के समग्र प्रचालनों और उस मजबूती का नतीजा है जो अन्य उत्पादों के कारण उसके पास है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क भी दिया है कि निवेश इस आशा से किए गए कि विचाराधीन उत्पाद का बाजार उचित होगा। तथापि, उत्पाद के पाठन से अनेक आर्थिक मापदंडों के अनुसार नकारात्मक वृद्धि हुई है और पाठन के कारण वित्तीय घाटा हो रहा है।

xvi. घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक

106. संबद्ध देशों से आयात कीमतों, लागत संरचना में बदलाव, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक जिनकी वजह से घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित हुई हैं आदि की जाँच से पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयातित सामग्री का पंहुच मूल्य घरेलू उद्योग की विक्री कीमत और क्षतिरहित कीमत से कम रहा है, जिससे भारतीय बाजार में भारी कीमत कटौती और कम कीमत पर विक्री हुई है। यह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु की मांग में जाँच अवधि महित क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है और इसलिए वह घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करने वाला कारक नहीं हो सकता है। इस प्रकार घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटित आयात है।

xvii. मार्जिन की मात्रा और मार्जिन

107. संबद्ध देशों से आयात पाठन मार्जिन के निर्धारित न्यूनतम स्तर से काफी अधिक है। प्रत्येक संबद्ध देश के लिए पाठन मार्जिन काफी अधिक है। पाठन मार्जिन की इतनी अधिक मात्रा के साथ पाटित आयात घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पंहुचा रहे हैं।

xviii. क्षति संबंधी निष्कर्ष

108. उक्त के आधार पर, प्राधिकारी इस निष्कर्ष का प्रस्ताव करते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों में समग्र रूप से और भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन और खपत की दृष्टि से वृद्धि हुई है। उत्पाद के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों कटौती कर रहे हैं। इसके अलावा, यद्यपि क्षति अवधि के दौरान उत्पादन लागत और विक्री कीमत दोनों में वृद्धि हुई है तथापि विक्री कीमत में वृद्धि उत्पादन लागतमें वृद्धि से कम रही है। इस प्रकार आयातों ने ऐसी कीमत वृद्धि को रोका है जो अन्यथा पाटित आयातों की गैरमौजूदगी में बढ़ गई होती। यह देखा गया है कि उत्पाद की मांग में भारी वृद्धि हुई है और परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन और विक्रियों में भी वृद्धि हुई है तथापि घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में बाजार हिस्से, क्षमता उपयोग, मालसूचियों, लाभ, नकद प्रवाह और निवेशों पर आय के संबंध में विकृति आई है।

109. प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के मात्रा और कीमत प्रभावों के कारण क्षति हुई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा उठाना पड़ रहा है। नियोजित पूँजी पर आय और नकद लाभ

जॉन्च अवधि में क्रृष्णात्मक हो गए हैं। घरेलू उद्योग की वृद्धि लाभ, नकद लाभ, नियोजित पूँजी पर आय, बाजार हिस्सा और मालसूची आदि जैसे अधिकांश मापदंडों के संबंध में क्रृष्णात्मक हो गई है। इस प्रकार प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

110. प्राधिकारी ने इस बात की जॉन्च की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली में सूचीबद्ध अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। पाटन और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की जॉन्च निम्नानुसार रही है:

अन्य सूचीबद्ध ज्ञात कारकों के कारण क्षति

111. प्राधिकारी ने इस बात की जॉन्च की है कि क्या सूचीबद्ध ज्ञात कारकों ने घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

(1) खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन: विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की प्रवृत्ति में कोई बदलाव नहीं हुआ है। खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकता है।

(2) विदेशी और घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं और उनके बीच प्रतिस्पर्धा: ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं रही हैं जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सकती हो।

(3) प्रौद्योगिकी में विकास: उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई बदलाव नहीं हुआ है। प्रौद्योगिकी में विकास क्षति का कारण नहीं है।

(4) निर्यात कार्यनिष्पादन: याचिकाकर्ता ने क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। तथापि, घरेलू उद्योग की दावा की गई क्षति घरेलू प्रचालनों के संबंध में है। याचिकाकर्ता ने घरेलू विक्री के लिए अलग से लागत और क्षति संबंधी सूचना प्रस्तुत की है। इस प्रकार, घरेलू विक्री के लिए निर्यातों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

(5) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेची गई अन्य वस्तु का कार्यनिष्पादन: घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में क्षति का दावा किया है।

112. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालने का प्रस्ताव करते हैं कि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों ने घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुंचाई है।

कारणात्मक संबंध स्थापित करने वाले कारक

113. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि सूचीबद्ध ज्ञात कारक घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं दर्शाते हैं तथापि निम्नलिखित मापदंडों से पता चलता है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है:

(क) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित और विदेशी उत्पादकों की कीमतों के बीच भारी अंतर है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को मात्रात्मक क्षति हुई है क्योंकि घरेलू उद्योग अपना उत्पादन और विक्री नहीं बढ़ा सका है। वास्तव में, घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।

(ख) आयातित उत्पाद से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग उत्पादन लागत की सीमा तक कीमतों में वृद्धि नहीं कर पाया है।

(ग) लाभों, नियोजित पूँजी पर आय और नकद लाभ में कमी पाटित आयातों के कारण हुई है।

(घ) आयातों में भारी वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग का काफी भण्डार इकट्ठा हो गया है।

(ङ) संबद्ध देशों से आयातों के बाजार हिस्सा काफी अधिक रहा है। घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा घरेलू उद्योग की क्षमताओं में वृद्धि के बावजूद कम हुआ है।

(च) घरेलू उद्योग का विकास पाटित आयातों के कारण अनेक मापदंडों के संबंध में क्रृष्णात्मक रहा है।

ज. क्षति और क्षति मार्जिन की मात्रा

114. प्राधिकारी ने यथा संशोधित नियमावली में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत निर्धारित की है। इस प्रकार निर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना संबद्ध देश से आयातों की पंहुच कीमतों के साथ की गई है। इस प्रकार निर्धारित क्षतिमार्जिन काफी अधिक है।

विवरण	चीन जन. गण.		थाइलैंड		वियतनाम		संबद्ध देशों	
	यू.एस डालर/ एमटी	रु./एमटी	यू.एस डालर/ एमटी	रु./एमटी	यू.एस डालर/ एमटी	रु./एमटी	यू.स डालर/ एमटी	रु./एमटी
क्षतिरहित कीमत	***	***	***	***	***	***	***	***
पंहुच मूल्य	4,015.80	2,44,364	4,717.11	2,87,039	3,567.84	2,17,106	4,113.68	2,50,321
क्षति मार्जिन	***	***	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	***	***	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन रेंज %	25-35%		10-20%		45-55%		20-30%	

झ. प्रकटन विवरण के बाद के विवरण/अनुरोध

झ. 1. प्रकटन के बाद निर्यातकों द्वारा किए गए अनुरोध

115. मैसर्स माची ने इंटरप्राइजेज ने अनुरोध किए हैं परंतु टिप्पणियों में कोई नया मूल तथ्य नहीं है। मै श्रीथाई सुपरवेयर पब्लिक कंपनी लिमिटेड थाइलैंड, द्वारा किए गए अनुरोधों का सारांश निम्नानुसार है :
- क. संबद्ध वस्तुओं के अनेक ग्रेड हो सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप उच्चतर उत्पादन लागत और उसके बाद उत्पाद की उच्चतर विक्री कीमत होती है।
 - ख. उनका उत्पाद घरेलू उद्योग की तुलना में उत्पादन प्रौद्योगिकी, विनिर्माण प्रक्रिया, वितरण और विपणन के अनुसार अलग है। घरेलू उद्योग के उत्पाद समान वस्तुएं नहीं हैं।
 - ग. मै है। नहीं दक्षता प्रमुख याचिकाकर्ता और हैं रखते हिस्सा प्रमुख में दनउत्पा में बाजार भारतीय सर्ववैल ।
 - घ. उनके द्वारा जाँच की प्रक्रिया के दौरान उनके विभिन्न अनुरोधों में समस्त दस्तावेज और विस्तृत सूचना प्रस्तुत की गई है। आकड़े थाइलैंड के वित्तीय वर्ष जो जनवरीहै 2013 रदिसम्ब-, के लिए दिए गए हैं जो पीओआई का कम से कम नौ माह है।
 - ड. कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों का स्रोत घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि घरेलू देश की कीमत के आकड़ों का तुलना के प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

झ.2. प्रकटन के बाद घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

116. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों का सारांश निम्नानुसार है:

- क. विचाराधीन उत्पाद को विभिन्न ग्रेडों में उत्पादित किया जाता है जिनमें अलग हैं होती लागतें संबद्ध अलग-
- ख. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद में कोई जात अंतर नहीं है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित वस्तु नियमावली के अनुसार समान वस्तुएं हैं।

ग. याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उद्योग के कुल उत्पादन का पात्र के जाने माने उद्योग घरेलू वह और है बनता हिस्सा प्रतिशत 52 हैं।

घ. प्राधिकारी को ऐसी स्थिति जहां प्राधिकारी ने विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर को स्वीकार नहीं किया है, में पीओआई में आयात कीमत का भारित औसत के आधार पर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन निर्धारित नहीं करना चाहिए। इस संदर्भ में निम्नलिखित का उल्लेख किया गया है :

कोठारी सुगर्स एंड कैमिकल्स लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (187) 2005ईमेंइस :(.डेल ., त्रि) 185 .टी.एल., न्यायाधिकरण ने स्पष्ट रूप से यह माना कि यह आवश्यक नहीं कि पाटन और क्षति मार्जिन को केवल आयात कीमत के भारित औसत पर आधारित किया जाए। यह निर्णय स्पष्ट रूप से सिद्ध करता है कि इस मामले में अलग है अंतर भारी में कीमत आयात में सौदों आयात अलग-, इसलिए भारित औसत बिल्कुल गुमराह करने वाला होगा।

वर्तमान मामले में प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत आयात आकड़ों और प्रश्नावली के उत्तर से यह स्पष्ट है कि एक निर्यातक विशेष द्वारा किए गए निर्यात उच्चतर कीमत पर हैं। केवल इस तथ्य कि प्राधिकारी ने निर्यातक को अलग पाटन मार्जिन नहीं प्रदान किया, का यह अर्थ नहीं है कि प्राधिकारी भारतीय सीमाशुल्क के आकड़ों के आधार पर भारित औसत आयात कीमत अपनाएंगे।

इ. उन कीमतों जिन पर मै. श्रीथाई ने उत्पाद का निर्यात किया है और वह कीमत जिस पर थाइलैंड से अन्य उत्पादकों ने उत्पाद का निर्यात किया है, को दर्शाने वाला एक विवरण निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किया गया है। कीमतों में भारी अंतर को देखते हुए भारित औसत के आधार पर निर्धारित कोई पाटन और क्षति मार्जिन उत्पाद को निर्यात करने की श्रीथाई की उच्चतर निर्यात कीमत के लाभ से अन्य निर्यातकों/उत्पादकों को पुरस्कृत करने की तरह होगा। इसी के साथ, इसका अर्थ श्रीथाई द्वारा उच्चतर निर्यात कीमत स्वीकार करने के बावजूद उस कंपनी को दंडित करना भी होगा। सबसे महत्वपूर्ण यह कि घरेलू उद्योग परिणामी पाटनरोधी शुल्क द्वारा काफी असंरक्षित रह जाएगा क्योंकि भारी पाटन करने वाली कंपनियां उत्पाद का पाटन जारी रखेंगी और श्रीथाई जैसी कंपनी को उच्चतर शुल्क का सामना करना पड़ेगा, जो निर्यातक (मै. श्रीथाई) और घरेलू उद्योग के लिए कोई विधिसम्मत लाभ प्रदान नहीं करेगा।

च. प्राधिकारी से अलग-अलग पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन निर्धारित करने का अनुरोध किया जाता है। चूंकि मै. श्रीथाई प्राधिकारी से पूर्णतः सहयोग करने में विफल रहे हैं, इसलिए भारतीय सीमाशुल्क आयात आकड़ों के आधार पर अलग-अलग पाटन और क्षति मार्जिन तय करने में निर्दिष्ट प्राधिकारी पर कोई प्रतिबंध नहीं है। वस्तुतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने वर्तमान कानून के लागू होने के आरंभ में i(डेड वर्न्ट मेग्नेसाइट,)ii (लो कार्बन फेरो क्रोम,)iii-8 (हाइड्रोक्सीक्लिनोलिनोन, और) iv (सोडियम फेरोसायनाइड्स के मामलों में उपलब्ध सूचना के आधार पर अलग-अलग पाटन और क्षति मार्जिन निर्धारित किया है। 1995-1-1 से पहले, नियम में उत्पादक विशिष्ट पाटन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करना अपेक्षित नहीं था। संगत विधिक प्रावधानों को पाटनरोध संबंधी डब्लूटीओं करार) जो 2005-1-1 को लागू हुआ (के माध्यम से सृजित किया गया। वर्ष 1996 में नए कानून पर विचार करते हुए डी ए ने ऐसी स्थिति में भी अलग-अलग पाटन और क्षति मार्जिन निर्धारित किया जिनमें निर्यातकों ने पूर्णतः सहयोग नहीं किया। ऐसा अलग पाटन और क्षति मार्जिन जॉच के रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना) भारतीय सीमाशुल्क के आकड़े (के आधार पर निर्धारित किया गया।

छ. इस मामले के निर्धारण का एकमात्र मापदंड यह है कि क्या प्राधिकारी के पास ऐसी पर्याप्त सूचना उपलब्ध है जो उस कीमत को दर्शाती है जो तर्कसंगत, उचित और निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए पर्याप्त है। यदि इस प्रकार निर्धारित निर्यात कीमत अयुक्तियुक्त ढंग से अधिक या कम हो, तो इसके बाद प्राधिकारी संबंधित पक्षकार से प्रश्नावली के उत्तर के बिना अलग पाटन और क्षति मार्जिन निर्धारित नहीं करेंगे। परंतु यह कि ऐसी स्थिति जब उपलब्ध सूचना एक ऐसी निर्यात कीमत दर्शाती हो जो तर्कसंगत हो और आयात कीमत को पर्याप्त और सटीक रूप से दर्शाती हो तो डीए सीमाशुल्क आकड़ों सहित प्राधिकारी के पास उपलब्ध अन्य सूचना से भी पाटन और क्षति मार्जिन निर्धारित कर सकते हैं।

- ज.** याचिकाकर्ता ने निर्धारित नियमावली और कानूनों के अनुसार सही ढंग से एनआईपी निर्धारित करने का अनुरोध प्राधिकारी से किया है। याचिकाकर्ता द्वारा बताए गए मशीन घंटों के अनुपात के रूप में अप्रत्यक्ष वेतन और मजदूरी पर विचार किया जाए। प्राधिकारी वास्तविक मशीन घंटे या मानक मशीन घंटे जैसा भी वह उचित समझे पर विचार कर सकते हैं। याचिकाकर्ता द्वारा बताई गई और एक कार्यरत लागत लेखाकार द्वारा उत्पादन लागत को या तो आवंटन/विभाजन की पद्धतियों में बदलाव करके या व्ययों की उपेक्षा करके प्रकटन विवरण में संशोधित किया गया है जो विधि के अंतर्गत स्पष्ट रूप से अनुमत है। नियमों में तर्कसंगत और वैज्ञानिक पद्धति और मशीन घंटों, जलयान पर रहने के घंटे, प्रत्यक्ष श्रम घंटे, उत्पादन मात्रा, विक्री मूल्य आदि जैसे अनेक विकल्पों की सूची पर विचार करने की व्यवस्था है। इस प्रकार, मशीन घंटे न केवल लागत लेखांकन की पाठ्य पुस्तकों वल्कि नियमावली के अनुबंध-III के अंतर्गत स्पष्ट रूप से उपबंधित भी सर्वाधिक वैज्ञानिक पद्धतियां हैं। मेलामाइन वेयर और थर्मो वेयर के उत्पादन में खर्च हुए मशीन घंटों की संख्या में भारी अंतर को देखते हुए, सांझे वेतन और मजदूरी को उत्पादन के अनुपात में विभाजित करना बिल्कुल अनुचित होगा। जॉन अवधि के दौरान 54 मशीनों ने पीयूसी अर्थात मेलामाइन वेयर का उत्पादन किया जिसमें से 233600 मशीन घंटे कंपनी द्वारा) मानक आधार पर (लगाए गए, जबकि 113880 मशीन घंटे थर्मो वेयर का उत्पादन करने के लिए 13 मशीनों पर लगाए गए। स्पष्ट रूप से, ये उत्पादन उनमें लगे उत्पादन प्रयास के अनुसार काफी अलग हैं और इसलिए उत्पादन का अनुपात बिल्कुल अनुचित पद्धति है।
- झ.** याचिकाकर्ता द्वारा मूल्यहास व्यय के लिए दो संशोधन बताए गए हैं।
- i. **सामान्य सुविधाओं का मूल्यहास** - :सामान्य सुविधाओं का मूल्यहास जिसमें मदें जैसे कारखाना भवन को उत्पादन लागत के निर्धारण में शामिल नहीं किया गया है। सांझी परिसम्पत्तियों पर याचिकाकर्ता द्वारा भारी निवेश किया गया है। या निवेश दो उत्पादों के बीच विभाजित किया जाना अपेक्षित है। याचिकाकर्ता ने दोनों संयंत्रों की निवल स्थिर आस्तियों के अनुपात में उसका विभाजन किया है। याचिकाकर्ता ने उस पर विचार करने का अनुरोध किया है।
 - ii. **प्रत्यक्ष मूल्यहास की राशि को घटाया गया** – यह नोट किया जाता है कि यद्यपि याचिकाकर्ता ने प्रत्यक्ष मूल्यहास राशि को 181.29 है बताया रूपये लाख, तथापि एनआईपी इस पर आधारित नहीं है। हमें सूचित किया गया है कि यद्यपि याचिकाकर्ता ने मशीनें 54 तक मशीनों 40 केवल को राशि की हासमूल्य इसलिए है किया उपयोग का मशीनों 40 केवल ने याचिकाकर्ता चूंकि और हैं लगाई ह गया रखा सीमित है। याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि ऐसा समायोजन पूर्णत अवधि इस कि है नहीं मामला ऐसा है। अनुचित : लिल्कु मशीनें 40 दौरान केनिक्रिय पड़ी रही। यह किसी आधार के बिना एक स्पष्ट मान्यता है। वास्तव में, याचिकाकर्ता सभी मशीनों का उपयोग करता रहा है। केवल इसलिए कि याचिकाकर्ता ने किसी समय या किसी अन्य समय कुछ मशीनों या अन्य कुछ मशीनों का प्रयोग नहीं किया है, इससे मूल्यहास की राशि न्यूयोर्चित नहीं हो जाती है। वस्तुत मिलांते लेखांकन कृतस्वी :तसामान्य : प हासमूल्य पर आस्तियों प्रयुक्त लिए के कंपनी में रभारित करना अपेक्षित है और इसका यह अर्थ नहीं है कि आस्तियों का एक वर्ष में किक्यों में प्रक्रिया दिनउत्पा जैसी वर्तमान :तवस्तु था। चाहिए जाना किया प्रयोग पर आधार टोंग 24 लिए के दिनों 365 पेट्रोरसायन संयंत्र या वाली भट्टी किसी वाली चलने घंटे 24 किसी कंपनी का इस प्रकार से उत्पादन की निरंतरता बनाए रखना संभव नहीं होगा। सबसे ऊपर, यह उत्पादन सुविधाओं का अकुशल प्रयोग नहीं है।
- ऋ.** मरम्मत और रख है गई की संशोधित भी राशि गई बताई द्वारा याचिकाकर्ता लिए के रखाव-, जो संभवत संयंत्र मेलामाइन में मूल्यहास के कारण व्यय के संशोधन के लिए अपनाए गए कारणों से समान कारणों की वजह से है। याचिकाकर्ता प्राधिकारी से मूल्यहास के लिए बताए गए समान कारणों के लिए याचिकाकर्ता द्वारा सूचित व्यय पर विचार करने का अनुरोध करता है।
- ट.** याचिकाकर्ता द्वारा सूचित निवल स्थिर आस्तियों को मूल्यहास के लिए अपनाए गए समान कारणों के लिए कम किया गया है। अतः कारस्वी को आकड़ों सूचित द्वारा याचिकाकर्ता से वजह की कारणों समान के उल्लिखित ऊपर में संबंध के हासमूल्य याचिकाकर्ता है। करता अनुरोध का करने

ठ. प्राधिकारी ने उत्पाद से संबंधित विज्ञापन के लिए याचिकाकर्ता द्वारा किए गए व्यय पर ध्यान नहीं दिया है। यह समझ नहीं आता कि मूल्यहास पर हुए व्यय को क्यों बाहर रखा जाना चाहिए। वास्तव में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्व में विज्ञापनों पर हुए व्यय की अनुमति दी है। कृपया नीचे सूचीबद्ध व्याख्यात्मक मामलों का संदर्भ लें जिनमें विज्ञापनों के लिए व्यय की अनुमति दी गई थी। अनुबंध अनुरोध यह याचिकाकर्ता में मामले ऐसे चाहिए। जाना रखा अलग को खर्च के विज्ञापन कि है नहीं भी उल्लेख यह में।।।- खर्च हुए पर विज्ञापन कि है करताकी एनआईपी के निर्धारण में अनुमति दी जानी चाहिए।

क. एमडीएफ निर्णायक समीक्षा का मामला

ख. डाइक्लोफेनाक सोडियम

ग. मेजरिंग टेप्स

घ. विटामिनई-

ङ. कार्बन ब्लेक

च. सीएफएल

ड. इस प्रकार यह देखा जाता है कि एनआईपी को उक्त कारणों के लिए काफी घटा दिया गया है अतः याजिकाकर्ता निर्दिष्ट प्राधिकारी से उक्त अनुरोधों पर विचार करने और अंतिम जाँच परिणाम के लिए एनआईपी निर्धारित करने का अनुरोध करता है।

ढ. उक्त अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग अनुरोध करता है कि

क. संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का भारी पाठन हुआ है।

ख. घरेलू उद्योग को कीमत न्यूनीकरण को झेल रहा है।

ग. कीमत हास से ऐसी स्थिति आ गई जब घरेलू उद्योग को लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में उसके निष्पादन में भारी गिरावट आई है।

घ. भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है परिणामस्वरूप संबद्ध देशों से निरंतर पाठन हुआ है।

ङ. जाँच अवधि में पाठन मार्जिन और क्षति मार्जिन दोनों अधिक रहें हैं और संबद्ध देशों के लिए धनात्मक रहे हैं।

ण. अंतः याचिकाकर्ता निर्दिष्ट प्राधिकारी से वर्तमान मामले में शुल्क की स्थिर राशि की सिफारिश करने का अनुरोध करता है।

अ.3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

117. उक्त पैराग्राफों में निर्यातिक द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों और घरेलू उद्योग द्वारा उनके खंडन को बताया गया है परंतु स्पष्टता के लिए उनका पुनः समाधान किया जा रहा है:

क. निर्यातिक ने दलील दी है कि संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन विभिन्न ग्रेडों और विभिन्न कीमतों पर किया जाता है। उनके द्वारा आपूर्ति की गई वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और आपूर्ति की गई वस्तु से बेहतर गुणवत्ता की है और यह कि वे एक अलग वितरण और विपणन सूत्र को अपनाते हैं। तथापि, निर्यातिक ने यह नहीं बताया है कि घरेलू और आयातित उत्पादन किस प्रकार अलग हैं और कथित भिन्नता का प्रभाव क्या है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि गुणवत्ता में भेद तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक अंतर को मात्रा में बताया जाए और उनका प्रभाव स्पष्ट किया जाए। रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी मानते हैं कि संबद्ध देशों से निर्यातिक और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद के बीच कोई वास्तविक अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद और आयातित संबद्ध उत्पाद भौतिक और रासायनिक विशेषताएं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रोद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिदेशों, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण के अनुरूप तुलनीय हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। इसलिए प्राधिकारी पाठनरोधी नियमावली के अंतर्गत आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित विचाराधीन उत्पाद को संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन संबद्ध उत्पाद के समान वस्तु मानने का प्रस्ताव करते हैं।

- ख. याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु का प्रमुख उत्पादक है। वह भारतीय उत्पादन के 52 प्रतिशत का उत्पादन करता है। संगठित क्षेत्र में केवल एक और कंपनी मैं, सर्ववैल इंडिया है जो संबद्ध वस्तु का उत्पादन करती है। इसके अलावा, भारत में संबद्ध वस्तु के अन्य छोटे विनिर्माता हैं। मैं, सर्ववैल इंडिया ने वर्तमान जाँच में उत्तर नहीं दिया है और न तो उन्होंने वर्तमान जाँच का समर्थन किया है न ही विरोध किया है और पाटनरोधी शुल्क का प्रस्ताव किया है। प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि याचिकाकर्ता नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है। याचिका पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) के अनुसार योग्यता संबंधी मापदंडों को पूरा करती है।
- ग. निर्यातक को पूरी सूचना प्रस्तुत करने के लिए अनेक अवसर और पर्यास समय दिया गया। सूचना प्रस्तुत की गई परंतु वह जनवरी-दिसम्बर 2013 के लिए दी गई है। प्राधिकारी ने अप्रैल 2013-मार्च 2014 के लिए सूचना मांगी थी जो अधिसूचित जाँच अवधि थी। अधूरी सूचना को देखते हुए सूचना का विश्लेषण करना संभव नहीं है और निर्यातक को प्राधिकारी की संगत प्रक्रिया के अनुसार अलग पाटन मार्जिन नहीं दिया जा सकता है।
- घ. घरेलू उद्योग प्राधिकारी से भारतीय सीमाशुल्क के अनुसार उपलब्ध आकड़ों का विश्लेषण करने और मैं, श्रीथाई को अलग मार्जिन प्रदान करने का अनुरोध कर रहा है यद्यपि उन्होंने सूचना प्रस्तुत करने के लिए अतिरिक्त समय और अवसर दिए जाने के बावजूद पूरे आकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं। उनके संबंधित आयातक ने भी सुनवाई के बाद उत्तर प्रस्तुत किए हैं जिन पर घरेलू उद्योग ने आपत्ति जताई है। उन्होंने 1995 का एक मामला उद्धरित किया है और यह भी उल्लेख किया कि वह वर्तमान संशोधनों से पहले प्रचलित था। यह नोट किया जाता है कि उपलब्ध आकड़ों के विस्तार से पठन से पता चलता है कि थाइलैंड के आयात आकड़ों को निर्यातक वार पृथक नहीं किया जा सकता है और थाइलैंड के प्रत्येक निर्यातक के लिए निर्यात कीमत का अलग-अलग व्यौरा नहीं दिया जा सकता है। अंतः प्राधिकारी ने थाइलैंड से आयात के आकड़ों को समग्र रूप से लिया है और थाइलैंड से सभी निर्यातकों के लिए एक पाटन और क्षति मार्जिन तय करने का निर्णय लिया है। यह अनेक वर्षों से प्राधिकारी की संगत प्रक्रिया के अनुसार है।
- इ. क्षति रहित कीमत के निर्धारण के मुद्दे अर्थात् क) कॉमन स्टाफ के वेतन एवं मजदूरी के प्रतिपादन ख) मूल्यहास, मरम्मत एवं रख-रखाव तथा नियोजित पूंजी पर आय की राशि में कमी, तथा ग) विज्ञापन संबंधी व्यय के तरीकों आदि की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई थी। ये सभी मुद्दे एनआईपी के निर्धारण के समय संभाले गए थे। एनआईपी कार्यकरण की समीक्षा के उपरांत यह पाया गया कि इस शीर्ष के तहत व्यय को जोड़ते समय वेतन एवं मजदूरी की मदों में से एक मद छूट गई थी। इसलिए एनआईपी को उस सीमा तक संशोधित किया गया है। तदनुसार चूंकि घरेलू उद्योग की विक्री की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य भी संरचित किया गया है इसलिए संरचित सामान्य मूल्य उस सीमा तक संशोधित हो गया है।

निष्कर्ष

118. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि:

- क. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है,
- ख. घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु के संबंध में वास्तविक क्षति हुई है।
- ग. यह वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों द्वारा की गई है।
- घ. यह क्षति संबद्ध देशों से आयातों द्वारा संचयी रूप से की गई है।

भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

119. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों को लगाने से उत्पाद के मूल्य स्तरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। तथापि पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में स्वच्छ प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा अनुचित लाभ प्राप्त करना दूर किया जायेगा, घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट को रोका जा सकेगा और संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं को अपेक्षाकृत अधिक पसंद की उपलब्धता को बनाये रखने में मदद मिलेगी। उपभोक्ता अब भी आपूर्ति के दो या उससे अधिक घोत बनाए रख सकते हैं।

120. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की गलत व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई हानि को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में स्वतंत्र और स्वच्छ प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित किया जा सके जो देश के सामान्य

हित में है। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से किसी भी प्रकार से संबद्ध देशों से आयात में रुकावट नहीं आयेगी और इसलिए यह उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेगा।

सिफारिशें

121. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरूआत की गई और उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान की गई थी और पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सूचना प्रदान करते के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं उनके कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और संपन्न करने के बाद और सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के उपरांत प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी नीचे दिए गए ढंग और तरीके से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।

122. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, इनमें से जो भी कम हो, के वरावर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, संबद्ध देशों/क्षेत्रों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका में कालम सं. 9 में उल्लिखित राशि के के वरावर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. स.	टैरिफ मद	वस्तुओं का वर्णन	विनिर्देशन	मूलता का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि (यू.एस डालर)	माप की इकाई
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	कोई	कोई	1284.16	किग्रा.
2	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	1284.16	किग्रा.
3.	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	चीन जन. गण.	कोई	कोई	कोई	1284.16	किग्रा.
4	39241010 39241090 39249090	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	थाइलैंड	थाइलैंड	कोई	कोई	582.85	किग्रा.

	39264049 39269099							
5	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	कोई	थाइलैंड	कोई	कोई	582.85 किग्रा.
6	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	थाइलैंड	कोई	कोई	कोई	582.85 किग्रा.
7	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	वियतनाम	वियतनाम	कोई	कोई	1732.11 किग्रा.
8	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	कोई	वियतनाम	कोई	कोई	1732.11 किग्रा.
9	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	मेलामाइन टेबलवेयर और किचनवेयर उत्पाद	कोई विनिर्देशन	वियतनाम	कोई	कोई	कोई	1732.11 किग्रा.

123. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी शुल्क शामिल होंगे।

124. केन्द्र सरकार द्वारा इस जांच परिणाम पर आधारित आदेश के विरुद्ध खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th October, 2015

(Final Findings)

Subject: Anti-dumping investigation concerning imports of Melamine Tableware and Kitchenware products from China PR, Thailand and Vietnam.

BACKGROUND

- F. No.14/10/2014-DGAD:-{(1)}** Whereas, M/s Hamilton Housewares Pvt. Limited (herein referred as "petitioner" or "Applicant") filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) in accordance with the Act and the Rules for initiation of anti-dumping investigations concerning imports of Melamine Tableware and Kitchenware products (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from China PR, Thailand and Vietnam (herein referred as subject countries) and requested for imposition of anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the said countries.
2. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant, issued a Notification No.14/10/2014-DGAD dated 28th October, 2014, published in the Gazette of India, initiating the subject investigations in accordance with the Rule 5 of the above Rule to determine the existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from the said countries, and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic industry.

A. PROCEDURE

3. The procedure described herein below has been followed by the Authority with regard to the subject investigation:
- The Designated Authority, under the above Rules, received a written application from the Applicant on behalf of the domestic industries, alleging dumping of Melamine Tableware and Kitchenware products originating in or exported from China PR, Thailand and Vietnam.
 - Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the Applicant. The application was, therefore, considered as properly documented.
 - The Authority notified the Embassies/Representatives of the subject countries in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.
 - The Authority issued a public notice dated 28th October, 2014 published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods.
 - The Authority sent a copy of the initiation notification to the Embassies of China PR, Thailand and Vietnam in India, known producers/exporters from China PR, known importers/users and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - The Authority sent exporter's questionnaires to elicit relevant information to the following known producers/exporters in China PR, Thailand and Vietnam (whose details were made available by the applicant) and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
 - M/s Fujian Nan'an Shi Hengsheng, China
 - M/s Mecame Tableware Co., Ltd., China
 - M/s Zicco Melamine Product Co. Ltd., China
 - M/s Union Source Co., Ltd., China
 - M/s Foshan Shunde Melodic Kitchen Products Co., Ltd., China
 - M/s Jieyang Xiong Ying, China
 - M/s Guangzhou Nantian Sources Co. Ltd., China
 - M/s Hansa International Co. Ltd., China

- 9. M/s Dongguang ShunTa Melamine Products Co., Ltd., China
 - 10. M/s Huong Dang Artistic Handicrafts & Lacquewares Company Ltd.
 - 11. M/s Hanoi Trade Corporation, Vietnam
 - 12. M/s Vinh Co Ltd., Vietnam
 - 13. M/s Huong Dang Artistic Handicrafts & Lacquerwares Company Ltd., Vietnam
 - 14. M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam
 - 15. M/s Melamine Thai, Thailand
 - 16. M/s Srithai Superware Public Co. Ltd., Thailand
 - 17. M/s Somboonchoke Kitchenware Co. Ltd., Thailand
 - 18. M/s Bangkok Melamine Marketing and Holding Co. Ltd., Thailand
- vii. None of the exporter from China PR has filed questionnaire response. Following exporters from Vietnam and Thailand have filed response to the questionnaire:
- 1. M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam
 - 2. M/s Srithai Superware Public Co. Ltd., Thailand
- viii. The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
- 1. M/s Agarwal Chemical
 - 2. M/s. ATS India Pvt. Ltd.
 - 3. M/s AVM Sales Corporation
 - 4. M/s Bardiya Recon Export Pvt. Ltd.
 - 5. M/s. UCB India Pvt. Ltd.
 - 6. M/s Valeo Friction Materials India Ltd
 - 7. M/s Viva Overseas
 - 8. M/s Zuari Industries Ltd.
 - 9. M/s Pashupati Industries
 - 10. M/s Deepak Industries
 - 11. M/s Singh Traders & Fabricators
 - 12. M/s V.K. Enterprises
 - 13. M/s Melomax India
 - 14. M/s D & R Enterprises
 - 15. M/s Sg Plast India
 - 16. M/s Sr Enterprises
 - 17. M/s Axis Enterprises
 - 18. M/s Udae Plastic & Chemicals
 - 19. M/s Shri Parshav Silver Ware
 - 20. M/s Garden Glory
 - 21. M/s Goldstar Glasswares Pvt. Ltd.
 - 22. M/s Aadi Industries
 - 23. M/s Siddarth Enterprises
 - 24. M/s Chadha Exports
 - 25. M/s Royal De Wajidsons
 - 26. M/s Desmo Exports Ltd.
 - 27. M/s Shree Paras Marketing
 - 28. M/s Harish Crockery House
 - 29. M/s KD Exports
 - 30. M/s Udae Plastic & Chemicals
 - 31. M/s Pavithra Impex
 - 32. M/s Decent Plastic
 - 33. M/s Aar Kay Enterprises
 - 34. M/s Ab 1986
 - 35. M/s Interasia India Pvt. Ltd.
 - 36. M/s Shree Nath Packers
 - 37. M/s U.P. Ceramics & Potteries Ltd
 - 38. M/s Kumbhkaari
 - 39. M/s Funkrafts
 - 40. M/s Reliable India
 - 41. M/s Home Shine
- ix. The following importers/users of the subject goods in India have filed the Importer questionnaire response:

1. M/s K.P. International
 2. M/s Srithai Superware India Limited
- x. Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties. Submissions made by all interested parties have been taken into account in this Final Finding Notification.
 - xi. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis and the same were kept in the public file maintained by the Authority as per the Rules.
 - xii. Further information was sought from the applicant and other interested parties to the extent deemed necessary. Verification of the data provided by the domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of the investigation. The data given by exporters was examined in detail.
 - xiii. Non-injurious price has been determined based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
 - xiv. Investigation was carried out for the period starting from April, 2013 – March, 2014 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from April 2010-March 2011, April 2011 - March 2012, April 2012 - March 2013 and the Period of Investigation (POI).
 - xv. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the POI. The authority has relied upon import data procured from DGCI&S in the present investigation. The examination of data received from DGCIS revealed that imports from Vietnam and China PR are in numbers and on net weight basis, therefore the data on weight basis has been taken as it is for analysis. Whereas, import data of DGCIS for Thailand is on gross weight basis. The partial data submitted by exporter from Thailand has data on gross as well as net weight basis, and it indicates an approximate difference of 10%. Accordingly, the DGCIS data has adjusted.
 - xvi. The Authority held an oral hearing on 2nd September, 2015 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6 (6), which was attended by the representatives of domestic industry, exporters from Vietnam and Thailand and one importer. The interested parties who presented their views orally at the time of oral hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally. The interested parties were provided opportunity to offer rejoinder submissions to the views expressed by opposing interested parties. The Authority has considered submissions received from the interested parties appropriately.
 - xvii. The submissions made by the interested parties, arguments raised and information provided by various interested parties during the course of the investigation and subsequent to the disclosure statement, to the extent the same are supported with evidence and considered relevant to the present investigation, have been appropriately considered by the Authority in this disclosure document.
 - xviii. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority considered such interested parties as non-cooperative and recorded these findings on the basis of the ‘facts available’.
 - xix. ***in this finding represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
 - xx. The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is 1US\$=Rs. 60.85.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

B.1. Views of the opposing interested parties

4. Views of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam & M/s K.P. International have been summarised and are as below:

- i. The exporter from Vietnam M/s Machi Enterprise Co. Ltd. has stated that there is difference between the product produced by the DI and the exporter as the manufacturing process adopted by the petitioner is different from that adopted by exporter. Exporter put more time in compression of the melamine molding compound which takes more time than normal process used.
- ii. The products manufactured by the exporter are of much better quality than the subject good produced by the domestic industry.
- iii. The petitioner in its petition has failed to point out the fact that there are several qualities of the material/subject goods manufactured. The material manufactured by exporter is of a higher quality and the same can be determined by simply looking at the goods manufactured by M/s Machi and those manufactured by DI.
- iv. It is stated that even though the compound used to manufacture the PUC is the same but the quality and durability of the same varies depending upon the production process. The difference in products manufactured from different process and the products manufactured by the petitioner and the exporter herein are distinguishable.
- v. Due to the above factor difference in the price of the subject goods sold by the DI in the market and those sold by the exporter is much higher and the said fact has again not been mentioned by the petitioner. The said data is available in the Indian market and can be verified very easily. The exporter has verified the price of the goods sold by Hamilton and the goods sold manufactured by M/s Machi and there is a contrasting price difference as the goods sold by M/s Machi are sold at higher price than the petitioner.
- vi. M/s Machi Enterprise Co., Ltd. also produces the urea based products though it is not for exports and is sold only in their domestic market.
- vii. Urea based products are different from the product under consideration as the Urea products are made from urea and are coated with glazing powder which gives them a look similar to melamine product. In business practise the said urea products with glazing are referred to as melamine coated. The compositions of the same are completely different from the product under consideration.
- viii. The importer, M/s K.P. International has stated that it deals in all type of products inclusive of melamine and urea based products.
- ix. M/s Machi Enterprise Co., Ltd has stated that the importer uses the brand name "HomeWare" of which the company sells products made from urea, steel flask and non-stick cookware. The said brand name is not used for product under consideration. For the sale of the product under consideration, M/s Machi Enterprise uses the manufacturer's name only i.e. Machi for the products exported from Vietnam.
- x. The petitioner has filed the present petition in an attempt to seek trade and manufacturing secrets of the other manufacturers who produce better quality products than the petitioner/ domestic industry. Domestic Industry sells the PUC at the cheapest rate and the most inferior quality products in market.

5. Views of M/s Srithai Superware Public Co. Ltd., Thailand have been summarized and are as below:

- i. M/s Srithai Superware Public Co. Ltd., Thailand has not offered any comment regarding the product under consideration.
- ii. M/S Srithai Superware India Ltd. is the fully owned Indian subsidiary company of M/s Srithai Superware Public Company Limited, Thailand. It has stated that they are an importer of the product under consideration and after the products are imported by them, they further act as Trading Company to sell these products in Indian Market through their own authorized distributors' network in various states in India. They are importing the products under the Brand name "Ektra" which is exclusively made for them by Thailand Company. The above said brand name is used for the product to sell under the "Made in Thailand" by Superware, imported and marketing by them.

- iii. M/S Srithai Superware India Ltd., has stated that it works only as a trader and does not manufacture the subject goods in India, but they do have plan to set up manufacturing in near future.
- iv. M/S Srithai Superware India Ltd. deals with a variety of products including the product under consideration, i.e. melamine tableware and kitchenware, and plastic made products like lunch box, storage and lid of various melamine products. Their product range is entirely different and of much superior quality which is made from 100% melamine molding compound in their own designs. The Company deals in a variety of products including but not limited to Melamine products.

B.2. Views of the Domestic industry

- 6. The views of the domestic industry are as follows:
 - i. The product under consideration is Melamine Tableware and Kitchenware products (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR, Vietnam and Thailand.
 - ii. Subject goods are classified under Chapter 39 of Customs Tariff Act, 1975 under the subheading 392410. The customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the proposed investigations. Study of the import data shows that subject goods have been imported into India under the various Customs sub-headings such as 39092090, 39262039, 39249010, 39211900, 39264029, 39249090, 39229000, 39264039, 39261019, 39231090, 39264049, 39261099, 39233090, 39264099, 39262099, 39239090, 39269010, 39264019, 39241010, 39269099, 39264029, 39241090, 39092090, 39264039, 39249010, 39094090, 39264049, 39249090, 39231090, 39264099, 39261019, 39241010, 39269059, 39261099, 39241090, 39269099, 39262029.
 - iii. The subject goods produced by the domestic industry are identical to the product under consideration being imported into India. The domestic industry claims that there is no known difference in applicant's product and product under consideration exported from the subject countries and the two are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. There is no significant difference in the subject goods produced by the applicant and those exported from the subject countries and both are technically and commercially substitutable.
 - iv. Urea based products are not the part of subject goods and can be clearly excluded from the present investigation.
 - v. The claim of exporter regarding their quality being far superior is strongly refuted. There is no difference in the technology employed. Differences between the manufacturing processes, time taken in the same and product produced by the DI and the exporter is denied. There is no truth in the claims of quality issues. The petitioner is producing and selling to several consumers in India and internationally.
 - vi. Relying on the statement made by the exporter, the cost of the product should be high enough. Whereas the cost of the product exported, found as per import data is low enough to prove dumping. The argument of the exporter implies higher dumping margin.

B.3. Examination by the Authority

- 7. The Product under Consideration (PUC) in the present investigation is "Melamine Tableware and Kitchenware products" manufactured from Melamine Molding Compound (hereinafter referred as subject goods). The melamine molding compound is a composition of Formaldehyde – Melamine Resin (70%), Cellulose (30%), Titanium Dioxide and Zink Stearate.
- 8. The product under consideration is not produced in various grades having significant difference in the associated cost. Various types of the product, such as spoons, bowls, plates, etc. are produced from Melamine Molding Compound. Production of different types merely implies forming Melamine Molding Compound into desired shape. Therefore, it is considered appropriate to classify all these items under a broad heading of "Melamine Tableware and Kitchenware products". There has been a similar kind of case for the product called "Opal Glassware of all types". It has been stated by the petitioner that the product is transacted in numbers at the consumer end level and is reported in different units such as pieces, sets, dozens, but at import end as well as factory to dealer end the transactions are mainly done in weight terms. Further, it has been seen that more than

75% of the cost of the product is on account of raw material and utilities. The cost of the raw material and utilities is in direct proportion to the weight of the product. It is because of this reason that even when the product varies significantly in terms of associated costs when expressed in unit of measurement other than weight, the cost of production is quite linear with weight of the product. The Authority has, therefore, decided that it would be appropriate to express PUC in terms of weights. The DGCIS data is available in weight and numbers and all the analysis has been done on the basis of weight

9. They are used for the purpose of eating, drinking and serving food and beverages Melamine products exhibit following properties:
 - a. Hard, durable surface with superior luster
 - b. Unlimited color possibilities with stability
 - c. Excellent hot water durability.
 - d. Repeated boiling does not affect appearance
 - e. Excellent resistance to scratching and dry heat
 - f. Excellent resistance to acid, alkaline, detergent and organic solvent
 - g. Excellent electrical properties
10. The product under consideration is Melamine based and not urea based. Though the exporters have agreed that they have not exported urea based products in India, the Authority finds that the importer has sold both the melamine and the urea based products.
11. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules provides as under:-

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

12. The responding exporter has contended that the goods produced and supplied by his are of superior quality as compared to the goods produced and supplied by the domestic industry. The exporter has however not provided detailed manufacturing process and time taken, nor quantified how the domestic and imported products are different and what is the impact of the alleged difference. The authority noted the contention of the domestic industry at the time of hearing that in case the process takes more time, then the same should also result in higher cost of production and resultantly higher prices. The authority notes that a difference in quality cannot be recognized, unless the differences are quantified and their impact demonstrated. The authority also notes the decision of the CESTAT in the matter of "*DSM Idemitsu Limited v. Designated Authority*", reported in 2000 (119) E.L.T. 308, where the Tribunal held as follows

"As the plea of the appellants counsel is not convincing since he did not adduce any evidence/technical literature with reference to process of manufacture to show that product manufactured by the domestic manufacturers was different from that exported into India. Difference in quality will not make an article as different and Designated Authority was right in observing that the fact that qualities may be different, does not imply that the imported product and the domestic are not like articles."

13. Subject goods do not have a dedicated classification and is classified under Chapter 39 of Customs Tariff Act, 1975. It is imported under various HS codes namely 39241010, 39241090, 39249090, 39264049, 39269099 etc. The authority has considered the HS codes as indicative only and has considered the product description for the purpose of present determination.
14. After considering the information on record, the Authority holds that there is no material difference in product under consideration exported from subject countries and the product produced by the Indian Industry. Product under consideration produced by the domestic industry is comparable to the imported subject product in terms of physical & chemical characteristics, production technology & manufacturing process, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable.
15. Thus, the Authority holds that product under consideration produced by the applicant domestic industry is like article to the subject product under consideration imported from subject countries in accordance with the AD Rules.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

C.1. Views of the opposing interested parties

16. Views of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam are as follows:

- a. The statement made by the petitioner that it has not imported the PUC, is false and incorrect. The petitioner has imported the PUC from "Fujian Nan'an Shi Hengsheng, Melamine Tableware Co. Ltd., situated at Fumaoling Industrial Area, Narran, Quanzhou, Fujian- 362300, China.
- b. The petitioner had even approached the exporter M/s Machi Enterprises, Vietnam in the year 2011-12 and proposed to buy the product under consideration manufactured by them. However, due to some reasons, the said transaction could not materialize.
- c. Had the petitioner approached the authority with clean hands and complete information, the said fact would have been stated in the petition by the petitioner but the petitioner has concealed the same.
- d. The explanation given by the petitioner was completely baseless and concocted. The intention of the petitioner was to obtain the data of the exporter in order capture the market of the exporter as well as to get to know the manufacturing procedure of the exporter and other companies who manufacture products of a far superior quality than that of the petitioner.
- e. The exporter has given the details of the company where the petitioner has had business transactions. The exporter is not aware of the period of such transactions but the petitioner is aware that the transactions have taken place.

17. No other interested party has not submitted any specific comments in this regard

C.2. Views of the Domestic Industry

18. The views of the domestic industry are as follows:

- a. The petition has been filed by M/s Hamilton Housewares Pvt. Ltd (referred to as Petitioner/Applicant) for imposition of anti dumping duty on imports of Melamine Tableware and Kitchenware products (subject goods) from China PR, Vietnam and Thailand.
- b. Petitioner is a major producer of the subject goods in India holding 52% of the production share of India. There is only one more company in the organized sector, M/s Servewell India which produces the subject goods. Further, there are other small producers of the subject goods in India in the unorganized sector having 14% share altogether. There is no specific publicly available information about production of these small producers.
- c. Production of the subject goods by the petitioner, M/s Hamilton Housewares Pvt. Ltd., constitutes a major share in domestic production in proposed investigation period.
- d. During the oral hearing, the exporter, M/s Machi mentioned that M/s Servewell India has imported the subject goods from the exporter. The Authority may investigate the same. If such is the scenario, the standing of the DI will improve.
- e. Petitioner has not imported the subject goods. Petitioner is not related (either directly or indirectly) to any exporter or importer of product under consideration in the subject countries. Thus the petitioner is eligible domestic industry under Rules 2(b) and 5(3) of the AD Rules.
- f. The Domestic Industry clarified that discussions with the exporters for possible purchase did not go beyond discussions and these discussions did not imply that the company in fact intended to import the product. Domestic Industry clarified that such interactions were held for entirely different purposes and to ascertain the real price at which the goods were being sold by the exporters. They further clarified that prior to filing of the present petition and faced with low priced imports, the Petitioner made its own enquiries with regard to market situations and made attempts to ascertain the price at which the goods were being offered by the exporters. Petitioner further contended that mere exchange of business cards does not imply that the company has imported the product. Petitioner submitted that there was in fact no import made by them and this fact gets established by the own statement of exporters wherein they themselves have stated that the company has not imported the product under consideration. Possible efforts made to import the product under consideration are

different from import of the product. In any case, the exporter has referred to a period which is not the investigation period of the present case. The authority considers the issue of relationship and can hold a company ineligible only if the imports are in the investigation period. The CESTAT has also held that the imports in POI alone are relevant for the purpose. In view of the same, the authority holds that the petitioner is an eligible domestic industry for the present purposes.

- g. The DI never made any imports during the injury period. The meeting in some trade fair and exchanging business cards or inquiry regarding the sales does not actually mean that the DI imported the subject goods.
- h. In fact, if there were such imports made by the DI, the exporter could have provided some evidence. Why the exporter has not given evidence to the DA while contending the same? And, if there were no imports made, how all other stories are relevant to the present investigations?
- i. Even if the petitioner had approached the exporter in the year 2011-12 these negotiations are not relevant as the Petitioner has not imported the subject goods. Petitioner reiterates that it is not related (either directly or indirectly) to any exporter or importer of PUC in the subject countries.
- j. Rule 2(b) grants discretion to the Designated Authority in such situation. The fact that the rules grant discretion to the Designated Authority is well established by the Hon'ble High Court.

C.3. Examination of the Authority

19. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

- 20. The application in the present case has been filed by M/s Hamilton Housewares Pvt. Ltd., a domestic producer of the product under consideration and who has provided detailed information for investigation in the matter of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from China PR, Vietnam and Thailand.
- 21. Petitioner is a major producer of the subject goods in India. There is only one more company in the organized sector, M/s Servewell India, which produces the subject goods. Further, there are other small producers of the subject goods in India. Petitioner contended that M/s Servewell India has imported the product under consideration from amongst responding exporters and therefore the company should be treated as ineligible domestic industry. The questionnaire responses filed by the two responding exporters were examined and it is found that there were no exports reported by them wherein the goods were imported by M/s Servewell India. M/s Servewell India has not responded to the present investigations and has neither supported nor opposed the present investigations and proposed imposition of ADD.
- 22. The claim of exporters with regard to imports by the petitioner was examined in detail. The Petitioner has certified at the stage of petition that it has not imported the product under consideration from amongst subject countries. The examination of data has also indicated that petitioner has not made any imports.
- 23. As per information on record, production of the Petitioner constitutes a major proportion in Indian production. Authority concludes that the applicant satisfied standing requirements under the rules and the petitioner constitute domestic industry within the meaning of the Rule 2 (b). The petitioner satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 (3) of the Anti-dumping Rules.

D. Issues relating to Excess Confidentiality

D.1. Views of the opposing interested parties

24. Views of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam are as follows:

- i. The data has been filed by the exporter in terms of the questionnaire format. All the appendices and enclosures with complete data have been filed with the authority. There is no excessive confidentiality claimed but the information that is confidential in nature has been claimed to be confidential.

- ii. The detail of the manufacturing process along with other data has been duly provided. The patents as stated are confidential information and have been thus claimed confidential.
- iii. The product under consideration is not sold in the domestic market of the exporter as the same does not have much demand in Vietnam and hence no such data is either available or can be provided.
- iv. The price lists pertain to products made from Urea and those are the only products which are sold in Vietnam. The other enclosure and annexure contain confidential information and have only been filed for the benefit of the authority and proper determination of facts in the present investigation proceedings.
- v. The petitioner has concealed various material facts which are detrimental to the present matter. The petitioner had approached the exporter for the supply of material. The said transaction could not materialize but the intention of the petitioner was well clear since the petitioner wants to get the data of the exporter with respect to the production process of the PUC as well as the various markets where the exporter supplies/exports its product.
- vi. The product of the exporter is of a better quality than that of the petitioner and due to the said fact, the exporter has a wider/larger market to cater to and the petitioner is trying to get a share in the said international market of the exporter by getting the confidential data revealed
- vii. The cases cited by the petitioner it is stated that where the information involves technical processes and personal data of a party, the same has to be treated as confidential. In the present case the patents as well as the manufacturing process is technical and has to be treated as confidential.
- viii. The client list of the exporter and the data pertaining to the same is also confidential information as the exporter could suffer losses if the same is revealed to a third party especially when the said party is also a competitor of the exporter.

25. No other interested party has not submitted any specific comments in this regard

D.2. Views of the Domestic industry

26. The views of the domestic industry are as follows:

- i. The responses were submitted by two exporters; M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co. Ltd. and M/s Srithai Superware Public Company Limited from Thailand and one importer M/s K. P. International. Further the responses filed by the exporters are partial, incomplete as well as inadequate. After eight months since the initiation of the investigation the importer questionnaire was filed by M/s Srithai India, the related party of the M/s Srithai Superware Public Company Limited, Thailand.
- ii. Non-confidential version of the questionnaire response is grossly inadequate. The interested parties have not disclosed all such information that they are obliged to disclose under the Rules and practice being followed by the Designated Authority in this regard. Such excessive confidentiality will hamper the the domestic industry to defend their interest. The exporters have claimed most of the information as confidential and no proper summarization is provided by them.
- iii. Some of illustrative examples of information claimed confidential by the M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co. Ltd. are as under:
 - a. Not provided detailed manufacturing process neither the time taken in same has been mentioned.
 - b. No data annexed by the exporters in the exporter's questionnaire response to cross verify the figures.
 - c. The information to be furnished under Appendices 1-9 are not annexed when 'strict adherence' to the proforma has been specifically sought.
 - d. Enclosure A to I have not been enclosed with the exporter questionnaire.
- iv. The responding exporter from Thailand, Srithai Superware Public Company Limited has also resorted to excessive confidentiality in the questionnaire response filed by them. Some of illustrative examples of information claimed confidential by them are as under:
 - a) The information to be furnished under Appendices 1-9 are not annexed when 'strict adherence' to the proforma has been specifically sought.
 - b) Catalogue of Srithai Superware and Shrithai Superware India are not enclosed.

- c) Complete set of documents generated/received in case of sales in the home market and exports to India
 - d) Price lists for sales in the home market and exports to India
 - e) Information and evidence of differences in terms of physical/ technical/chemical characteristics between the goods sold or produced in their domestic market or sold to countries other than India from those exported to India and their effect on production costs.
 - f) Audited accounts including balance sheet, profit and loss accounts
 - g) Production flow chart with production cycle time at each stage
- v. Not only Rules with regards to confidentiality are well clear, but also these have been extensively interpreted by the WTO and Indian Courts. Further the domestic industry has the right to get access to the information filed by the interested parties and defend its interests.
- vi. The exporter has not given detailed manufacturing process; neither the time taken has been mentioned in the same. Secondly if the process consumes more time then it will cost more. How the product consuming more time can be of lower price. This issue has not been addressed by the exporter.
- vii. The exporter has mentioned in the oral hearing that there are four linked importers of the subject goods in India inclusive of M/s Sarvewell India. Only importer which has filed the response is M/s K.P. International. Rest of the importers has not responded to the questionnaire response. Thus the response filed by the exporter should be considered incomplete.
- viii. The response filed by the exporter does not contain relevant data/information. Either no evidence is provided in support of the statements made by the exporter.

D.3. Examination of the Authority

27. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. The Authority made available to all interested parties the public file containing nonconfidential version of evidences submitted by various interested parties for inspection, upon request as per Rule 6(7).
28. With regard to confidentiality of information Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

"Confidential information. (1) Notwithstanding anything contained in sub-rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information."

29. The WTO Agreement on Anti Dumping provides as follows with regard to confidentiality of information-

"Article-6.5 Any information which is by nature confidential (for example, because its disclosure would be of significant competitive advantage to a competitor or because its disclosure would have a significantly adverse effect upon a person supplying the information or upon a person from whom that person acquired the information), or which is provided on a confidential basis by parties to an investigation shall, upon good cause shown, be treated as such by the authorities. Such information shall not be disclosed without specific permission of the party submitting it.

Article-6.5.1 The authorities shall require interested parties providing confidential information to furnish non confidential summaries thereof. These summaries shall be in sufficient detail to permit a reasonable understanding of the substance of the information submitted in confidence. In exceptional circumstances, such parties may indicate that such information is not susceptible of summary. In such exceptional circumstances, a statement of the reasons why summarization is not possible must be provided.

Article-6.5.2 If the authorities find that a request for confidentiality is not warranted and if the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in generalized or summary form, the authorities may disregard such information unless it can be demonstrated to their satisfaction from appropriate sources that the information is correct.

*Footnote to Article 6.5.2 (footnote 18 of the WTO Agreement on Anti Dumping) provides as follows :-
Members agree that requests for confidentiality should not be arbitrarily rejected.”*

30. It is thus evident that the public notices issued by the authorities are directly subjected to confidentiality provisions and should protect confidentiality of information provided by an interested party. Further, a conclusion drawn by the Authority based on confidential information also becomes confidential, if disclosure of such conclusion can in any way effectively lead to disclosure of information provided on confidential basis.
31. The provision for disclosure of essential facts before giving final findings has been laid down at Rule 16 of the Anti-dumping Rules. Even under Rule 16, the confidential facts are required to be disclosed to “respective interested parties”, while non-confidential facts are required to be disclosed to all interested parties. At no stage the Designated Authority is empowered to disclose the confidential information to the parties with competing and conflicting interests.
32. Disclosure of the commercially sensitive and confidential information, provided by the interested parties to the Designated Authority, by reposing trust and confidence, to facilitate the investigation, will completely vitiate the market atmosphere both in the domestic as well as international fronts. The disclosure of confidential information relating to the cost of production, non-injurious price etc. of the domestic industry will provide undue advantage to its domestic as well as overseas competitors and place them in a disadvantageous position before the consumers.
33. In view of the above Authority notes that confidential information can not be disclosed to the interested parties with competing and conflicting interests. However the non – confidential information has been disclosed to the interested parties.

E. Miscellaneous Issues

E.1 Views of the opposing interested parties

34. Views of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam are as follows:
 - i. The submission made by the petitioner is completely impractical although the answering exporter does not have any objection if the investigation is done qua all the HS codes as stated by the petitioner.
 - ii. The exporter has already provided the details of exports made by the exporter. The exports made for the PUC is under a specific HS Code i.e. 39249090 and the other HS codes are not relevant for the investigation of the PUC.
 - iii. The proposed period of investigation by the petitioner has been proposed keeping in mind the transactions of the petitioner qua the PUC as the petitioner has itself imported the said goods previously and has concealed the said data. It is requested that the DGAD look into the same and direct the petitioner to provide the said information.
35. No other interested party has not submitted any specific comments in this regard

E.2 Views of the Domestic industry

36. The views of the domestic industry are summarized as follows:
 - i. Petitioner is a new enterprise dealing in the subject goods is unable to cope up with the losses suffered due to the dumping of the PUC in the Indian market.
 - ii. The Designated Authority has carefully scrutinized the adequacy and accuracy of the application to justify initiation of investigation. It is pointed out in this regard that the petition contains the evidences regarding the increase in unfair trade practice and dumping by the subject countries. It is thus not a case that the petitioner merely made allegation and provide no evidence to establish the injury. Thus it no were shows the malafide intention of the petitioner.

- iii. The petitioner has no intentions to get trade and manufacturing secrets of the other manufacturers, nor does petitioner believe that these other producers of the subject goods produce better quality products than the petitioner/DI. In fact, Petitioner was well aware that any confidential information cannot become available to the Petitioner and therefore could not have sought present investigations to get any such secrets. Nor Petitioner has got any such information as a result of present investigations.
- iv. The petitioner has no intentions to get information on other producer's data, nor does petitioner believe that these other producers are selling at higher prices. In fact, Petitioner was well aware that any confidential information cannot become available to the Petitioner and therefore could not have sought present investigations to get any such secrets. Nor Petitioner has got any such information as a result of present investigations.
- v. For M/s Srithai, Thailand, there is one related enterprise, M/s Sri Thai India Limited in India, through which the exporter manages the sales in India. The importer has filed response after eight months of initiation of the investigation. Petitioner requests the Authority to reject the entire response submitted by the exporters and the related importer. On this account alone, entire participation and submission by the exporter should be rejected. Any other approach shall be not only highly unfair to the DI and shall prejudice valuable rights of the DI, but also would be highly unfair to other participating interested parties and above all would be abuse of the law and the procedure. If interested parties can walk into an investigation at any stage of the proceedings like this, there is no purpose of prescribing time limits under the statutes.

E.3. Examination of the Authority

- 37. The authority notes that the product is being imported in various HS codes namely 39241010, 39241090, 39249090, 39264049 and 39269099. It is clarified that the HS codes are only indicative and the product description shall prevail in all circumstances. There is no known difference in product produced by the petitioner and exported from the subject countries. Both products have comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification, etc. Comparison of essential product properties in respect of domestic product and imported product would show that the goods produced by the domestic industry are identical to the imported goods in terms of essential product properties. Therefore, it is concluded that subject goods produced by the petitioner and the subject goods imported from the subject country are like articles.
- 38. The exporters were allowed opportunity to supplement their responses. The opportunity was availed by both the exporters from Thailand and Vietnam, however, the information in the response is still incomplete.

F. Market Economy Treatment, Normal Value, Export Price and Determination of Dumping Margin

F. 1 Normal Value

- 39. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-*
 - (a) *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

F.2 Normal Value for China PR

Provisions relating to Non- Market Economy countries

- 40. Annexure-I to AD rules states as under:

7. In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.

8. (1) The term “non-market economy country” means any country which the designated authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph (3)

(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as, a non-market economy country for purposes of an anti-dumping investigation by the designated authority or by the competent authority of any WTO member country during the three year period preceding the investigation is a nonmarket economy country

Provided, however, that the non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the designated authority that establishes that such country is not a non-market economy country on the basis of the criteria specified in sub-paragraph (3)

(3) The designated authority shall consider in each case the following criteria as to whether:

(a) the decisions of the concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

(b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;

(c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and

(d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

Provided, however, that where it is shown by sufficient evidence in writing on the basis of the criteria specified in this paragraph that market conditions prevail for one or more such firms subject to anti-dumping investigations, the designated authority may apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 instead of the principles set out in paragraph 7 and in this paragraph”

F.3 Views of the Domestic industry

41. The following are the submissions made by the Petitioner:
 - a. China should be considered a non-market economy, in line with the position taken by the Authority in previous cases, and by investigating authorities in other countries. Chinese producers' cost and price cannot be relied upon for determination of normal value.
 - b. Market economy status cannot be granted unless following conditions are fulfilled:
 - i. Market economy status cannot be given in a situation where one of the major shareholders is a State owned/controlled entity
 - ii. Market economy status cannot be given unless the responding Chinese exporters establish that the prices of major inputs substantially reflect market values
 - iii. Market economy status cannot be given unless the responding exporter establish that their books are audited in line with international accounting standards
 - iv. Market economy status cannot be granted even if one of the parameters is not satisfied
 - v. The onus/obligations to establish market economy status is onto responding Chinese exporters and not onto the Designated Authority.
 - vi. Market economy status cannot be granted unless the responding company and its group as a whole make the claim.

- vii. In a situation where the current shareholders have not set up their production facilities themselves but have acquired the same from some other party, market economy status cannot be granted unless process of transformation has been completely established through documentary evidence.
- c. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:
 - *the price in a market economy third country,*
 - *constructed value in a market economy third country,*
 - *the price from such a third country to other country, including India.*
 - *the price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin.*
 - *the price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.*
- d. Since no questionnaire response has been filed by any of the Chinese companies, the subject country should be treated as non-market economy.

F.4 Views of the opposing interested parties

42. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties from China PR has filed any comment or submissions with regard to MET status of dumping margin.

F.5 Examination of the Authority

- 43. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating China PR as a non-market economy country. Upon initiation, the Authority advised the producers/exporters in China to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known producers/ exporters for rebutting presumption of nonmarket economy in accordance with criteria laid down in Para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China to advise the producers/exporters in their country to provide the relevant information. However, none of the Chinese producers/exporters have filed any response.
- 44. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and establish to the contrary. The exporter/ producer of the subject goods from China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:
 - i. The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labor, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
 - ii. The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
 - iii. Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
 - iv. The exchange rate conversions are carried out at the market rate.
- 45. The Authority notes that none of the producers and exporters of the subject goods from the subject country has submitted the exporter's questionnaire response and market economy questionnaire response, consequent upon the initiation notice issued by the Authority and rebutted the non-market economy presumption. In view of the above position, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure I to the Rules for determination of normal value in case of China PR. As none of the producers/exporters from China PR has submitted MET questionnaire response, the Authority is unable to grant market economy status to Chinese producers for the purpose of proposed determination.
- 46. In view of the fact that none of the producers/exporters has filed any exporter's questionnaire including MET questionnaire, MET status has not been accorded to Chinese producers. Further, none of the interested parties, including the domestic industry, has made available any material fact to the Authority to select an appropriate market economy third country. The Authority has, therefore, determined the normal value in respect of China PR on other reasonable basis, in terms of second proviso of Para 7 of Annexure 1 to the Rules.

47. Para 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules provides as under:

"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."

48. In view of the above, the normal value for the subject products imported from China PR into India has been determined on the "any other basis" by considering best available information with regard to cost of production and after reasonable additions for selling, general & administrative expenses and reasonable profit margin. The normal value has been constructed considering consumption of major raw materials as per information provided by the domestic industry, international prices for major raw materials, conversion cost, interest, SGA, etc. at the levels allowed for the domestic industry. 5% of cost of sales excluding interest has been added towards reasonable profit.

49. The constructed normal value determined for China PR is shown in the dumping margin table below.

F.6 Normal value in case of market economy countries (Vietnam & Thailand)

F.7 Views of opposing interested parties

50. Views of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam are as follows:

- i. The data given by the petitioner in its petition is baseless and completely concocted as the manufacturing costs of the exporter are much higher than portrayed and represented by the petitioner.
- ii. The exporter has to incur much higher costs for raw material as well as labour and other expenses such as electricity and machinery and plant and other fixed costs.
- iii. The data provided by the petitioner is misrepresented and inadequate as it does not take into account the costs incurred by the exporter for the manufacturing of the PUC.
- iv. PUC is not sold in the home country by the exporter since there is hardly any demand for the same. Therefore, there is no data available as there is no domestic sale of the PUC. The product sold in the domestic market by the exporter is only Urea products and not melamine products as the same is expensive and there is no market for the same in Vietnam.
- v. The calculations and estimates as filed by the petitioner are incorrect and not even close to the actual costs incurred by the exporter for the production. The fixed costs in Vietnam are higher than in India including labour therefore, the production costs cannot be as what is stated in the petition. The exporter has already filed the detailed documents qua the production costs of the exporter including all expenses.
- vi. The calculation with respect to dumping margin is completely incorrect in view of the miscalculation/wrong calculation of the manufacturing costs. It has already been stated that the manufacturing costs of the exporter are higher than that of the domestic industry and hence the landed price of the product is also much higher than that of the domestic industry. The petitioner has also not taken into account the various other amounts payable with respect to the taxes, costs and other expenses payable by the exporter in Vietnam as the laws are completely different.
- vii. The products exported by Machi are in no way affecting the DI in any manner as the price of the products of the exporter are much higher in the market than that of the DI and therefore, the demand of the product of the exporter is only limited vis-a-vis the products of the domestic industry since the DI provides for a more economical option to the customers.

51. No other interested party has submitted any specific comments in this regard

F.8 Views of the Domestic industry

52. The following are the submissions made by the applicants:

- i. Petitioner has made efforts to get evidence of price of product concerned in the domestic markets of Vietnam and Thailand. Efforts were also made to get any evidence of price from published sources. There is no publication which provides prices of the product under consideration in Vietnam and Thailand. The product prices are not publicly available.
- ii. The prices are transacted between the producers and consumers and therefore the same are not in public domain. The petitioner has not been able to get any evidence of price in the domestic markets of Vietnam and Thailand.
- iii. Even though the product is sold at retail levels, the price at which the product is sold at the retail level is highly misleading and would in fact show significantly higher normal value and dumping margin. The Petitioner submitted that this would however be highly prejudicial to the other interested parties and the Petitioner is well aware that these retail prices are unreliable in establishing the normal value in these countries.
- iv. As per exporter there is no sale of PUC by the exporter in the subject country. Only the urea based product is sold in the home market which is out of the scope of the PUC. Thus the normal value cannot be based on the prices of the domestic market in the subject country. In any case, the argument of the exporter implies higher dumping margin than what has been assessed at present.
- v. In view of the same, the normal value has been constructed for all exporters/producers from Vietnam and Thailand. Petitioner has determined normal value on the basis of estimates of cost of production based on best available information, with addition of selling, general and administrative expenses.

F.9 Examination by the Authority

53. The petition contained relevant information sufficient to determine normal value, export price and dumping margin to justify an initiation of anti dumping investigation against Vietnam and Thailand. Also, the basis of determination of normal value, export price and dumping margin for the purpose of this disclosure statement as per the AD Rule and relevant annexure is elaborated at appropriate places in this disclosure statement.

54. The Authority sent questionnaires to the known exporters/producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed. The following producers/exporters from subject countries have filed exporter's questionnaire response. The Authority has, therefore, considered individual dumping margin determination in respect of these producers-exporters only:

1. M/s Machi Enterprise (Vietnam)Co. Ltd, Vietnam
2. M/s Srithai Superware Public Company Limited, Thailand

55. The Authority notes that M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co. Ltd (producer and exporter in Vietnam) has filed questionnaire response. The detailed examination of questionnaire response of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co. Ltd., revealed that the data/information has been provided for the calendar year i.e. January 2013-December 2013 and that too in numbers. The POI in the instant case is April 2013-March 2014. In the Initiation Notification it was clearly specified that the units for PUC will be in weight terms. The exporter supplemented its questionnaire response subsequent to the hearing and has given information financial year wise but the data is still in numbers. Therefore the data is insufficient for analysis and determination of Normal Vale and Export Price.

56. The Authority notes that M/s Srithai Superware Public Company Limited (producer and exporter in Thailand) and his related importer in India M/s Srithai Superware India Limited have filed questionnaire response. The detailed examination of questionnaire response of M/s Srithai Superware Public Company Limited, revealed that the data/information by producer-exporter has been provided for calendar year i.e. January 2013-December 2013 and that too in numbers. The POI in the instant case is April 2013-March 2014. In the Initiation Notification it was clearly specified that the units for PUC will be in weight terms. The exporter supplemented its questionnaire response after the public hearing, wherein the exporter provided data on weight basis. However, this supplementary information continued to be for the period Jan-Dec., 2013. Information was not provided for the

POI of the present case. The authority notes that the information is mandatorily required for the investigation period. Therefore the data is insufficient for analysis and determination of Normal Vale and Export Price.

57. The product under consideration is not produced in various grades having significant difference in the associated cost. Various types of the product, such as spoons, bowls, plates, etc. are produced from Melamine Molding Compound. Production of different types merely implies forming Melamine Molding Compound into desired shape. It has been seen that more than 75% of the cost of the product is on account of raw material and utilities. The cost of the raw material and utilities is in direct proportion to the weight of the product. It has been stated by petitioner that the products are transacted in numbers at the consumer end level and is reported in different units such as pieces, sets, dozens, but at import end as well as factory to dealer end the transactions are mainly done in weight terms. It is because of this reason that even when the product varies significantly in terms of associated costs when expressed in unit of measurement other than weight, the cost of production is quite linear with weight of the product. And thus, the Authority has decided that it would be appropriate to express PUC in terms of weights. The DGCIS data is available in weight and numbers and all the analysis has been done on the basis of weight.
58. The Authority, therefore, as per its practice, has decided not to determine the individual dumping margin in respect of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co. Ltd, Vietnam and M/s Srithai Superware Public Company Limited, Thailand. This is not only consistent practice of the authority, but also the decision of the Hon'ble Tribunal in the matter of Thai Acrylic Fibre Co. Ltd. Vs Designated Authority 2001 (128) E.L.T. 537 (Tri. - Del.). The notice of initiation also clearly stated that the Period of Investigation (POI) for the case is April, 2013 – March, 2014 (12 Months) and injury investigation period covers the periods Apr'10-Mar'11, Apr'11-Mar'12, Apr'12-Mar'13 and the period of investigation.
59. The Authority notes that for determination of normal value based on third country cost and prices, the complete and exhaustive data on domestic sales or third country export sales, as well as cost of production and cooperation of such producers in third country is required. No such information with regard to prices and costs prevalent in these markets have been provided either by the applicant or by the responding exporters, nor any publicly available information could be accessed, nor the responding companies have made any claim with regard to an appropriate market economy third country. In view of the same, the Authority proceeds to construct the normal value based on any other reasonable basis.
60. The Authority proceeds to determine the Normal value on available facts basis, considering India as the surrogate country. Accordingly, the Authority has constructed the Normal value for the producers on the following basis :-
 - a) International prices of raw materials
 - b) Consumption of raw materials and conversion costs have been adopted on the basis of information/ data of the domestic industry.
 - c) Power tariff as per Subject country rates
 - d) Selling, general & administrative costs have been taken on the basis of information/data of the domestic industry.
 - e) Profit has been taken @ 5% of ex-factory cost excluding interest.

The normal value so determined is as mentioned in the dumping margin table below.

F.10 Export price for exporters from China PR, Vietnam and Thailand

61. None of the exporters have furnished sufficient information to the authority in the form and manner prescribed which could be used for determination of the export price and individual dumping margin. Therefore, the Authority has determined the export price for producers/exporters on the basis of the DGCI&S transaction wise data.
62. The export price has been adjusted on account of handling charges, overseas transportation, international insurance, bank charges and VAT adjustment (only for China) to arrive at the net export price at ex-factory level. Accordingly, the net export price at ex-factory level for producers has been determined, which is indicated in the Dumping Margin Table below.

F.11 Determination of Dumping Margin

63. Based on the methodology explained above, the normal value, export price and dumping margin in respect of all producers/exporters of the subject countries is determined as follows.

Dumping Margin

Particular	Units	China PR	Thailand	Vietnam
Normal Value	US\$/MT	***	***	***
Net Export Price	US\$/MT	***	***	***
Dumping Margin	US\$/MT	***	***	***
Dumping Margin	%	***	***	***
Dumping Margin	% range	45-55	20-30	60-70

METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

G. Injury Determination and Examination of Injury and Causal Link

G.1 Views of Domestic Industry

64. The domestic industry has submitted that:
- i. There has been significant increase in demand over the injury period.
 - ii. The import of the subject good has increased from the subject countries throughout the injury period.
 - iii. The import volume of China PR has increased throughout the present injury period from the base year to year 2012-13 except POI.
 - iv. There is a huge increase in the imports from Thailand throughout the injury period.
 - v. Imports from Vietnam has declined in the year 2011-12 from the base year but further showed a significant increase in imports till the POI.
 - vi. Subject country imports have remained significant in relation to Indian production and consumption in the POI.
 - vii. Subject imports constitute more than 97% of the total imports into the domestic market in the POI.
 - viii. Market share of imports from the subject countries has increased significantly throughout the injury period.
 - ix. Subject imports capture more than 97% of the Indian market.
 - x. Though the demand of the subject good has increased throughout the injury period the market share of the domestic increased in the year 2011-12 and 2012-13 from the base year but declined in POI.
 - xi. The subject imports are collectively and individually undercutting the domestic prices except Thailand in the year 2010-11 and Vietnam in the year 2010-11 and 2011-12.
 - xii. The landed price of imports has remained significantly below the level of cost of sales and selling price of the domestic industry throughout the injury period. Low priced dumped imports forced the domestic industry to maintain its selling price below the levels of cost of sales. Thus the imports are suppressing the prices of the domestic industry throughout the injury period. The cost of sales of the domestic industry increased by 15%; whereas selling price increased by only 5%.
 - xiii. The cumulative assessment of the effects of imports is appropriate. The Authority is requested to assess injury to the domestic industry cumulatively from the subject countries.
 - xiv. The sales of the product under consideration can be broadly divided into two categories i.e. sales through distributors and retail sales. Sales through distributors are made to whole-sellers/retailers who in turn sell to retailers/end- customers. Retail sales are made to large customers such as Super Stores and Corporate. The imported products also follow similar sales channel.

- xv. While submitting the various injury parameters such as market share, sales, demand and cost to make & sell, Petitioner has only taken the actual domestic sales made by the Petitioner.
- xvi. The domestic industry has enhanced its capacity throughout the injury period in view of the increase in demand. Despite increase in capacity, the production of the domestic industry has remained much below optimum levels. Domestic industry has been regulating production considering the demand for the product in the market. The domestic sales of the domestic industry showed the same trend as that of production and have remained much below the optimum levels, despite almost triple fold increase in domestic demand for the product during the injury period. With dumped imports entering the Indian market, the domestic industry is not able to utilize its capacity to optimum level.
- xvii. Profitability with respect to domestic sales of the product concerned deteriorated over the injury period. Profitability of domestic industry became negative in 2011-12 and the losses have further intensified in the POI. The domestic industry is continuously running into financial losses with respect to domestic sales in view of continued dumping of the product in the Indian market. The losses increased significantly after 2011. With dumped imports entering the Indian market, the domestic industry, in order to sustain in the market, is left with no option but to sell the goods at sub-optimal prices. The domestic industry is prevented from raising its prices in proportion to the costs. Return on investment and cash profits have followed a trend almost the same as that of profits. Thus, return on investment and cash profits have also deteriorated during this period.
- xviii. Market share in demand of the domestic industry increased in 2011-12 and 2012-13 but further declined in the proposed POI. It would therefore be seen that even after enhancing the capacity the domestic industry could not even attain the market share. Market share of dumped imports from subject countries increased throughout the injury period. The subject imports still capture around 40% of the Indian market.
- xix. The level of employment with the domestic industry has increased throughout the injury period except in the year 2011-12. Wages paid by the domestic industry per employee have also increased over the injury period.
- xx. The inventories of the domestic industry have been piling up over the entire injury period despite efforts of the domestic industry to sell even at loss.
- xxi. The growth of the Domestic Industry in terms of market share is positive, however much below the optimum levels. Capacity utilization shows a negative growth. Further, domestic industry has registered negative growth in terms of production, sales, profits, return on investment, cash profits, etc. Thus, overall growth of the domestic industry is adverse.
- xxii. It is refuted that the landed price recorded is wrong and exporter sells the subject goods at much higher price. The price of raw material is too high. Petitioner submits that the both the exporter and the petitioner purchase the raw material from the same source. Going by the statement made by the exporter the Normal value of the product is too high, whereas the landed price reported are too low. Thus the exporter itself establishes the dumping of the product.
- xxiii. The persistent price difference between domestic and imported product led to increase in imports during the injury period, even when sales of the DI increased only marginally. Thus, market share of DI and domestic producers as a whole declined significantly over the injury period.
- xxiv. Regarding petitioner giving false information and doctored the figures regarding export's market share, landed price the arguments are denied as the exporter has not provided any documents or enclosed any annexure to cross verify the figures. The claims cannot be made without evidences.
- xxv. The claim made by the exporter that the market share of the exporter is negligible and is nothing compared to that of the DI. The petitioner has already enclosed the import statement as well as the market share of the DI in comparison to the share of exporters. Market share of imports from the subject countries has increased significantly throughout the injury period whereas the market share of the DI has declined in the POI.
- xxvi. If the process consumes more time then it will cost more. How the product consuming more time can be of lower price. This issue has not been addressed by the exporter.

G.2 Views of other interested parties

65. None of the producer/exporters from China PR have responded to the questionnaire.
66. Views of M/s Machi Enterprise (Vietnam) Co., Ltd., Vietnam are as follows:
- i. M/s Machi is the only exporter of the PUC from Vietnam and no other company exports to India.
 - ii. PUC manufactured by them are of a much better quality than what is manufactured by the domestic industry and is also sold at a higher price than the products sold by the domestic industry.
 - iii. The domestic industry has presented incorrect information and doctored the figures regarding exports, market share, landed price of the PUC in the non-confidential version of its petition.
 - iv. The market share of the exporter is negligible when it comes to the PUC and is nothing compared to that of the domestic industry.
 - v. There is a contrasting difference between the quality of the products manufactured by the exporter and those manufactured by the domestic industry; there is no possibility that the exporter can in any way threaten the market share of the domestic industry.
 - vi. The petitioner has filed the present petition to reveal trade and manufacturing secrets of the other manufacturers who produce better quality products than the petitioner/ domestic industry. The petitioner is trying to get sensitive data revealed through the present petition which is completely malafide.
 - vii. Domestic Industry sells the PUC the cheapest and the most inferior quality products in market. By filing the present petition the petitioner wants to know the prices at which other manufacturers sell their products and also to get the client details of other manufacturers so that the petitioner can approach them and grab into the market share of other manufacturers exporting in other countries.
 - viii. The products sold by exporters are sold as per normal business practice and norms and there is no price undercutting or price suppression adopted by them. The said fact can be clearly established by the fact that the price at which our product is sold is much higher than the price at which the domestic industry sells the same product.
 - ix. The injury cannot be assessed cumulative form all the countries under investigation especially in view of the incorrect data given by the petitioner with respect to the exporter. The exporter is not aware of the correctness of the data for other countries but there is no dumping on behalf of the exporter and all the transactions (exports) are made under strict business practices and the keeping in mind the brand and value of the product manufactured by the exporter which is one of the better quality goods in the world.
 - x. Due to the high cost of the goods manufactured by the exporter they do not have any domestic sales of the product under consideration and the goods sold by the exporter in the domestic market are only urea products.
 - xi. Vietnam even otherwise is still a developing economy and the demand for the PUC is very limited and there are several other manufacturer who cater to this limited domestic demand only.
 - xii. The exporter has neither caused any injury nor is likely to cause any injury to the DI since there is no dumping of the PUC from the exporter. The exporter exports the products under normal business practices of the company and there is no price reduction of the product under consideration or for that matter any other product manufactured by the exporter. Any submission to that effect is completely misleading and false. It is further stated that there is no price undercutting on account of the product exporter by Machi as the said products are already sold at a much higher price than that of the domestic industry and the quality of the products are also very different. The said difference can be determined easily.
 - xiii. The market share of the exporter is negligible when it comes to the total market of the PUC. It is stated that as per the data provided, by the petitioner the total exports from Vietnam as stated are not correct since as per the knowledge of the exporter (Machi), it is the only company exporting the PUC to India from Vietnam and the data given by the petitioner is highly inflated and exaggerated.

- xiv. The production/manufacturing costs of the PUC is much higher in Vietnam as the labour and other fixed costs in Vietnam is much higher than that in India hence, increasing the manufacturing costs of the PUC. The sale price of the product as stated in the petition is completely incorrect and inflated and the sale price is much higher as already provided in the data submitted before the authority.
 - xv. The price variation of the goods can be seen by any products of similar nature manufactured by the exporter and the domestic industry. The approximate price difference between the products is about 20% to 40% depending upon the kind of product involved. That is to say that the products of the exporter are 20% to 40% more expensive than the products sold by the domestic industry.
 - xvi. The volume of the goods export is solely dependent upon the orders received by the exporter from the various clients. The volume effect as stated by the domestic industry is completely incorrect and accurate. It is submitted that the prices of the exporter are in no way connected with the prices of the domestic industry and the exporter was not even aware about the prices of the products manufactured by the domestic industry as the exporter charges the price in tune with its own business practices and norms. The exporter manufactures and exports the material to various countries including India. The main consideration for price determination is the manufacturing costs of the product manufactured and any discount or rebate depends upon the order placed by the concerned importer.
 - xvii. The exporter has neither intended to hamper the domestic industry nor in the present facts and circumstances, has the exporter in any way affected the domestic industry. The product under consideration varies in quality as well as the price at which it is manufactured and sold and therefore, it is not possible for the exporter to dump the PUC.
 - xviii. The dumping margin as stated and assessed by the domestic industry is based on incorrect and false data and the price construction/assessment done by the domestic industry is also incorrect and the exporter has already given the data regarding the same to the DGAD.
 - xix. The market share as well as the price effect as stated by the domestic industry is incorrect. The prices of the goods sold by the domestic industry already much lower than that of the exporter. There is a significant difference of nearly 20% to 40% depending upon the kind of product sold in the market. Such a difference cannot be to compete in the market but is based upon the cost of manufacturing, other costs as well as the profit margin. It is once again stated that the quality of the products manufactured by the petitioner and the answering exporter is also different.
 - xx. As per the knowledge of the exporter it is the only exporter exporting the product under consideration to India and in such circumstances, the quantities as stated by the exporter cannot be accurate/correct and are misconstrued thus making a significant difference in the market share as portrayed and what it actually is.
 - xxi. The data provided by the petitioner pertaining to the exports done by Vietnam are incorrect and are highly inflated. The answering exporter has already provided the data in terms of the questionnaire and the correct facts and data highly varies from the data provided by the petitioner, which is admittedly constructed data by the petitioner without any source or information.
 - xxii. Under such circumstances, the data provided by the petitioner qua the answering exporter cannot be relied upon and the actual data given by the exporter has to be taken into account while investigating the claims of the domestic industry which are highly exaggerated in term of the loss and damage claimed by the petitioner.
 - xxiii. There is no link whatsoever between the exports from the answering exporter and any damage or loss suffered by the petitioner. It is further stated that the answering exporter has not dumped any goods and the exports are done in terms of the regular business practices and not harm or hamper the domestic industry.
 - xxiv. The manufacturing process is slightly different than that of the petitioner and therefore, the quality of the goods of the answering exporter is also better than that of the petitioner.
 - xxv. Exporter has not dumped any goods in India nor caused any injury to the domestic industry. However, the answering exporter is not aware about the practices and data regarding other countries.
67. No other interested party has not submitted any specific comments in this regard

G.3 Examination by the Authority

68. In consideration of the various submissions made by the interested parties in this regard, the Authority proceeds to examine the current injury, if any, to the domestic industry on account of imports from the subject countries.
69. Article 3.1 of the WTO Agreement and Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

Cumulative assessment of injury

70. As per annexure-II (iii) of the Rules, in case, imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti-dumping Investigation, the Authority is required to cumulatively assess effect of such imports, only when it determines that:
 - a. The margin of dumping established in relation to imports from each country is more than 2% expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is 3% of the imports of like article, and,
 - b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.
71. The Authority has found that the margin of dumping in respect of each of the subject country is more than 2% and the volume of imports from each country is also more than 3%.
72. With a view to assess the conditions of competition between imported products and the like domestic product, the Authority notes that –
 - a. The subject goods supplied by Foreign Producers and by the domestic industry are inter se like articles.
 - b. The Authority has found that the imported subject goods are commercial substitutes of the domestically produced products.
 - c. The information furnished to the Authority gives a reasonable indication that the exports made from the subject countries compete in the same market, as these are like products.
73. Therefore, the Authority notes that it is appropriate to, cumulatively assess the effect of imports of the subject goods on the domestically produced like article, in the light of conditions of competition between the imported products and the like domestic product.
74. Annexure II of the AD Rules requires that determination of injury shall involve objective examination of both:
 - a. The volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and
 - b. Consequent impact of these imports on domestic producers of such products.
75. The Authority while examining the volume of dumped imports is required to examine whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.
76. For the purpose of injury analysis the Authority has examined cumulative effect of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of industry to evaluate the existence of injury and causal links between the dumping and

injury, if any. Since significant dumping margins have been established for the exports from the subject countries, entire exports from the subject countries have been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal link examination.

Impact of dumped imports on domestic Industry

77. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry Para (iv) of Annexure-II of the Anti-dumping Rules states as follows.

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

78. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules supra.
79. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules states as under: -

The effect of the dumped imports shall be assessed in relation to the domestic production of the like article when available data permit the separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effects of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like product, for which the necessary information can be provided.

80. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and submissions made by various interested parties.

Assessment of Demand

81. The demand/apparent consumption of subject goods has been determined by adding domestic sales of domestic like product and imports of subject goods from all countries. The Authority notes that demand of subject goods increased significantly over the injury period as can be seen in the table below:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Sales of Domestic Industry	MT	***	***	***	***
Index		100	170	227	269
Sales of Other Indian Producer	MT	***	***	***	***
Index		100	134	160	177
Imports in to India	MT	536	522	764	1,083
China	MT	236	260	345	324
Thailand	MT	81	180	313	372
Vietnam	MT	44	36	70	354
Total Subject Countries	MT	361	476	728	1,050
Other Country	MT	175	46	36	33
Demand in India	MT	1,308	1,671	2,219	2,746

82. The Authority notes that the demand for the product under consideration has shown a positive trend, showing an overall increase over the injury period.

i. Import volumes in absolute terms

83. Imports volume from subject countries were as under:-

Imports Volume	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
China	MT	236	260	345	324
Thailand	MT	81	180	313	372
Vietnam	MT	44	36	70	354
Total Subject Countries	MT	361	476	728	1,050
Other Country	MT	175	46	36	33
Total Imports	MT	536	522	764	1,083

It is seen that imports have increased significantly in absolute terms over the injury period. Imports from the China PR have shown gradual increase throughout the injury period; whereas, from Vietnam and Thailand, imports increased significantly over the injury period. Whereas the demand for the product under consideration increased by 110% from base year, imports from China increased by 37% over the same period, whereas imports from Vietnam and Thailand showed 703% and 358% increase respectively.

ii. Imports in relation to production-

84. Authority observes that the imports from subject countries have increased in relation to production in India as shown below:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Imports from subject countries	MT	361	476	728	1,050
Total imports	MT	536	522	764	1,083
Production of domestic industry	MT	***	***	***	***
Indian production	MT	1072	1435	1679	1854
Share of subject country imports in relation to					
Domestic industry production	%	80.53	69.54	85.79	108.35
Indian production	%	33.68	33.18	43.34	56.63

85. It is, thus, seen that imports of the product under consideration from subject countries have increased in relation to production in India.

iii. Imports in relation to total imports

86. Imports of the product under consideration from subject countries have increased in relation to total imports into India.

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Market Share in Import Volume					
China	MT	236	260	345	324
Thailand	MT	81	180	313	372
Vietnam	MT	44	36	70	354
Subject countries	MT	361	476	728	1,050
Other countries	MT	175	46	36	33
Total imports	MT	536	522	764	1,083
Share in total Imports-					
China	%	43.96	49.77	45.14	29.92

Thailand	%	15.18	34.54	41.04	34.37
Vietnam	%	8.21	6.96	9.12	32.64
Total Subject Countries	%	67.34	91.27	95.31	96.93
Other Country	%	32.66	8.73	4.69	3.07

iv. Imports in relation to consumption

87. Imports of the product under consideration have increased significantly in relation to consumption of the product under consideration in India.

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Imports from subject countries	MT	361	476	728	1,050
Sales of domestic industry	MT	***	***	***	***
Index		100	170	227	269
Consumption in India	MT	***	***	***	***
Index		100	128	170	210
Market Share in Demand					
Domestic Industry	%	24.67	32.81	33.14	31.65
Other Indian Producer	%	34.32	35.97	32.46	28.91
Total Imports	%	41.01	31.22	34.41	39.44
China	%	18.03	15.54	15.53	11.80
Thailand	%	6.22	10.78	14.12	13.56
Vietnam	%	3.37	2.17	3.14	12.87
Total Subject Countries	%	27.62	28.49	32.79	38.23
Other Country	%	13.39	2.73	1.62	1.21

88. It is thus seen that share of imports from subject countries in Indian demand increased from below 28% to above 38% over the injury period. This increase in imports in relation to consumption is despite the increase in capacity by the domestic industry. The domestic industry doubled capacities during this period, despite which the share of the subject countries imports in consumption increased by an absolute 10% over the injury period.
89. It is, thus, concluded that imports from subject countries have increased both in absolute terms and in relation to production and consumption in India.

v. Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

90. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

91. It has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

vi. Price Undercutting

92. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. This comparison showed that during the period of

investigation, the subject goods originating in the subject countries were imported into the Indian market at prices which were lower than the selling prices of the domestic industry. It is thus noted that imports of subject goods were undercutting the domestic prices and margin of undercutting is shown in the table below:

Particular	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
Net Sales Realisation of Domestic Industry	Rs./MT	***	***	***	***
China PR					
Landed Value	Rs./MT	244,518	254,368	212,549	244,364
Price undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price undercutting	%	***	***	***	***
Price undercutting Range	%	15-25	10-20	40-50	25-35
Thailand					
Landed Value	Rs./MT	298,528	260,663	221,248	287,039
Price undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price undercutting	%	***	***	***	***
Price undercutting Range	%	Negative	05-15	40-50	5-15
Vietnam					
Landed Value	Rs./MT	361,905	399,722	262,407	217,106
Price undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price undercutting	%	***	***	***	***
Price undercutting Range	%	Negative	Negative	15-25	40-50
Subject Countries					
Landed Value	Rs./MT	271,001	267,839	221,265	250,321
Price undercutting	Rs./MT	***	***	***	***
Price undercutting	%	***	***	***	***
Price undercutting Range	%	05-15	05-15	35-45	20-30

93. It is seen that the landed price of imports from each of the subject countries were lower than the selling price of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting.
94. The interested parties have contended that the selling price of the domestic industry is below the landed price of imports and the imports were of superior quality. The verified information however shows that the landed price of imports were below the selling price of the domestic industry. The authority also notes that the price undercutting is required to be determined on the basis of weighted average of imports from the country concerned. The contention of the interested parties therefore that the imports are occurring at higher prices is found factually incorrect. The Authority concludes that price undercutting with respect to imports from subject country have been positive during the POI.

vii. Price suppression/depression

95. In order to determine whether the effect of imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred, the Authority examined the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the Table below:

Particulars	Units	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (POI)
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	106	106

Particulars	Units	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (POI)
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	106	111	114
Landed Value of imports from subject countries	Rs./MT	271,001	267,839	221,065	250,321
Trend	Indexed	100	99	82	92

96. It is seen that landed value of imports have remained significantly below the level of cost of sales and selling price of the domestic industry throughout the injury period. Low priced dumped imports forced the domestic industry to sell its goods at a price below the cost of sales. Thus the imports are suppressing the prices of the domestic industry throughout the injury period.

viii. Price Underselling

97. Authority notes that the price underselling is an important indicator of assessment of injury. Non injurious price has been worked out and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been determined considering the cost of production of the domestic industry for the product under consideration during the POI, in accordance with Annexure III of the Anti-dumping Rules. The analysis shows that the landed value of subject imports was below the non-injurious price as can be seen from the table below.

Particular	Units	China PR	Thailand	Vietnam
Non-Injurious Price	Rs/MT	***	***	***
Landed Value	Rs/MT	271,001	267,839	221,065
Price Underselling	Rs/MT	***	***	***
Price Underselling	%	***	***	***
Price Underselling	range	20-30	5-15	40-50

It is noted from the above table that imports from the subject countries are having an underselling effect on the prices of domestic industry.

ix. Economic parameters of the domestic industry

98. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

x. Production, Capacity, Capacity Utilization & Sale Volume

99. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization was examined and shown in the table below:-

Particulars	Units	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (POI)
Capacity	MT	889	1309	2001	2001
Trend	Indexed	100	147	225	225
Production	MT	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	153	189	216
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	104	84	96
Total Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	193	257	302
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	170	228	269

It is noted that:

- Domestic industry has enhanced its capacity throughout the injury period in view of the increase in demand. Demand for the product under consideration doubled over the injury period. The capacity with the domestic industry also doubled over the injury period. It is thus seen that the enhancement in capacities by the domestic industry was commensurate with the increase in demand for the product in the Country.
- Production and sales of the domestic industry increased over the injury period. The rate of increase in production and sales was however lower than the rate of increase in demand for the product. Further, the petitioner is suffering significant unutilized capacities. It was seen at the time of plant visit that the production process of the product under consideration is such that the producers can regulate the production by stopping the machines and the petitioner had in fact not deployed all the machines on three shift basis. Thus, capacity utilization of the domestic industry has suffered as a result of the inability of the domestic industry to increase its market share. It is also seen that since the petitioner does not have very old history of production of the product under consideration in the Country, it was legitimate expectation of the petitioner to improve its market share over the period.

xii. Profit/Loss, Return of Investment

100. The profitability of the domestic industry is given in the following table:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14 (POI)
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	106	111	114
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	98	106	106
Profit/Loss	Rs./MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	(9,110)	(5,989)	(9,784)
Profit/Loss	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	(15,478)	(13,648)	(26,362)
PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	(190)	(126)	(617)
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	(54)	58	(92)
Return of investment	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	(182)	(113)	(359)

101. It is seen from the above information that:

- The profitability of the domestic industry with respect to domestic sales of the product concerned deteriorated during POI as compared to base year. The decline in profits of the domestic industry is very significant.
- The cost of production and selling price both increased over the period, but the increase in selling price was lower than the increase in cost of production. Thus, the price suppression caused by the dumped imports

resulted in deterioration in the performance of the domestic industry with regard to profits. The domestic industry was forced to sell the product at a price below the cost of production.

- c. The production and sales increased over the injury period but the profitability declined.
- d. The returns on investment and cash flow have followed the same trend as that of profitability.

xii. **Inventories**

102. Inventories with the domestic industry were as follows:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
Average Inventory	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	241	287	273

It is seen that inventories with the domestic industry have increased significantly over the period. The rate of increase in inventories was more than the rate of increase in production.

xiii. **Employment and Wages**

103. The employment and wages are below:

Parameters	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
No of Employees	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	136	159	164
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	203	291	359

It is seen that the employment and wages has increased in the injury period

xiv. **Growth**

104. The Authority notes from the table below that growth of the domestic industry was positive in terms of sales and production on year to year basis. However, growth of the domestic industry was however negative in respect of inventories, profits, cash profit and return on investment on year to year basis.

Parameters	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Production	%	-	53	24	14
Domestic Sales	%	-	70	34	18
Average Inventory	%	-	141	19	(5)
Cash Profit	%	-	(154)	(208)	(259)
PBIT	%	-	(290)	34	(391)
ROCE	%	-	(4)	1	(3)

xv. **Ability to raise capital investment**

105. Domestic industry enhanced capacities over the period and made fresh investments. The domestic industry contended that even when they have made fresh investments, the same were a result of overall operations of the company and strength that the company enjoys because of other products. The domestic industry further contended that the investments were made in the hope that the market for the product under consideration would become fair. However, dumping of the product is leading to negative growth in terms of number of economic parameters and the dumping is leading to financial losses.

xvi. **Factors Affecting Domestic Prices**

106. The examination of the import prices from the subject countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market, etc shows that the landed value of imported material from the subject countries is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry, causing significant price undercutting as well as price underselling in the Indian market. It is also noted that the demand for the subject goods was

showing significant increase during the injury period including the POI and therefore it could not have been a factor affecting domestic prices. Thus, the principal factor affecting the domestic prices is the dumped imports of subject goods from subject countries.

xvii. Magnitude and Margin of Dumping

107. The imports from the subject countries are far above the de minimis level of dumping margin. The dumping margin for each of the subject countries is quite significant. With such high magnitude of dumping margin, dumped imports are causing material injury to the domestic industry.

xviii. Conclusion on injury

108. Based on the above, the Authority proposes to conclude that the dumped imports of the subject goods from the subject countries have increased in absolute terms as well as in relation to production and consumption of the subject goods in India. Imports of the product are undercutting the prices of the domestic industry in the market. Further, while both the cost of production and selling price increased over the injury period, the increase in selling price was lower than the increase in cost of production. The imports were thus preventing the price increases that would have otherwise occurred in the absence of dumped imports. It is observed that the demand for the product increased significantly and consequently production and sales of the domestic industry also increased, however, performance of the domestic industry deteriorated in respect of market share, capacity utilization, inventories, profits, cash flows and return on investments.
109. The Authority noted that the domestic industry has suffered injury on account of volume as well as price effect of dumped imports, as a result of which the profitability of the domestic industry has declined. Domestic industry is suffering financial losses. Return on capital employed and cash profits followed the same trend as that of profits. Both return on capital employed and cash profits turned negative in POI. Growth of the domestic industry in respect of most of the parameters such as profits, cash profits, returns on capital employed, market share & inventory, etc. was negative. Thus, Authority concluded that the domestic industry has suffered material injury.

Causal Link

110. The Authority has examined whether other factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the domestic industry. The examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry has been done as follows:

Injury due to other listed known factors:

111. Authority examined whether listed known factors have caused injury to the domestic industry.

- (1) *Changes in the patterns of consumption:* The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Changes in the pattern of consumption could not have, therefore, contributed to the injury to the domestic industry.
- (2) *Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers:* There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the domestic industry.
- (3) *Developments in technology:* Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury.
- (4) *Export performance:* Petitioner has exported the product under consideration during the injury period. However, the claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations. Petitioner has provided costing and injury information for domestic sales separately. Hence, injury to domestic sales cannot be attributed to exports.
- (5) *Performance of other products being produced and sold by the domestic industry:* Claimed injury to the domestic industry is on account of product under consideration.

112. Authority proposes to conclude that listed known other factors have not caused injury to the domestic industry.

Factors establishing causal link: -

113. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a) There is significant difference between the prices offered by the domestic industry and foreign producers. Resultantly, domestic industry suffered volume injury as domestic industry could not increase its production and sales. In fact, capacity utilization of the domestic industry declined.
- b) Imported product was undercutting the prices of the domestic industry. Resultantly, the domestic industry has been prevented from increasing the prices to the extent of increase in cost of production.
- c) Deterioration in profits, return on capital employed and cash profits are directly a result of dumped imports;
- d) Significant increase in imports has led to significant stock piling with the domestic industry;
- e) Market share of the imports from subject countries remained significantly high. Market share of the domestic industry has declined despite additions of capacities by the domestic industry.
- f) Growth of the domestic industry was negative in respect of a number of parameters as a result of dumped imports.

H. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

114. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules, as amended. The non-injurious price so determined has been compared with the landed prices of imports from the subject country. The injury margin so determined is significant.

Particular	China PR		Thailand		Vietnam		Subject Countries	
	US\$/MT	Rs./Mt	US\$/MT	Rs./Mt	US\$/MT	Rs./Mt	US\$/MT	Rs./Mt
Non-Injurious Price	***	***	***	***	***	***	***	***
Landed Value	4,015.80	2,44,364	4,717.11	2,87,039	3,567.84	2,17,106	4,113.68	2,50,321
Injury Margin	***	***	***	***	***	***	***	***
Injury Margin	***	***	***	***	***	***	***	***
Injury Margin Range	25-35%		10-20%		45-55%		20-30%	

Post disclosure Statements/Submissions

1.1 Post Disclosure Statement by the Exporters

115. M/s Machi Enterprises made submissions but the comments do not have any substantive new facts. The summation of submissions by M/s Srithai Superware Public Company Limited Thailand, is as below:
- a. There can be several grades of subject goods resulting in higher production cost and subsequent higher sale price of the product.
 - b. Their product is different in production technology, manufacturing process, distribution and marketing as compare to DI. The products of DI are not like articles.
 - c. M/s Servewell is holding the major proportion of production in Indian market and the petitioner is not the major producer.
 - d. All the documents and detailed information have been submitted by them in their various submissions during the course of investigation. The data was given for Thailand fiscal year which is January-December 2013 which has at least nine months of the POI.
 - e. The source of international prices of raw material should be declared as the pricing data of the domestic country should not be adopted for comparison.

1.2 Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

116. The summation of submissions by DI is as below:

- a. The product under consideration is not produced in various grades having significant difference in the associated cost.
- b. There is no known difference in product under consideration produced by the domestic industry and exported from subject countries. The two are technically and commercially substitutable. The goods produced by the domestic industry and imported from the subject countries are like articles in terms of the Rules.
- c. The production of petitioners is 52% of the total production of Indian industry and is qualified to be treated as domestic industry.
- d. The Authority should not determine dumping margin and injury margin on the basis of weighted average of the import price in the POI in a situation where the Authority has not accepted questionnaire response filed by the foreign producers. In this context the following case is referred:

Kothari Sugars & Chemicals Limited Versus Designated Authority, 2005(187) E.L.T. 185 (Tri. – Del): In this, the Tribunal has clearly held that it is not necessary that the dumping and injury margin are based solely on weighted average of import price. The decision clearly establishes that in case there is a significant difference in the import price in different import transactions, the weighted average would at the least be misleading.

In the present case it is evident from the comparison of import data and the questionnaire response filed by the responding exporters that the exports made by one particular exporter are at a higher price. The mere fact that the Authority has not granted individual dumping margin to the exporter does not mean that the Authority shall adopt weighted average import price on the basis of Indian Customs data.

- e. A statement showing the prices at which M/s Srithai has exported the product and the price at which other producers from Thailand have exported the product has been submitted to DA. Given significant difference in the prices, a dumping and injury margin determined on the basis of weighted average would tantamount to rewarding other exporters/producers by granting them benefit of higher prices at which Srithai has exported the product. At the same time, this shall also imply penalizing Srithai despite admitted higher export price of the company. Above all, the domestic industry would be significantly unprotected by the resultant dumping duty, as the companies resorting to significant dumping would continue to dump the product and company such as Srithai would be faced with higher duty, which would be of no legitimate advantage to the exporter (M/s Srithai) and the domestic industry.
- f. Authority is requested to determine individual dumping margin and injury margin. Since M/s Srithai has failed to fully cooperate with the Authority, there is no bar on the DA in determining individual dumping and injury margin on the basis of Indian Customs import data. In fact, the DA has determined individual dumping and injury margin on the basis of available information in the case of (i) Dead burnt magnesite; (ii) Low carbon ferro chrome; (iii) 8-Hydroxyquinolinone; and (iv) Sodium Ferrocyanides, in the beginning of application of present law. Prior to 01-01-1995, the rule did not require determination of producer specific dumping and injury margin. The relevant legal provisions were created through WTO Agreement on Anti Dumping (which came into force on 01-01-1995). In 1996, while considering the new law, the DA determined individual dumping and injury margin even in a situation where exporters did not fully cooperate with the Authority. Such individual dumping and injury margins were determined based on information available on record of the investigations (Indian customs data).
- g. The sole determining criterion on the issue is whether there is sufficient information available with the Authority which shows a price which is reasonable, appropriate and sufficient for determination of export price. If the export price so determined is unreasonable high or low, it follows that the Authority may not determine individual dumping and injury margin without a questionnaire response from the party concerned. But, however, in a situation where available information shows an export price which is reasonable and adequately & accurately represents the import price, the DA can determine dumping and injury margin even from other information available to the Authority, including customs data.
- h. The petitioner requests the authority to correctly fix NIP as per the Rules and laws laid down. The indirect salary and wages in the ratio of machine hour reported by the petitioner should be considered. The authority could consider either actual machine hour or standard machine hour as deemed appropriate by the authority. The cost of production reported by the petitioner and certified by a practicing cost accountant has been modified in the disclosure statement either by altering the

allocation/apportionment methods or by ignoring expenses which are clearly permissible under the law. The rules provide for consideration of reasonable and scientific methodology and list a number of options such as machine hours, vessel occupancy hours, direct labour hours, production quantity, sales value, etc. Thus, machine hours is one of the most scientific methodologies provided under not only cost accounting text books but also specifically provided under Annexure-III to the Rules. Given significant difference in number of machine hours spent in production of melamine ware and thermo ware, it would be grossly inappropriate to apportion common salaries & wages in the ratio of production. 54 machines produced PUC i.e. melamine ware during POI wherein 233600 machine hours (on standard basis) were spent by the company; while 113880 machine hours were spent on 13 machines for producing thermo wares. Evidently, the products significantly differ in production efforts involved and therefore production ratio is grossly inappropriate methodology.

- i. There are two modifications to the depreciation expenditure reported by the petitioner.
 - i. **Depreciation on common facilities** –Depreciation on common facilities which include items such as factory buildings have not been included in the cost of production determined. Significant investment has been done by petitioner in common assets. This investment is required to be apportioned between the two products. The petitioner had apportioned the same in the ratio of direct net fixed assets of the two plants. Petitioner requests consideration of the same.
 - ii. **Direct depreciation amount reduced** – It is noted that whereas the petitioner had reported direct depreciation amount of Rs. 181.29 lacs, the NIP is not based on this amount. We have been informed that whereas petitioner has deployed 54 machines, since petitioner has used only 40 machines, depreciation amount has been restricted only to 40 machines. Petitioner submits that such adjustment is grossly inappropriate. It is not a case that 40 machines remained completely idle during the period. This is a clear presumption without any basis. In fact, the petitioner has been using all the machines. Merely because petitioner has not used some machine or the other at some point in time or the other, the same does not justify exclusion of depreciation amount. In fact, Generally Accepted Accounting Principles require the company to charge depreciation on the assets used and the same does not imply that the assets should have been used 24 hours basis for 365 days in a year. In fact, in a production process like the present, it would not be possible to have continuity of production in a manner as a company having petrochemical plant or a furnace operating round the clock. Above all, it is not an inefficient utilization of production facilities.
- j. The amount reported by the petitioner on account of repairs & maintenance has also been modified, possibly for the reasons similar to the reasons adopted for modifying expenditure on account of depreciation in Melamine plant. Petitioner requests the Authority to kindly consider the expenditure reported by the petitioner for the same reasons as given for depreciation.
- k. The net fixed assets reported by the Petitioner have been reduced for the reasons similar to the reasons adopted for depreciation. The petitioner therefore requests the Authority to kindly accept the figures reported by the petitioner for the reasons similar to mentioned above in respect of depreciation.
- l. The Authority has disregarded expenditure incurred by the petitioner on account of advertisement relating to the product. It is not understood why the expenditure on account of depreciation should be excluded. In fact, the DA has allowed expenditure on account of advertisements in the past. Please refer to illustrative cases listed below where the expenditure on account of advertisements was allowed. Annexure-III also does not provide that expenditure on account of advertisement should be excluded. Such being the case, petitioner submits that expenditure on account of advertisement should be allowed for determination of NIP.
 - a. MDF sunset review case
 - b. Diclofanec sodium
 - c. Measuring tapes
 - d. Vitamin-E
 - e. Carbon black
 - f. CFL
- m. It would thus be seen that the NIP has been reduced significantly for the reasons mentioned above. The petitioner therefore requests the DA to kindly consider the submissions above and determine NIP for the final findings.

- n. In view of the above submissions, domestic industry submits that
 - a. There is significant dumping of the product under consideration from the subject countries;
 - b. The domestic industry is suffering price suppression;
 - c. Price suppression led to a situation where in the domestic industry suffered significant deterioration in its performance in respect of profits, return on investment and cash flow. Even the sales volumes declined.
 - d. Product under consideration is exported to India below its normal value resulting in continued dumping from the subject countries.
 - e. Both dumping margin and injury margin in the Period of Investigation are significant and positive for the subject countries.
- o. Therefore, petitioner requests the DA to kindly recommend fixed quantum of duty in the present case.

Examination by the Authority

- 117. The various issues raised by the exporter and contested by DI have been addressed in above paragraphs but are being again addressed herein for the sake of clarity:
 - a. The exporter has contended that the subject goods are produced in various grades and different prices. The goods supplied by them are of superior quality as compared to the goods produced and supplied by the domestic industry and that they follow a different distribution and marketing formula. The exporter has however not quantified how the domestic and imported products are different and what is the impact of the alleged difference. The authority notes that a difference in quality cannot be recognized, unless the differences are quantified and their impact demonstrated. After considering the information on record, the Authority holds that there is no material difference in product under consideration exported from subject countries and the product produced by the Indian industry. Product under consideration produced by the domestic industry is comparable to the imported subject product in terms of physical & chemical characteristics, production technology & manufacturing process, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. Thus, the Authority holds that product under consideration produced by the applicant domestic industry is like article to the subject product under consideration imported from subject countries in accordance with the AD Rules.
 - b. Petitioner is a major producer of the subject goods in India. It is responsible for manufacturing 52% of the Indian Production. There is only one more company in the organized sector, M/s Servewell India, which produces the subject goods. Further, there are other small producers of the subject goods in India. M/s Servewell India has not responded to the present investigations and has neither supported nor opposed the present investigations and proposed imposition of ADD. The Authority concludes that the petitioner constitutes domestic industry within the meaning of the Rule 2 (b). The petitioner satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 (3) of the Anti-dumping Rules.
 - c. The exporter was given several opportunities and sufficient time to submit completed information. The information was furnished but it has been given for January – December 2013. The Authority had asked for information for April 2013-March2014 which was the notified Period of Investigation. In view of incomplete information it is not possible to analyze the information and the exporter could not be given an individual dumping margin as per the consistent practice of the Authority.
 - d. The DI is asking the Authority to analyse the available data as per the Indian Customs and give M/s Srithai an individual margin even when they have not submitted complete data though they were given extra time as well as opportunity to submit the information. Their related importer had also submitted response subsequent to the hearing to which DI had taken objection. They have quoted a case of 1995 and also mentioned that this was prevalent before the current modifications. It is noted that perusal of the available data in detail indicates that the import data of Thailand cannot be segregated exporter wise and it is not possible to give the breakup of export price for each and every exporter from Thailand. Therefore, the Authority has taken the data of import from Thailand as a whole and decided to determine one dumping and injury margin for all the exporters from Thailand. This is as per the consistent practice of the Authority for several years.
 - e. The issue on determination of Non Injurious Price on account of a) treatment of salary and wages of common staff, b) reduction in the amount of depreciation, repairs & maintenance and return on capital employed and c) treatment of advertisement expenses, etc. was examined by the Authority. All these issues were handled at the time of determination of NIP. On review of NIP workings it was observed that one of the items of salary and wages was missed out while linking the allowed expenditure under

this head. Therefore NIP has been modified to that extent. Accordingly, as normal value has also been constructed on the basis of cost of sales of domestic industry the constructed normal value stands modified to that extent.

J. CONCLUSION

118. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:
- The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
 - The domestic industry has suffered material injury;
 - The material injury has been caused by the dumped imports of the subject goods from subject countries.
 - The injury has been caused cumulatively by the imports from the subject countries.

K. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST AND OTHER ISSUES

119. The Authority recognizes that imposition of antidumping duties might affect the price level of product in India. However, fair competition in Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantage gained by dumping practices, would arrest the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. Consumers could still maintain two or more sources of supply.
120. The Authority notes that the purpose of antidumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

L. RECOMMENDATIONS

121. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of antidumping duty is required to offset dumping and injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.
122. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the amount indicated in Col No.9 of the table below is recommended to be imposed on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries/territory.

Duty Table

Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount (in USD)	Unit of Measurement
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	China PR	China PR	Any	Any	1284.16	MT
2	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Any	China PR	Any	Any	1284.16	MT
3.	39241010	Melamine	Any	China PR	Any	Any	Any	1284.16	MT

	39241090 39249090 39264049 39269099	Tableware and Kitchenware products	specification						
4	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Thailand	Thailand	Any	Any	582.85	MT
5	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Any	Thailand	Any	Any	582.85	MT
6	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Thailand	Any	Any	Any	582.85	MT
7	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Vietnam	Vietnam	Any	Any	1732.11	MT
8	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Any	Vietnam	Any	Any	1732.11	MT
9	39241010 39241090 39249090 39264049 39269099	Melamine Tableware and Kitchenware products	Any specification	Vietnam	Any	Any	Any	1732.11	MT

123. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
124. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

A.K.BHALLA, Designated Authority